सुनिल मोहन

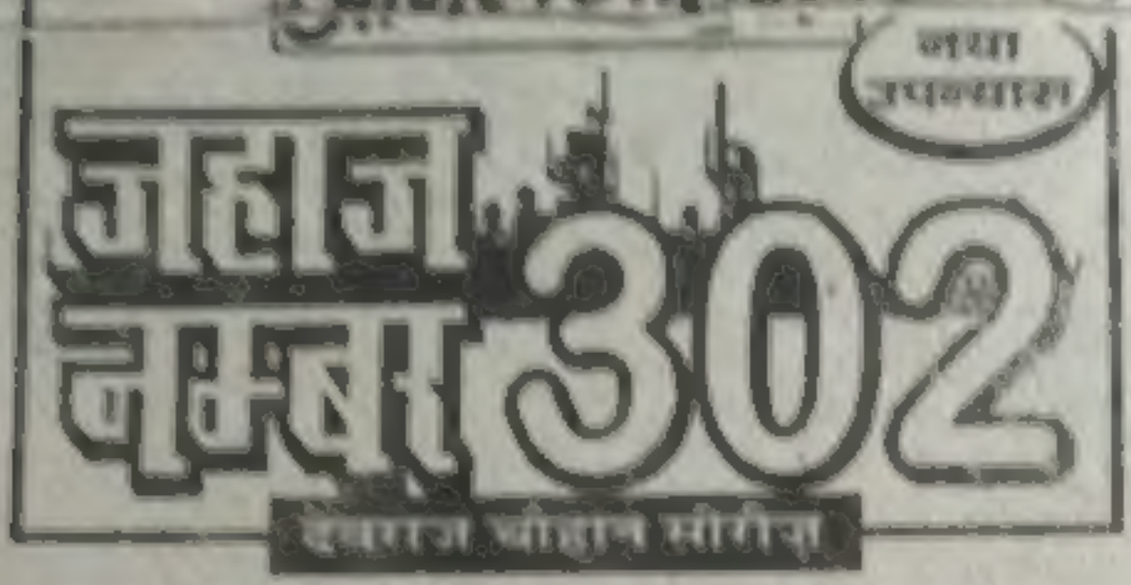

फोन की बैल बजते ही देवराज चौहान ने रिसीवर उठाया।

"हैलो।"

"देवराज चौहान!" दूसरी तरफ महादेव था—"पहचाना मुझे?"

"महादेव?"

"हां। सुनो, मुझे तुमसे जरूरी काम है। बोलो कहां मिलते हो?" महादेव की आवाज कानों में पड़ी।

"तुम्हारी तबीयत कैसी है। तुम इलाज करवा—।"

"वो बीमारी ठीक नहीं होने वाली। डॉक्टर खामखाह तसल्ली देते रहते हैं। मैं जानता हूं, कभी भी लुढ़क सकता हूं। वैसे भी बहुत जी लिया। छोड़ो इन बातों को, कहां मिल रहे हो?"

"तुम बोलो?"

"माहिम, रेलवे स्टेशन के बाहर मिलो। जरूरी आना।" महादेव की आवाज में बेचैनी आ गई थी।

देवराज चौहान के चेहरे पर अजीब-से भाव उभरे।

"खास बात है?"

"हां। यूं समझो कि जान का खतरा सिर पर है।"

"मैं पहुंच रहा हूं।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने रिसीवर रखा और जगमोहन को पुकारा—"जगमोहन!"

बंगले के एक कमरे से जगमोहन निकलकर पास आ पहुंचा।

महादेव के फोन के बारे में बताकर देवराज चौहान बोला।

"मैं माहिम जा रहा हूं। वापस से तुम अकेले ही मिल आओ। वक्त मिला तो मैं वहीं पहुंच जाऊंगा।"

"कहो तो, मैं भी साथ चलूं। थापर से बाद में—।"

"थापर कई दिनों से याद आ रहा है। खुद तो वो 'थापर ग्रुप' को जमाने में लगा हुआ है। इसलिये उसे आने का वक्त नहीं मिल रहा। तुम आज उसके पास हो ही आओ।" देवराज चौहान ने कहा। पाठक जानते हैं कि थापर जो मादक पदार्थों का किंग था कभी। अब देवराज चौहान के कहने पर मादक पदार्थों का धंधा छोड़कर, उद्योगपति बनता जा रहा था। शहर के इज्जतदार लोगों में उसकी गिनती होने लगी थी।

"ठीक है।" जगमोहन ने कहा—"मैं थापर से मिलकर आता हूं।"

अगले ही मिनट देवराज चौहान कार पर, माहिम रेलवे स्टेशन की तरफ बढ़ा जा रहा था।

माहिम रेलवे स्टेशन के सामने, सड़क पार मौजूद पार्किंग में, देवराज चौहान ने कार पार्क की और सड़क पार करता हुआ रेलवे स्टेशन के बाहरी गेट के पास आ पहुंचा और सिग्रेट सुलगाते हुए महादेव की तलाश में इधर-उधर निगाहें दौड़ाने लगा।

मिनट भर ही बीता होगा कि देवराज चौहान की निगाहें महादेव पर ठहर गईं। जो इसी तरफ बढ़ा आ रहा था। परन्तु अभी दूर था। देखने पर एकबारगी तो वह पहचानने में नहीं आ रहा था।

सिर के बाल और दाढ़ी के बाल पूरी तरफ सफेद हो चुके थे। कमजोर इस हद तक हो गया था कि बदन पर पड़े कपड़े झूलकर नीचे लटकते महसूस हो रहे थे। गाल पिचक-से गये थे। देखने पर स्पष्ट तौर पर लग रहा था कि पैसे की तरफ से उसका हाथ तंग है जबकि देवराज चौहान ने ईलाज कराने के नाम पर उसे लाखों रुपया दिया था। वह समझ गया कि महादेव की बीमारी बढ़ती जा रही है। उसी की वजह से उसका शरीर ढल रहा है।

महादेव पास पहुंचा।

देवराज चौहान ने स्पष्ट महसूस किया कि उसके चेहरे पर घबराहट और आंखों में बेचैनी है।

"तुमने अपनी क्या हालत बना रखी है। डॉक्टर क्या कहते—।"

"ये बात बाद में। पहले वो बात करूंगा, जिसके लिए तुम्हें यहां बुलाया है।" महादेव ने जल्दी से कहा।

"बात करने के लिये तुम बंगले पर भी आ सकते थे।" देवराज चौहान ने उसे गहरी निगाहों से देखा।

"सर। हालात ऐसे हैं कि मेरा खुले में रहना ठीक नहीं। जान का खतरा है कल रात से भागा फिर रहा हूं। अचानक तुम्हारा ध्यान आते ही, लगा जैसे सिर से बोझ उतर गया हो। मैंने एकदम तुम्हें फोन मारा।" कहने के साथ ही महादेव की निगाहें इधर-उधर दौड़ी।

"बात क्या है?"

"बात—।"

उसी पल देवराज चौहान के देखते ही देखते महादेव के चेहरे के भाव बदले। मुंह खुला का खुला रह गया। आंखें पलटकर चौड़ी हो गईं। वो गिरने को हुआ कि देवराज चौहान ने उसे फौरन संभाला।

"महादेव—महादेव—।"

महादेव का पूरा बोझ देवराज चौहान पर पड़ चुका था। दूसरे ही क्षण देवराज चौहान को दायें हाथ में चिपचिपाहट-सी महसूस हुई। उसने देखा। हथेली खून से सन चुकी है। महादेव की कमर में साईलेंसर लगी रिवॉल्वर से गोली मारी गई थी, जो कि पीठ से बाहर निकल गई थी।

देवराज चौहान ने फौरन महादेव को चैक किया।

अभी जान बाकी थी उसमें।

देवराज चौहान के दांत भिंच गये। चेहरा गुस्से से धधक उठा। उसने फौरन सिर घुमाकर रेलवे स्टेशन की तरफ देखा। गोली उसी तरफ से चलाई गई थी। वहां लोग मौजूद थे। कईयों की निगाह, उन पर पड़ चुकी थी और वो हैरानी से ठिठक कर नजारा देख रहे थे।

"किसने मारी गोली?" देवराज चौहान गुस्सेभरे स्वर में चिल्लाया।

जवाब कौन देता।

"तुम फिक्र मत करो महादेव! मैं तुम्हें—।"

"देव-राज—मे-री छो-ड़ो। मैं तो वैसे भी गिनती के दिन जी रहा था। दो दिन पहले क्या और बाद में क्या....।"

"नहीं महादेव, मैं—।"

"वक्त बरबाद मत करो। मेरी सुनो।" महादेव की आवाज मध्यम पड़ती जा रही थी—"मैं—।"

"मुझे इतना बता दो, गोली मारने वाले कौन लोग हैं?" देवराज चौहान ने भिंचे स्वर में कहा।

महादेव की आंखें बंद हो चुकी थीं।

"महादेव—महादेव—।" देवराज चौहान ने उसे जोरों से हिलाया।

"मुझे—मुझे नीचे लिटा—दो।" महादेव के होंठों से फुसफुसाती आवाज निकली।

[illegible] देवराज चौहान ने उसे नीचे लिटाया।

महादेव की बंद पलकों में कम्पन हुआ। उसने आंखें खोलीं। देवराज चौहान को देखा।

"कुछ तो बोलो—महादेव—।" देवराज चौहान से सहा नहीं जा रहा था, इस तरह महादेव को मरते देखना।

महादेव के होंठ हिले।

देवराज चौहान ने अपने होंठ और भी सख्ती के साथ भींच लिये।

"ती—तीन सौ दो।" महादेव के होंठ जरा से खुले। मध्यम-सी आवाज निकली और इसके साथ ही उसकी सांसें रुक गईं।

"महादेव, क्या तीन सौ दो? मैं समझा नहीं तुम····।" देवराज चौहान के भिंचे होंठों से निकला।

लेकिन अगले ही पल समझ गया कि महादेव अब नहीं रहा। वो मर चुका है। देवराज चौहान के चेहरे पर पत्थर की कठोरता जैसे भाव आ गये। उसने आसपास निगाहें दौड़ाईं। भीड़ बढ़ती जा रही थी। महादेव के शरीर को इसी तरह छोड़कर जाना उसके लिये मजबूरी बन गई थी। पुलिस अब किसी भी वक्त आ सकती थी और उसके देवराज चौहान होने की पहचान होते ही, सिर पर मुसीबतों का पहाड़ टूट सकता था।

महादेव की खुली आंखों को देवराज चौहान ने बंद किया और उठ खड़ा हुआ। भीड़ की तरफ निगाह मारी। वह जानता था कि महादेव की जान लेने वाला, इसी भीड़ में मौजूद है, परन्तु उसे पहचाना नहीं जा सकता। चेहरे पर कठोरता समेटे देवराज चौहान तेज कदमों से सड़क की तरफ बढ़ गया। जिसके पार पार्किंग में उसकी कार खड़ी थी। किसी ने भी उसे रोकने की चेष्टा नहीं की।

देवराज चौहान के मस्तिष्क में इस वक्त सिर्फ दो ही बातें थीं। उसकी बांहों में महादेव की मौत और तीन सौ दो?

क्या कहना चाहता था महादेव?

□□

□□

जगमोहन ने जब बंगले में प्रवेश किया तो देवराज चौहान को [illegible]फे पर बैठा पाया। दोनों टांगें सामने मौजूद सैंटर टेबल पर रखी [illegible] थीं। उंगलियों में फंसी सिग्रेट से वह कश ले रहा था।

जगमोहन ने एक ही नजर में पहचाना कि देवराज चौहान गुस्से से जल रहा है। जगमोहन मन ही मन सतर्क हुआ और करीब पहुंचा।

"क्या बात है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"हां।" जगमोहन ने गहरी निगाहों से उसे देखा—"क्या बात है? गुस्से में हो।"

जगमोहन को देखते, देवराज चौहान ने कश लिया।

"महादेव को गोली मारकर उसकी जान ले ली गई।"

"क्या कर रहे हो?" जगमोहन चिंहुक उठा।

"महादेव मेरे से बात कर रहा था, जब उसे गोली मारी गई। मेरी बांहों में उसने दम तोड़ा। वहां भीड़ थी, गोली मारने वालों को, मैं नहीं देख पाया।" देवराज चौहान के दांत भिंच गये—"वो मर गया। मैं उसके लिये कुछ नहीं कर पाया, क्योंकि वहां पुलिस कभी भी आ सकती थी। उसके शरीर को छोड़कर आना पड़ा।"

जगमोहन की हालत अजीब-सी हो रही थी। महादेव का मरना उसे हजम नहीं हो रहा था।

"यह सब हुआ कैसे?"

"महादेव जब मुझसे मिला तो, वो पहले ही कुछ डरा हुआ था। बोला कल रात से मैं उन लोगों से बचता फिर रहा हूं। मेरा ध्यान ही उसे सुबह आया कि—।"

"किन लोगों से बचता फिर रहा था?" जगमोहन के चेहरे पर कठोरता उभरी।

"वो बता नहीं पाया। उसे कुछ भी कहने का मौका नहीं मिला और मारा गया।"

"ओह—!"

"मरने से ठीक पहले उसने सिर्फ 'तीन सौ दो' कहा। शायद तब वो असल मामला बताने जा रहा था परन्तु सांसों ने साथ नहीं दिया। वो कुछ भी बता नहीं पाया।"

देवराज चौहान और जगमोहन एक-दूसरे को देखने लगे।

"तीन सौ दो का क्या मतलब?" जगमोहन के माथे पर बल पड़े हुए थे।

"कह नहीं सकता। लेकिन यह किसी चीज का नम्बर है। जिसके बारे में महादेव कुछ जान गया था और उसे मारने वाले लोग नहीं चाहते थे कि कोई 'तीन सौ दो' के बारे में जाने। यही वजह रही कि वो महादेव के पीछे पड़ गये और अंत में वो उसकी

जान लेकर ही रहे। तब मेरे बस में कुछ नहीं था। मैं उसे नहीं बचा सका।" कहते-कहते देवराज चौहान के चेहरे पर खतरनाक भाव [illegible]

"यानि कि महादेव जिस मामले के बारे में बताना चाहता था, वे उसकी मौत के साथ ही खत्म हो गया।" जगमोहन बोला।

"महादेव की जान अवश्य चली गई।" देवराज चौहान की आवाज में सुलगन थी—"लेकिन मामला खत्म नहीं हुआ। वो तो अब शुरू हुआ है।"

जगमोहन की निगाह, देवराज चौहान के कठोर चेहरे पर जा टिकी।

"मैं समझा नहीं—।"

"तीन सौ दो, क्या है? किस चीज का नम्बर है? मुझे इस बात से कोई वास्ता नहीं, लेकिन जो लोग तीन सौ दो के बारे में जानते हैं, इससे वास्ता रखते हैं, वो ही महादेव के हत्यारे हैं और महादेव की हत्या मेरी बांहों में हुई है। ऐसे में मेरा फर्ज बनता है कि मैं महादेव के हत्यारे को सजा दूं। और महादेव के हत्यारे तक तभी पहुंच सकता हूं, जब तीन सौ दो नम्बर की हकीकत के बारे में जानूं, क्योंकि हत्यारे का सम्बन्ध तीन सौ दो नम्बर से है।"

जगमोहन ने सहमति से सिर हिलाया। चेहरे पर गम्भीरता थी।

"तीन सौ दो नम्बर के बारे में कैसे मालूम किया जाये?"

"शुरूआत महादेव से ही होगी।" देवराज चौहान ने दांत भींचकर कहा—"मेरा अभी खुले में जाना ठीक नहीं, क्योंकि बहुत-से लोगों ने महादेव को मेरी बांहों में दम तोड़ते देखा है और उसके मरने के बाद मैं वहां से चला आया। मुझे देखने वालों ने पुलिस को मेरा हुलिया बताया होगा। ताजा-ताजा हुलिया सुने पुलिस वाले मुझे देखकर पहचान सकते हैं। और मैं बेवजह वाले पुलिस के झंझट से दूर रहना चाहता हूं।"

जगमोहन, देवराज चौहान को देखता रहा।

"महादेव ने कहा था कि वो बीती रात से जान बचाता फिर रहा है?"

"हां।"

"तो मालूम करो महादेव किन-किन लोगों में बैठता था। किन से मिलता था और इन दिनों क्या कर रहा था। खासतौर से यह मालूम करो कि कल रात वो कहां था।" देवराज चौहान ने भिंचे स्वर में कहा।

जगमोहन ने समझाने वाले ढंग से सिर हिलाया।

"कहां से शुरूआत करोगे?"

"महादेव के घर के आस-पास से ही। इस बारे में पहली खबर तो वहीं से मिलेगी।" जगमोहन ने कहा।

"अगर महादेव के घर पुलिस पहुंच चुकी हो तो, अभी पूछताछ मत करना।" देवराज चौहान बोला।

जगमोहन, बंगले से बाहर निकल गया।

देवराज चौहान उठा और बेचैनी से वहां टहलने लगा। महादेव की मौत को वह बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था। खास वजह यह थी कि उसके सामने महादेव को गोली मारी गई। उसकी बांहों में जो मरा।

तभी फोन की बैल बजी।

देवराज चौहान ने रिसीवर उठाया।

दूसरी तरफ सोहनलाल था।

"महादेव के बारे में सुना।" सोहनलाल की आवाज कानों में पड़ी—"किसी ने माहिम रेलवे स्टेशन के बाहर उसे गोली मार दी। वो मर गया है। ये एक-दो घण्टे पहले की बात है।"

देवराज चौहान के चेहरे पर कठोरता आ गई।

"उसके मरने के बारे में तुम्हें किसने बताया?"

"अभी दस मिनट पहले, किसी ने बताया था।" सोहनलाल की आवाज आई—"कल वो मुझे मिला था।"

"कौन—महादेव?"

"हां।"

देवराज चौहान मन ही मन सतर्क हुआ।

"कहां?"

"चैम्बूर में—वहां—।"

"उसके साथ क्या बात हुई?" देवराज चौहान ने उसकी बात काटकर पूछा।

"बात हो ही नहीं पाई। सड़क पर ही आमना-सामना हुआ। उसने मुझे कोई भाव नहीं दिया। मेरी तरफ देखकर सिर्फ मुस्कराया था। मैं समझ गया कि वो किसी फेर में है। क्योंकि तब उसके साथ कोई खूबसूरत युवती थी। मैंने भी उसे रोकने की कोशिश नहीं की। वो अपने रास्ते लग गया और मैं अपने रास्ते—।"

देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ चुकी थीं।

"ये कितने बजे की बात है?"

"दोपहर का वक्त होगा। एक-दो-तीन के बीच का। तुम क्यों पूछ रहे हो?"

"इस वक्त क्या कर रहे हो?" देवराज चौहान ने कहा।

"खास कुछ नहीं। मैं—।"

"मेरे पास आओ। कुछ बात करनी है।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने रिसीवर रख दिया।

□□

□□

"समझे।" देवराज चौहान की कठोर निगाह, सोहनलाल के चेहरे पर थी—"महादेव ने मेरी ही बांहों में दम तोड़ा था।"

सोहनलाल सब-कुछ जान चुका था। चेहरे पर गम्भीरता लिए, उसने गोली वाली सिग्रेट निकाली और सुलगाकर कश लिया। निगाहें देवराज चौहान पर जा टिकीं।

"महादेव के मरने का वास्तव में अफसोस हुआ, क्योंकि वो अच्छा बंदा था। कई बार हमारे साथ काम कर चुका था।"

"तुमने उस युवती को अच्छी तरह देखा था, जिसके साथ कल महादेव था?" देवराज चौहान ने पूछा।

"हां। बहुत अच्छी तरह देखा था। क्योंकि उसका और महादेव का कोई मेल ही नहीं था। वो खूबसूरत थी। जबकि महादेव उसके चलता, बेहद गरीब इन्सान लग रहा था। वो लड़की पैसे वाली ही थी। मेरे ख्याल से महादेव नोटों के फेर में ही उसके साथ होगा।" सोहनलाल बोला।

"तुम्हारा मतलब कि युवती का कोई काम करके, महादेव उससे नोट वसूलना चाहता होगा।"

"हां।"

"मैं नहीं मानता।"

"क्यों?"

"महादेव को मुद्दत बाद आज ही मैंने देखा है। वो बहुत कमजोर हो चुका है। इस काबिल नजर नहीं आया कि वो कोई काम कर सके या फिर कोई उसे काम करने को कहे। काम कराने वाले को उससे बढ़िया सेहत वाले और फुर्तीले लोग मिल सकते हैं तो वह युवती, मेरे ख्याल में महादेव से कोई काम नहीं करायेगी।"

"मैं समझा नहीं कि तुम कहना क्या चाहते हो?"

"यही कि किसी खास वजह के तहत महादेव उस युवती के साथ था।" देवराज चौहान ने शब्दों पर जोर देकर कहा।

सोहनलाल होंठ सिकोड़े, कई पलों तक सोचभरी निगाहों से देवराज चौहान को देखता रहा।

"मेरे ख्याल में उसी वजह के कारण ही महादेव की जान गई।"

"और वो वजह क्या थी?" सोहनलाल ने पूछा।

"अभी इस बारे में कुछ नहीं पता कि महादेव क्या कर रहा था।" देवराज चौहान के होंठ भिंच गये—"लेकिन यह तो पक्के तौर पर तय है कि महादेव किसी बड़े मामले में हाथ डे बैठा था और उस मामले का ताल्लुक किसी ऐसी चीज से था जो तीन सौ, दो नम्बर से वास्ता रखती है। क्योंकि मरते वक्त, उसके मुंह से आखिरी शब्द यही निकले थे—तीन सौ दो।"

"यह तीन सौ दो क्या हो सकता है?"

"मैंने तुम्हें दो बातों के लिये बुलाया है।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"क्या?"

"एक तो यह कि कल महादेव के साथ जो युवती कौन थी। अगर उसके बारे में मालूम हो जाये तो काफी हद तक मामला खुलकर सामने आ सकता है।" देवराज चौहान ने सोचभरे स्वर में कहा।

"यह काम इतना आसान नहीं।" सोहनलाल ने होंठ सिकोड़कर कहा।

"क्यों?"

"यह ठीक है कि मैं उस युवती को देखते ही पहचान लूंगा। लेकिन वो मिलेगी कहां? मुम्बई जैसे शहर में अपनी बीवी खो जाये तो उसे नहीं ढूंढा जा सकता। वो तो मेरे लिये बिल्कुल अंजान युवती थी। वो नहीं मिलने वाली।"

"उस युवती तक एक ही रास्ते से, पहुंच सकते हो।"

"कैसा रास्ता?"

"महादेव के बारे में जानना शुरू करो कि इन दिनों वो किस काम में था। ऐसे में हो सकता है कि वो युवती कहीं नजर आ जाये। साथ ही साथ ये भी जानने की कोशिश करो कि तीन सौ दो का क्या मतलब है। यह कौन-सा नम्बर है। तीन सौ दो कहकर, महादेव क्या बताना चाहता था।"

सोहनलाल ने सोचभरे अन्दाज में सिर हिलाया।

"कोशिश करता हूं।"

"मुझे महादेव के हत्यारे के अलावा और किसी चीज में दिलचस्पी नहीं है और तीन सौ दो के बारे में जाने बिना, महादेव के हत्यारे तक नहीं पहुंचा जा सकता।" देवराज चौहान ने अपने शब्दों पर जोर देकर कहा और उठकर वहां से सामने नजर आ रहे कमरे की तरफ बढ़ गया।

जब वापस आया तो हाथ में अखबार का छोटा-सा पैकिट था।

"ये पचास हजार रुपये हैं, भागदौड़ में खर्चे के लिए। खत्म हो जायें तो और ले लेना।"

"इसकी क्या जरूरत थी।" कहते हुए सोहनलाल ने पैकिट थामा और विदा लेकर बाहर निकल गया।

देवराज चौहान सोचभरे अंदाज में कई पलों तक खड़ा रहा। फिर मन ही मन तय किया कि पहचाने जाने की सोचकर बैठे रहना ठीक नहीं। महादेव के बारे में उसे भी छानबीन करनी चाहिये। इस सोच के साथ ही बाहर निकला और पोर्च में खड़ी कार, बाहर निकालता चला गया।

□□

□□

दस मिनट बाद देवराज चौहान की कार भीड़ वाली सड़क से गुजर रही थी कि तभी देवराज चौहान को महसूस हुआ कि उसके कान के पास से अंगारा, गर्म हवा देता निकला है। दूसरे ही क्षण वो अंगारा विण्डशील्ड में छेद बनाता हुआ बाहर कहीं खो गया।

गोली की आवाज नहीं गूंजी थी।

वो साईलैंसर लगी रिवॉल्वर से फायर था।

उसका निशाना लिया गया था। स्टेयरिंग विण्डो से गोली ने भीतर प्रवेश किया। खिड़की का शीशा पहले से ही नीचे था। देवराज चौहान चौंका। सतर्क हुआ। गर्दन फौरन घूमी और तब तक रिवॉल्वर निकलकर हाथ में आ चुकी थी। एक हाथ स्टेयरिंग पर था।

दायीं तरफ वो काली कार थी।

उसमें पांच आदमी ठूंसे हुए ढंग से बैठे हुए थे। देवराज चौहान को अपनी तरफ देखते पाकर, उनमें से दो ने उसे रिवॉल्वरों की झलक दिखाई।

देवराज चौहान समझ गया कि रिवॉल्वरें उन दो के ही नहीं, अन्यों के पास भी होनी चाहियें। क्योंकि उनके चेहरों से ये जाहिर हो रहा था कि मरना-मारना उनका काम है। लेकिन ये लोग हैं कौन? उसकी जान क्यों लेना चाहते हैं? गोली चलाने वाले का निशाना बढ़िया था।

मामूली सा ही फर्क रह गया था उसके सिर उड़ने में। देवराज चौहान ने उन चेहरों को पहले कभी नहीं देखा था।

देवराज चौहान ने फौरन हिसाब लगाया कि अपनी रिवॉल्वर का इस्तेमाल इन लोगों पर करना है तो खास फायदा नहीं होने वाला। दो तीन को खत्म भी कर देता तो चौथा पांचवां तब तक उसका निशाना ले चुका होगा। ड्राइवर के अलावा चारों की खुली खिड़की उस पर थी।

अगले ही पल देवराज चौहान ने महसूस किया कि अब वो उसका निशाना नहीं ले रहे।

देवराज चौहान ने अपना ध्यान ड्राईविंग पर लगा दिया। रिवॉल्वर गोदी में रख ली। इसके साथ ही चेहरे पर कठोरता लिए, उनकी हरकतों पर भी निगाह रख रहा था। दो कार उसकी कार के बराबर आने की कोशिश कर रही थी। जाहिर था कि कार और वाले थे। दूसरी गाली उस पर चलानी होती तो अब तक चला चुके होते।

देवराज चौहान ने कार की स्पीड कम की।

उस कार को बगल से पास आने दिया।

देवराज चौहान ने तसल्ली से काली कार में बैठे उन चारों चेहरों को देखा।

"अपनी जान की सलामती चाहते हो तो आगे जाकर खाली जगह मिलते ही, कार रोको। तुमसे बात करनी है। अगर हमारी बात नहीं मानी तो इस बार गोली तुम्हारे सिर पर लगेगी।" उस कार में से एक ने चिल्लाकर कहा।

देवराज चौहान ने शब्दों को सुना और खामोशी से सिर हिला दिया।

ट्रैफिक में कार आगे बढ़ती रही। काली कार अब रोक उसके पीछे हो गई थी। बैक मिरर में देवराज चौहान काली कार पर निगाह रखे था। नजरें सामने भी रहीं। वह इन लोगों के बारे में जानना चाहता था। परन्तु उससे भी ज्यादा जरूरी था इन लोगों से पीछा छुड़ाना। इस वक्त इनका मुकाबला करना ठीक नहीं था।

तभी आगे लाल बत्ती आ गई।

देवराज चौहान ने कार धीमी की। आसपास के अन्य वाहन भी धीमे होने लगे। इसी दौरान उसके और काली कार के बीच एक अन्य कार आ गई थी। इससे बढ़िया मौका फिर नहीं मिलना था। देवराज चौहान की कार सबसे आगे थी। लाल बत्ती पर। सामने अन्य साइड का ट्रैफिक गुजर रहा था। किसी बात की परवाह न

[illegible] चौहान ने [illegible] पैंचकेश का आर बदा [illegible] सामने से [illegible] ठिकाने से [illegible] निकाले से गया। कई [illegible] को [illegible] बगल से [illegible] आने पड़े।

देवराज चौहान [illegible] थाने में [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

को बचन पाए।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ने दृढ़तापूर्ण स्वर में कहा—"मैंने जो करना है वो [illegible] पुलिस रोक नहीं सकती। बहुत जल्द मैं तुम तक पहुंचने वाला हूं। अपनी सुरक्षा का बढ़िया से बढ़िया इन्तजाम कर लो, क्योंकि [illegible] एक तुम्हें ये मुगालता न रहे कि अपने बचाव में कुछ कर [illegible]

"मुगालता कि तुम्हें मौत का खौफ नहीं।" फोन में पहले वाला आवाज में खौफ भाव आ गये थे।

"उसी खौफ की तलवार तुम्हें दिखा रहा हूं। जिसे ठीक से तुम समझ नहीं पा रहे। रही बात तीन सौ दो की तो यह अभी तुम्हें पता चलेगा कि क्या होता है?"

"मौत का इन्तजार करो अब—।" इसके साथ ही दूसरी तरफ से लाईन काट दी गई।

देवराज चौहान ने रिसीवर रखा। चेहरा कठोर हुआ पड़ा था। देवराज चौहान जानता था कि ये जो भी है, अब हाथ धोकर उसके पीछे पड़ जायेगा। क्योंकि उसके मुंह से तीन सौ दो सुनकर, वो बुरी तरह चौंका गया है। और वो नहीं चाहता कि तीन सौ दो के बारे में कोई जाने। क्या है ये तीन सौ दो?

देवराज चौहान को लगने लगा जैसे इस तीन सौ दो के बारे में जानना बहुत जरूरी हो गया है। बहरहाल अब सावधानी की जरूरत है। उसे खत्म करने की भरसक चेष्टा की जायेगी। और उसे बचना होगा।

□□

□□

जगमोहन जब महादेव के एक कमरे वाले घर पर पहुंचा तो दरवाजा बंद पाया। बाहर ताला लगा हुआ था। स्पष्ट था कि अभी पुलिस महादेव की लाश की शिनाख्त नहीं कर पाई, वरना पूछताछ के लिये पुलिस अब तक यहां पहुंची होती। ताले पर अपना ताला भी ठोक गई होती।

जगमोहन ने आसपास देखा। गली में दो दरवाजों को छोड़कर तीसरा दरवाजा खुला नजर आया तो जगमोहन वहां जा पहुंचा। खुले दरवाजे को थपथपाया तो बीस बरस का लड़का सामने आया।

"किसम मिलना है?" लड़के के बोलने का ढंग ही शायद अक्खड़ था।

"मैं उस आदमी से मिलने आया था।" जगमोहन ने हाथ से इशारा किया "महादेव नाम है उसका। वहां ताला लगा हुआ है। तुम बता सकते हो वह कहां मिलेगा या कब गया था?"

[illegible]

"बुढ़ापे में मजे ले रहा है।"

"क्या मतलब?"

"दो-तीन चार दिन से मंदा खूबसूरत लेडकी को लाया हुआ है। दोनों कमरे में पड़े हैं, दरवाजा भीतर से बंद कर के, जाने क्या है नहीं मालूम ने कैसे साथ क्या अत्याचार कर रहा होगा।

"तुम इतने भावुक क्यों हो रहे हो?" जगमोहन ने गहरी दृष्टि से देखा।

"कल दोपहर को मेरे साथ झगड़ा हो गया था मंदा," उसने उसी ढंग से कहा।

"क्यों?"

"छोकरी के साथ घर में निकल रहा था तो दादा सा मजाक कर लिया छोकरी से। बस, वो साला महादेव उबल पड़ा, उसे लगा जैसे जवान हुआ हो। लोगों ने बीच बिचाव करना बहुत मुश्किल हो गया।"

जगमोहन ने समझने वाले ढंग से सिर हिलाया।

"तीन चार दिन से महादेव उस लड़की के साथ था?"

"हां।" लड़का व्यंग्य से बोला—"सुना होगी है मल मिलाए की। वो सूखा सा बूढ़ा और वो दम को पछाड़ने वाली घरनी। मर जैसे के साथ होनी ना, देखने में लड़कीफ नहीं होती।"

"बात तो तुम्हारी सही है।" जगमोहन ने फौरन कहा "उस युवती का हुलिया बताना।"

"हुलिया क्या होता है वो तो बला की खूबसूरत थी।" लड़का अजीब से स्वर में कह उठा—"दूध में लाल रंग की थी। न देखा तो सपनों में आकर, छाती पर [illegible] और—।"

"लम्बी थी?" जगमोहन ने उसे ख्यालों की दुनिया से बाहर निकाला।

"ठीक-ठीक थी। खूबसूरत इतनी कि सामने वाले की हाय हाय करा देती थी। मरी ना कितनी बार हो चुकी है।"

"क्या पहनती थी?"

"कमीज सलवार। लम्बे सिल्की बाल, कंधों तक आकर, लहराते रहते थे। मुखड़ा बदन। जब मुस्कराती तो गालों में गड्ढे पड़ जाते। कानों में टॉप्स डाल रखती थी। गले में सोने की चेन। ऊंची एड़ी के सैंडिल पहनती थी। लेकिन बहुत साद ढंग से चलती थी। उसे अपनी खूबसूरती पर जरा भी घमण्ड नहीं था।"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

[illegible] [illegible] [illegible] [

साथ वो चटकी कौन थी?

□□

□□

[illegible]

[illegible]

[illegible]

आ गई थी। [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] दुकान को [illegible]

[illegible] रंग लगा ही लेता है।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"क्यों?"

"दो दिन से नहीं [illegible] को [illegible] खूबसूरत सी छोकरी उसके साथ थी। मैं [illegible] देखकर हक्का-बक्का रह गया। [illegible] पूरी बोतल पीकर उल्टे पाँव [illegible]। पूरा हफ्ता उसे हो गए [illegible] दिन साले की गदन पकड़नी पड़ेगी। इश्क का [illegible] होता है।" लाला ने मुंह बिचकाया।

सोहनलाल ने लाला को घूरकर देखा।

"उसके साथ छोकरी थी। वो भी खूबसूरत-।"

"हां।"

"दीमाग तो नहीं खराब हो गया तेरा। महादेव उसके लायक है। उसकी हालत..।"

"वो मैं नहीं जानता कि छोकरी का उसे करना होगा। लेकिन उसके साथ छोकरी थी।" लाला ने उसकी बात काटी।

"हुलिया बता।"

"किसका?"

"छोकरी का बतायेगा। महादेव का तो नहीं पूछ रहा।" सोहनलाल की निगाह लाला पर पड़ी।

लाला ने छोकरी का हुलिया बताया।

सोहनलाल को वाकई में हैरानी हुई कि ऐसी खूबसूरत [illegible] साथ। जबकि वो महादेव की आदत को अच्छी तरह जानता था औरतों में उसकी दिलचस्पी न के बराबर थी।

"आजकल महादेव के रंग-ढंग ठीक नहीं लग रहे।" लाला ने कहा

"क्या - और क्या किया है उसने ?"

"पूछ रहा है कि उसकी आदत बिगड़ गई है।" लाला पुनः बोला -।

"आगे तो पढ़ -।"

"पाप छः दिन पहले अलसुबह स्नान का आदमी आया था। तब महादेव पक्का देशी दारू पी ।"

"अलसुबह स्नान - जो साधु नशे का व देखने वाला" सोहनलाल ने टोका।

"जानता है।"

"हां। पहले उसी से सिफारिश के लिये गोपी से था। लेकिन वो हमेशा भाव तेज लगाता था। मैंने उससे माल लेना छोड़ दिया। उसका पांच हजार रुपया मैंने देना है। और फिर क्या हुआ ?"

"उसका आदमी आया। महादेव से मिला, दो मिनट तक दोनों में खुसर-फुसर करते रही फिर महादेव दारू की बोतल बगल में दबाकर उसके साथ चला गया। लगता है महादेव ने नशा करना शुरू कर दिया है जो -।"

"नहीं। महादेव शराब से अलगाव और कुछ नहीं लेता था।" सोहनलाल ने विश्वासभरे स्वर में कहा।

"यही तो मैं कहता था। इस से अलगाव।" लाला ने सीधे सीधे सोहनलाल को देखा।

"यही रहा तो अब।" सोहनलाल ने गहरी सांस ली।

"पर क्यों ?"

"पांच दिन पहले। तो मैं पांच दिन से रुके किसी से।" लाला के चेहरे पर अविश्वास के भाव थे।

"मुझे तो विश्वास नहीं आ रहा है। महादेव को किसी ने मार दिया। बहुत अच्छा इन्सान था।" लाला ने फिर विश्वास दृढ़ करना - मैं तो पहले ही कह रहा था महादेव की शादी बिलकुल गलत है। अलसुबह स्नान सोहनलाल जी बच्चे को उसके पास नहीं भेजना और भी कई उसके पुराने काम करता है। वह दर्द को उसने बहुत अच्छा नहीं रहेगा चाहिये था।"

लाला ने अपनी बात कहकर सिगरेट का कश लिया।

"कोई अनुमान लगा सकते हैं महादेव ?"

"नहीं"

"आप जानते हैं कि महादेव ने अपने पिछले कुछ वर्षों में कितने लोगों से कर्ज ले रखा है ?"

"पूछा।"

"पूछा तो कुछ नहीं होगा। वैसे तो तेरा दुश्मन था वह।"

"दुश्मन नहीं, जानकार—।"

"एक ही बात है। मरने के बाद, उसकी आत्मा को शान्ति पहुंचाना चाहता है तो कुछ करू।" लाला ने कहा।

"कह—।"

"उसका उधार चुका दे। तब तो चैन से स्वर्ग में रह सकेगा। बोल, खाता खोलू उसका?"

सोहनलाल ने गर्दन हिलाकर लाला को देखा।

"तेरे को शायद पता नहीं कि स्वर्ग से महादेव की चिट्ठी आई है। वहां उसकी आत्मा को चैन मिल चुका है और स्वर्ग में उसने लिखा है कि लाला को मेरा सलाम कहना।" इतने कहकर ही सोहनलाल वहां से हिला और बाहर ही तरफ बढ़ता चला गया। सांझ में अभी देर थी। महादेव का और उसका कोई मेल नहीं था।

□□

□□

सोहनलाल, अमलम खान के उस ठिकाने पर पहुंचा, जहां से हर तरह का नशा मिलता था। महीने बाद सोहनलाल वहां आया था। अमलम खान से गोली लेनी उसने कब की छोड़ रखी थी।

कई नया ही बंदा उस वक्त वहां आया।

"क्या चाहिये?" सोहनलाल को भीतर आते देखा तो बोला।

"अमलम खान कहां है?"

"क्यों, तेरे को क्या काम पड़ गया उससे? पहले कभी नहीं देखा तेरे को।" उसके माथे पर बल पड़े।

"पहले तुम इसलिये नहीं देखा कि पहले तू यहां नहीं था। समझा क्या।" सोहनलाल ने उसकी बात वापस कर कहा—"अमलम खान का बाल सोहनलाल आया है।"

"सोहनलाल?"

"हां, वो पहलवान जैसा।"

सोहनलाल को पूरा का पूरा पीछे लगे दरवाजे से देखा गया। दूसरे ही पल वह बोला।

"अरे। वो तेरा दोस्त कब से हुआ है। तेरे को तो कहा है—"

"बक मत बे। यहां पर नशा करने वाले ही आते हैं। तू

अपनी ड्यूटी पर लगा रह।" कहने के साथ ही सोहनलाल पीछे के दरवाजे से प्रवेश कर गया।

तीन-चार कमरों को पार करने के बाद वो, बंदिश तेज जोर से कमरे में पहुंचा। वो जगह किसी ऑफिस की तरह लग रही थी वहां बैठा पचास वर्षीय व्यक्ति फाइलें खोले, हाथ में पेन थामे हिसाब लगाने में व्यस्त था। उसके चेहरे से स्पष्ट लग रहा था कि वो बड़ा घिसा हुआ इन्सान था।

उसने एक निगाह सोहनलाल पर डाली फिर अपने काम में व्यस्त होता हुआ बोला।

"आ। बैठ सोहनलाल—।"

"कैसे हो असलम खान?" सोहनलाल बैठते हुए बोला।

"ठीक हूं। तेरे से चार हजार रुपया लेना है।" असलम खान अपने काम में व्यस्त बोला।

"मिल जायेगा। मैं भागा नहीं जा रहा।"

"दो साल पहले भी तूने यही कहा था।"

"वो अब भी कह रहा हूं।"

"कहने कहने एक दिन मर जायेगा लेकिन मेरा चार हजार नहीं देगा। जल्दी देना।"

सोहनलाल ने गोली वाली सिगरेट सुलगाई।

"अब तू मेरे से गोली भी नहीं लेना। श्याम के यहां से मान लेता है ना?"

"वो माल ठीक लगाता है।"

"मैं भी ठीक लगा दूंगा। यहां से ले जाया कर।" कहते हुए वो अभी भी हिसाब लगाने में उलझा था।

सोहनलाल ने कश लिया।

"बोल क्यों आया?"

"तूने शक के बारे में, अपना आदमी भेजकर, मनोज को बुलवाया था।" सोहनलाल की निगाह उस पर जा टिकी।

असलम खान की निगाह फाइल से उठकर सोहनलाल पर लग गई।

"पांच छः दिन हो गये इस बात को। आज तू क्यों पूछने आया?"

"बखेड़े से काम है। वो मिल नहीं रहा।" सोहनलाल बोला - "तुम्हारे बारे में शेरू के दारूखाने में पूछने गया तो लाला ने बताया, तुम्हारा आदमी उसे ले गया था।"

"हां। वो आया था। लेकिन मैंने उसे काम नहीं दिया। होगा कहीं। ढूंढ ले।"

"ढूंढा। नहीं मिला।"

"मिल जायेगा। मैंने उसे कोई काम दिलाया था। वो उसमें व्यस्त होगा। एक-दो दिन में नजर आ जायेगा।"

"क्या काम बताया था?"

असलम खान ने पैन फाइल में रख दिया।

"वो तेरे जानने का नहीं है। महादेव बताये तो उससे पूछ लेना -।" असलम खान बात समाप्त करने वाले ढंग से बोला।

"वो नहीं बतायेगा।" सोहनलाल ने सिर हिलाया।

"तेरी खास पहचान वाला है वो। नहीं बतायेगा तो तुम जानो।" असलम खान ने गहरी निगाहों से सोहनलाल को देखा -"महादेव के लिये तू इतना क्यों तड़प रहा है। मुझे मिला तो उसे, तेरे बारे में बोल दूंगा।"

"तेरे को भी नहीं मिलेगा।" सोहनलाल ने पुनः सिर हिलाया।

असलम खान की आंखें सिकुड़ीं।

"बात क्या है, खुलकर बोल।"

"महादेव को आज किसी ने गोली मार दी है। वो मर गया है।" सोहनलाल ने गम्भीर स्वर में कहा।

असलम खान के चेहरे पर अजीब-से भाव उभरे।

"महादेव को गोली मार दी। वो मर गया।" असलम खान की आवाज में अविश्वास था।

"वो उसी काम की वजह से मरा है, जो तुमने उसे दिलवाया था।" सोहनलाल ने तुक्का मारा।

"लेकिन वो काम मरने मारने वाला नहीं था। उस काम में गोली चलने की कोई गुंजाइश ही नहीं थी।"

"क्या था वो काम?"

"तू क्या करेगा जानकर। महादेव मर गया तो बात खत्म।" असलम खान ने गहरी सांस ली।

"तेरे को मालूम है महादेव ने देवराज चौहान की बातों में दम तोड़ा।" सोहनलाल ने उसे घूरा।

"क्या?"

"जब महादेव को गोली लगी तो देवराज चौहान से वो बात कर रहा था।"

असलम खान सतर्क-सा दिखने लगा।

"या, देवराज चौहान को कुछ बताना चाहता था। बात करना चाहता था। लेकिन उससे पहले ही उसे शूट कर दिया गया। अब देवराज चौहान जानना चाहता है कि महादेव क्या काम कर रहा था। मेरी बात पर यकीन नहीं तो फोन लगाऊं देवराज चौहान को।" सोहनलाल ने फोन की तरफ हाथ बढ़ाया—"मेरे से बात करना तेरे को सस्ता पड़ेगा। देवराज चौहान से तूने सीधी बात की तो शायद तेरे लिए सौदा महंगा हो जाये।"

असलम खान ने सोहनलाल को रिसीवर नहीं उठाने दिया।

"बात मत बढ़ा। यार कुछ भी नहीं है।"

"जो जो बात कुछ भी नहीं है। वो ही मैं जानना चाहता हूं तूने महादेव को क्या काम दिलवाया?"

असलम खान ने होठ सिकोड़कर दो पल के लिये सोचा।

उसे देखते सोहनलाल ने सिगरेट सुलगाई।

"कहां गोली मारी?"

"माहिम रेलवे स्टेशन के सामने।"

"हो सकता है, पुरानी रंजिश का मामला हो। मेरे दिलाये काम की वजह से वो न मरा हो।"

"ये बात बाद में तय हो जायेगी। तू बात कर।"

"मेरे पहचान वाले आदमी ने बताया कि, एक युवती को किसी ऐसे आदमी की जरूरत है, जो मुम्बई बन्दरगाह के बारे में जानकारी रखता हो और गोताखोर भी हो। इसके लिये वह लाख रुपया दे सकती है। एक-दो दिन का काम [illegible] महादेव का ध्यान आया। कभी वो, जवानी के वक्त मुम्बई बन्दरगाह पर ही कोई काम करता था और गोताखोरी भी जानता है। मैं जानता था कि महादेव को पैसे की जरूरत है। वो बीमार है। मैंने उसे और युवती को मिला दिया। बस यही काम किया था मैंने। उसके बाद मुझे उन दोनों की कोई खबर नहीं।"

"सच कह रहा है?"

"इस मामले में देवराज चौहान है तो मैं झूठ नहीं बोल सकता।" असलम खान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"क्या नाम था उस युवती का?"

"अनिता गोस्वामी।"

"उसका पता?"

"पता दो—।" कहते-कहते असलम खान ने दराज खोल दी। दराज खोलते हुए बोला—"जब वो पहली बार मुझसे मिली थी तो उसने अपना कार्ड दिया था। वो शायद यहीं पड़ा है।" कहने के साथ ही दराज से कार्ड निकालकर सोहनलाल की तरफ बढ़ाया—"यह अनिता गोस्वामी का पता है।"

सोहनलाल ने कार्ड लेकर देखा। उस पर अनिता गोस्वामी का नाम और पता लिखा था।

"ये अनिता गोस्वामी तेरे से कितनी बार मिली?"

"दो बार। पहली बार मेरा आदमी इसे लेकर मेरे पास आया था। दूसरी बार तब, जब महादेव को मैंने इसके साथ किया था। दोनों बार वो यहीं आई थी।" असलम खान ने बताया।

"अनिता गोस्वामी ने बताया नहीं कि मुम्बई बन्दरगाह पर उसे क्या काम है?"

"नहीं।"

"पूछा था?"

"हां, लेकिन उसने इस बात का जवाब नहीं दिया और मैंने भी दोबारा पूछने की जरूरत नहीं समझी।"

"अनिता गोस्वामी की कोई तस्वीर है तुम्हारे पास?"

"मेरे पास उसकी तस्वीर का क्या काम—।"

"इस मामले में कोई और बात बताने वाली?"

"नहीं।" असलम खान ने सिर हिलाया—"जो बात थी। मैंने सच-सच बता दी। मुझे तो अभी भी यकीन नहीं आ रहा कि महादेव इस मामले की वजह से मरा होगा। वो कोई पुराना दुश्मन—।"

"तू इस बारे में अपना दिमाग मत लगा।" सोहनलाल अनिता गोस्वामी के कार्ड को देखता हुआ बोला—"भूल जा इस सारी बात को। देवराज चौहान का नाम तो इस मामले में आना ही नहीं चाहिये।"

"मैं किसी से जिक्र नहीं करूंगा।"

"मुझे मालूम है तू समझदार है।" सोहनलाल उठ खड़ा हुआ।

"देवराज चौहान को मेरा सलाम बोलना।"

"फिक्र नहीं कर। मैं तो बोल दिया। समझ देवराज चौहान को बोल दिया।" सोहनलाल जाने लगा।

"वो मेरा चार हजार रुपया—!"

"दे दूंगा। भागा तो नहीं जा रहा।" इतने के साथ ही सोहनलाल बाहर निकल गया।

[illegible]

[illegible]

[illegible] पते पर पहुंचा। वो छोटा सा, [illegible] मकान था। प्रवेश द्वार पर अनिता गोस्वामी की [illegible] नेम प्लेट लगी थी। जगमोहन ने समझ लिया कि मकान के साथ जो युवती थी, वो यहीं रहती है। उसका नाम अनिता गोस्वामी था। जो कि विजिटिंग कार्ड पर लिखा था।

जगमोहन छोटा सा गेट खोलकर भीतर प्रवेश कर गया और बरामदे में पहुंचकर बेल बजाई।

दो-तीन बार बेल बजाने पर भी जब जवाब नहीं मिला तो, जगमोहन को लगा शैम घर में कोई नहीं है। उसने आसपास देखा। [illegible] सड़क पर मकान था। सड़क पर से ट्रैफिक गुजर रहा था। [illegible] कोई भी पड़ोसी नजर नहीं आया। न ही कि[illegible] इस तरफ दिलचस्पी दी।

जगमोहन ने जेब में मौजूद 'डी' निकालीं और मास्टरकी से [illegible] होल में फंसाकर ताला खोलने की चेष्टा करने लगा। पांच मिनट की भरपूर कोशिश के बाद भी जो ताला नहीं खोल पाता। जगमोहन समझ गया कि दरवाजे में फिट पड़ा किस्म का लॉक है जो आसानी से नहीं खुलेगा। खिड़कियां बंद थीं। उन पर ग्रिल लगी हुई थी। घर में भीतर जाने का कोई रास्ता नहीं था।

शायद मकान के पीछे की तरफ से, भीतर प्रवेश करने का रास्ता मिले। यह सोचकर जगमोहन पलटा ही था कि ठिठक गया। मकान के बाहर, उसकी कार के पास, सोहनलाल की कार को उसने रुकते पाया तो चेहरे पर अजीब से भाव आ गये।

सोहनलाल और यहां?

सोहनलाल ने कार से निकलकर, मकान पर नजर मारी तो जगमोहन को खड़ा पाकर उसे भी हैरानी हुई। वो आगे बढ़ा और गेट पार करके जगमोहन के पास आ पहुंचा।

जगमोहन उसे घूर रहा था।

"तुम यहां क्या कर रहे हो?" सोहनलाल ने मुंह खोलकर पूछा।

"यही सवाल मैं तुमसे करने वाला था।" जगमोहन के होंठ हिले।

"मैं तो यहां आता रहता हूं।" सोहनलाल ने [illegible] से कहा।

"क्यों?"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]"

"[illegible]"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सोहनलाल ने सारे कपड़े उतारे और
मैं उसे सहारा देकर बाथरूम में ले जाने का इन्तजाम करता।
एक अन्य व्यक्ति ने कपड़े को अपने हाथ
में ले लिया। पहले मनमोहन को नहलाओ तब
जगमोहन ने कहा और इसी क्रम में काम करने लगे। वह
दरवाजे को बन्द कर गया।
सोहनलाल की जिन्दा इच्छाओं में दौड़ रही थी।
इस हैरतअंगेज घटना ने उसे जगमोहन ने पहले ही
हृदय चीरा प्रहार करके ही शिथिल कर दिया था। उसे
हैरत थी। जिस पर खून में डूबी लाश पड़ी थी।
"सोहनलाल" जगमोहन ने पुकारा।
"हां।"
"आ—आ।"
"क्या" उस कथन की नकल करते हुए सोहनलाल ने पूछा।
"कहते में उसे हैरत थी कि जिसने उसका यह नकली मनमोहन
ये क्या है।"
कपड़े में उलझा रह ही सोहनलाल निरुत्तर। वह मूर्ख सा
खुला रह गया।

दो दैनन्दिन पत्रकार वार्ता के लिए हॉल में उपस्थित थे। उनके प्रतिनिधि
या साक्षात्कार-में कपड़े थे—बैठे और कुर्सी से। उनके खून से लथपथ
थी। देखने पर भी, स्पष्ट भाषा में कहा था "मनमोहन" उन्हें पहले मिला
था, बेतकल्लुफी से, धारदार चाकू से उस पर वार कर रहा है। चाकू का
एक वार सामने वाले के गले पर भी था। उसने अपने बचाव में चाकू सिर से
ऊपर अटका, थामे की चाह खुला था। उसे वार करने वाला, वार
करते करते रुक गया हो और चाकू को वहीं रहने दिया हो।
लाश की हालत वीभत्स हो रही थी।
एक ही निगाह देखने पर स्पष्ट हो रहा था कि इसे मरे ज्यादा
देर नहीं हुई। क्योंकि कमीज और पैंट पर, बहकर बिखरा खून
अभी गीला था।
"कुने देखा है इसे पहले कभी?" सोहनलाल ने पूछा।
"नहीं। पहली बार, वो भी मरी हालत में देख रहा हूं—।"
सोहनलाल ने गम्भीर स्वर में कहा।

जगमोहन बेड के पास पहुंचा और ध्यानपूर्वक उसके चेहरे को देखा। फिर जेब से तस्वीर निकाली जो कि उसी सूटकेस में से बरामद की निकली थी। जगमोहन ने तस्वीर को देखा। फ्रेम वाला कोई और ही था। सोहनलाल ने पास पहुंचकर, तस्वीर को देखा।

"यह किसकी तस्वीर है?"

"अनिता गोस्वामी के सूटकेस में पड़ी मिली थी। तो हत्या करने वाला यह नहीं है।" जगमोहन ने कहा और तस्वीर वापस जेब में डाल ली। नजरें लाश पर जा टिकी।

"चाकू बेरहमी से मारा गया है इसे—।" सोहनलाल ने कहा।

"नहीं।" जगमोहन की निगाह लाश पर जा टिकी—"चाकू मारने वाला अनाड़ी था। ध्यान से चाकू के वार को देखो। घबराहट और अनाड़ीपन से वार किया गया है। गले पर चाकू का वार। सिर पर भाले की तरह घोंपा गया चाकू इस बात की गवाही दे रहा है कि, जिसने भी इसे मारा, वो इस हद तक घबराया हुआ था कि उसे समझ नहीं आ रही थी कि कहां पर चाकू मारे कि यह मर जाये। सिर पर जब हत्यारे ने चाकू का वार किया, तब तक यह पहले ही मर चुका होगा।"

सोहनलाल एकाएक कुछ न कह सका।

"यह घर अनिता गोस्वामी का है, तो तीन चार दिन से मनोज के साथ थी?" जगमोहन ने पूछा।

"हां।"

"यकीन के साथ कह सकते हो?"

"हां। पूरा दावा है। बाद में बताऊंगा कि किस दम पर दावा कर रहा हूं। तुम कहना क्या चाहते हो?"

"मेरे ख्याल में अनिता गोस्वामी ने ही यह कत्ल किया है।"

"यह बात तुम कैसे कह सकते हो?" सोहनलाल के होंठ सिकुड़े।

"इसलिये कि जिसने कत्ल किया, वो अनाड़ी था। वो अनाड़ी अनिता गोस्वामी से बढ़िया और कौन हो सकता है।"

"यह तो कोई तर्क नहीं हुआ।"

"मेरा ख्याल है, मेरा तर्क ठीक है। लेकिन अपने तर्क को मैं कोई सबूत नहीं दे सकता हूं। अगर यह हत्या अनिता गोस्वामी ने नहीं की तो उस से कम यह तो पक्का ही है कि किसी अनाड़ी हत्यारे ने की है, जो घबराया हुआ था।"

सोहनलाल ने जगमोहन को देखा।

"अब क्या करना है?"

"हम दो ही यहां की तलाशी लेंगे।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा। "यहां से हमें एक ही चीज तलाश करनी है जिसका नाम मोना चौधरी हो।"

"ठीक है।"

"मरने वाले की तलाशी लेता हूं। शायद इसके बारे में कुछ पता चले।" जगमोहन ने कहा और वहां पड़ी लाश के कपड़ों की जेबें टटोलने लगा।

सोहनलाल दूसरे कमरे में चला गया।

जगमोहन को उसकी जेब में से पर्स के अलावा कुछ नहीं मिला। पर्स खोलकर चैक किया तो उसमें मौजूद एकमात्र काम की चीज ड्राईविंग लाइसेंस मिला। जिस पर मरने वाले का नाम गोपाल कुमार और उसका पता लिखा हुआ था।

जगमोहन ने ड्राईविंग लाइसेंस अपनी जेब में डाल लिया और पर्स वापस लाश की जेब में। उसके बाद कमरे में निगाह दौड़ाई। एक तरफ ड्रेसिंग टेबल थी। जगमोहन ड्रेसिंग टेबल को चैक करने लगा। वहां कोई भी काम की चीज नहीं थी। कमरे में पड़ी आलमारी के पास पहुंचा। उसे खोलकर देखा।

आलमारी में लेडीज कपड़े हैंगर पर लटके हुए थे। या तहें हुए थे। मर्द के कपड़े तो क्या मर्दाना रूमाल तक भी नजर न आया। जिससे जगमोहन समझ गया कि घर में अनिता गोस्वामी अकेली रहती है। आलमारी में से भी काम की चीज नहीं मिली। आलमारी के लॉकर में कुछ जेवरात अवश्य पड़े थे, जो उसने वहीं रहने दिए। एक तरफ टेबल और कुर्सी पड़ी थीं।

जगमोहन टेबल के पास पहुंचा और ड्राअर चैक करने लगा।

ड्राअर में कोई खास चीज नहीं मिली।

दस मिनट उसे चैक करने में ही बीत गये।

फिर जब पलटा तो बैड के पास ही नीचे फर्श पर छोटा सा पर्स पड़ा नजर आया। जो कि लेडीज पर्स था। जगमोहन ने आगे बढ़कर फौरन पर्स को उठाया। उस पर जरा सा खून भी लगा हुआ था। उसे खोलकर देखा तो भीतर सौ और पांच सौ के नोट ठूंसे हुए थे। साथ में छोटी-सी डायरी थी। जगमोहन ने डायरी निकालकर देखी। साथ में छोटी-सी डायरी थी। जगमोहन ने डायरी निकालकर देखा, वो फोन नम्बर वाली डायरी थी। जिसमें नम्बर लिखे हुए थे।

वर्मा सोहनलाल ने धक्का दे [illegible] थ [illegible] ने पासपोर्ट साईज की एलबम थी।

"यह देखो। इस एलबम में सारी [illegible] ने खींची है। मेरे ख्याल से उसकी असली शिनाख्त भी इसी से हो सके।" सोहनलाल ने कहते हुए एलबम जगमोहन को दिखाई।

जगमोहन ने सरसरी नजर एक तस्वीरों को देखा।

"एलबम जेब में रख लो।" जगमोहन ने कहा और उसे चेकबुक पर्स दिखाते हुए बोला—"मैंने बोला था कि इसका असली अनिता गोस्वामी ने की हो सकती है। मेरा कहना सही था। यह पर्स, मृत औरत के पास, फर्श पर से मिला है और इस पर खून लगा हुआ है। इसमें नोट भरे पड़े हैं और छोटी सी चेक बुक भी है। चेकबुक के पहले पन्ने पर, नाम लिखने वाली जगह पर अनिता गोस्वामी लिखा है। यानि कि उसने अपना नाम लिखा हुआ है। जब जो इस पर चाकू के वार कर रही थी, तब उसके हाथ से पर्स भी था जो हड़बड़ाहट में हाथों से गिर गया। बाद में इस हद तक घबरा चुकी थी कि पर्स को पूरी तरह भूल गई और भाग निकली।"

"शायद तुम ठीक कह रहे हो।" सोहनलाल ने गम्भीरता से सिर हिलाया।

जगमोहन ने पर्स और डायरी जेब में डाली और लाश के सिर में धंसा चाकू निकालकर उस पर से उंगलियों के निशान साफ करने लगा।

"यह क्या कर रहे हो?" सोहनलाल के होठों से निकला।

"यह चाकू इसी मरने वाले का है। जिस किसी तरह अनिता गोस्वामी ने हथियाकर, इसे ही पार डाला। उसने मजबूरी में ही इसकी जान ली होगी। लेकिन पुलिस को यह बात नहीं समझाई जा सकती। चाकू पर से उसकी उंगलियों के निशान नहीं मिलेंगे तो उसके फंसने के चांस कम रहेंगे।" जगमोहन ने गम्भीरता से कहा।

"तुम खामखाह दूसरों को कब से बचाने लग [illegible]" सोहनलाल ने व्यंग्य से कहा।

"मैं खुशनसीब से किसी को बचाने के लिये घर से नहीं निकला।" जगमोहन ने सोचपूर्ण स्वर में कहा—"लेकिन यह बात मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं कि अनिता गोस्वामी की जान खतरे में है। वो भागी फिर रही है।"

"जो कुछ नजर आ रहा है, उससे तो यही लगता है।"

उसके बाद [illegible] पर [illegible] पाली [illegible] [illegible] [illegible]

"हां। सोहनलाल भी मेरे साथ है।" कहकर जगमोहन ने गाड़ी भगादौड़ चला दी।

"ठीक है।" देवराज चौहान का स्वर कानों में पड़ा—"अभी सारे काम रोक दो। तुम सोहनलाल के साथ उसके घर पहुंचो। मैं भी सोहनलाल के घर पर पहुंचता हूं मौका मिलते ही।"

"मौका मिलते ही।" जगमोहन के होंठों से निकला—"मैं समझा नहीं।"

"हां।" देवराज चौहान का शांत स्वर कानों में पड़ा—"महादेव जब मेरा अपने छोड़कर मंत्रिम से जब मैं चला तो, महादेव की जान लेने वाला शायद मेरे पीछे लग गया था। अब वे लोग जानते हैं कि मैं यहां बंगले पर हूं। वे कोई एक नहीं, ज्यादा लोग हैं। फोन भी आया मुझे। यह पूछा गया कि महादेव ने मरने से पहले मुझे क्या बताया है। वे अब मुझे खत्म करना चाहते हैं और इस वक्त मैं महसूस कर रहा हूं कि वे बहुत सारे लोग हैं और बंगले को घेर रहे हैं। शायद अंधेरा होने पर वो बंगले के भीतर घुसने की चेष्टा करेंगे। मैं उनसे झगड़ा नहीं करना चाहता। क्योंकि मुझे तीन सौ दो नम्बर के बारे में जानना है। महादेव के असली हत्यारे को पकड़ना है। मैं कुछ ही देर में बंगले से निकलने जा रहा हूं। वो यही समझते रहेंगे कि मैं बंगले के भीतर हूं। यहां से मैं सीधा सोहनलाल के घर पहुंच रहा हूं।" इसके साथ ही देवराज चौहान ने रिसीवर रख दिया था। दूसरी ओर जगमोहन ने भी रिसीवर रख दिया।

रात में जगमोहन और सोहनलाल, असलम खान से मिले। सोहनलाल वाली एलबम दिखलाकर यह बात पक्की कर ली कि वो लड़की अंजना सान्याल की ही है।

□□

□□

देवराज चौहान जब सोहनलाल के कमरे में पहुंचा तो रात के दस बज रहे थे। देवराज चौहान की बांह मामूली सी घायल थी। जिसे देखते ही जगमोहन बोला।

"गोली लगी है?"

"खरोंच खाती निकल गई।" देवराज चौहान बैठते हुए कह उठा।

[illegible] कि उस बारे में कोई [illegible] से पूछ लेना ही [illegible] हो गये।" कामेश्वर को भाई [illegible]

[illegible] "इसलिए [illegible] ने [illegible] कामेश्वर से कि-[illegible] दिलाए। [illegible] को [illegible] बहुत [illegible] था। [illegible] कवि आदमी है। [illegible] कोई [illegible] था। बहुत ही [illegible] हो। [illegible] बच्चे को [illegible] था कि [illegible] दादा किसी भी [illegible] में बंद न [illegible]"

"मालूम नहीं हो [illegible] वे [illegible]"

"नहीं। [illegible] एक [illegible] बार [illegible] को [illegible] आया था। [illegible] बैठ ही [illegible] को [illegible] था। [illegible] [illegible] इकरा [illegible] को [illegible] था। [illegible] को [illegible] का [illegible] किया [illegible] [illegible] हाथ [illegible] [illegible]"

"बहुत [illegible] [illegible] [illegible]

"असलम खान का तो यही कहना है।"

"असलम खान ने यह नहीं बताया कि बतौर गोताखोर वो महादेव से समन्दर में से क्या तलाश करवाना चाहती थी?"

"यह बात असलम खान को भी नहीं पता।"

"तुमने पूछा था?"

"हां।"

सोचों में डूबे देवराज चौहान ने टेबल पर पड़ी तस्वीर को उठाया जो जगमोहन को सूटकेस में से मिली थी। वह एक ही निगाह में लग रहा था कि वो किसी अमीर आदमी की तस्वीर है। उसने तस्वीर को पलटकर देखा। उसके पीछे कुछ भी लिखा छपा नहीं था।

देवराज चौहान ने तस्वीर रखते हुए जगमोहन से कहा।

"अनिता गोस्वामी अपने सामान के साथ, महादेव के घर रह रही थी। जबकि उसका अपना घर भी है।"

जगमोहन ने सहमति से सिर हिलाया।

"इसका मतलब कि वो कोई खास काम कर रही थी। शायद किसी के खिलाफ कुछ कर रही थी और उसे डर था कि उसकी जान लेने की कोशिश भी की जा सकती है। महादेव के यहां रहने की एकमात्र यही वजह हो सकती थी।"

"तो फिर महादेव की जान क्यों ली गई?"

"इसलिये कि, अनिता गोस्वामी, महादेव से जो काम करवा रही थी, कुछ लोग नहीं चाहते थे कि वो ऐसा करे। मेरे ख्याल में अनिता गोस्वामी को खतरे का एहसास हो गया होगा। वो तो खुद को बचा गई, परन्तु महादेव उनकी निगाहों में ही रहा और गोलियों का निशाना बन गया।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा--"बन्दरगाह पर मौजूद ऐसे किसी आदमी को जानते हो, जो महादेव का दोस्त रहा हो?"

"नहीं।"

"मैं भी नहीं।"

"महादेव, मुम्बई बन्दरगाह पर जो काम कर रहा था तो जाहिर है कि वहां उसका कोई साथी भी होगा। और महादेव ने ऐसी कोई खबर पा भी ली होगी, जो उसकी मौत की वजह बनी।" देवराज चौहान ने कहा।

"जिस वक्त महादेव को शूट किया गया, हो सकता है कि

उसी तरह अनिता गोस्वामी की भी हत्या कर दी गई हो।" जगमोहन ने कहा—"क्योंकि वो भी तो जान बचाती भागी फिर रही थी।"

"तुम्हारी बात सच ही मानता अगर अनिता गोस्वामी के घर, उस आदमी की लाश न पड़ी होती और खून लगा लैटर पत्र पास में न मिलता। उससे स्पष्ट जाहिर है कि वो खून अनिता गोस्वामी ने ही किया है और अभी तक वो जिन्दा है परन्तु मौत उसके पीछे है। वो खतरे में है। अगर वो हम मिल जाय तो हमारे सारे सवालों का जवाब मिल जायेगा। एक एक बात आइने की तरह साफ हो जाये। परन्तु जिसे जान का डर हो, वो आसानी से मिलने वाली नहीं। वो तो अपनी परछाई से भी दूर भागती।"

"यह बात तो है।" सोहनलाल ने सिर हिलाया।

"सुरेश जोगेलकर का मरना, मुझे समझ में नहीं आया।" जगमोहन कह उठा।

"तुमने मुझे बताया कि उसे वैम्बूर ले जाने वाला टैक्सी ड्राईवर कह रहा था कि लड़की घबराई हुई थी और महादेव उसे तसल्ली दे रहा था कि सुरेश जोगेलकर सब ठीक कर देगा। वो उसका दोस्त है। यानि कि महादेव वैम्बूर में, अनिता गोस्वामी के साथ, जोगेलकर से मिला। और जब तीन सौ दो नम्बर वाली को मालूम हुआ कि महादेव जोगेलकर से मिला है, तो उन्होंने जोगेलकर को खत्म कर दिया। यानि कि महादेव या अनिता गोस्वामी जिससे भी मिलते, वो लोग उन्हें खत्म कर देते। शायद यह सोचकर कि उन दोनों ने सामने वाले को उनके बारे में जाने क्या बताया होगा। जैसे कि उन्होंने मुझे भी खत्म करने की चेष्टा की। स्पष्ट जाहिर है कि वो लोग नहीं चाहते कि तीन सौ दो नम्बर की हकीकत किसी को पता चले।"

"तीन सौ दो है क्या?" मोहनलाल सीधा सपाट स्वर में कह उठा।

"यही तो मालूम करने की चेष्टा कर रहे हैं।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"एक तरफ जो खत्म होने आई हैं, मैं उसी के सहारे पर बात बना रहा हूं। असल बात तो शायद बाद में मालूम हो, जब तीन सौ दो नम्बर के बारे में पता चलेगा कि वो किसका, किस चीज का नम्बर है।"

दोनों खामोश रहे। चेहरों पर सोचों के भाव नाच रहे थे।

देवराज चौहान ने टेबल पर पड़ा ड्राईविंग लायसेंस उठाया। उसे खोलकर देखा। मरने वाले की नम्बर और उसका पता लिखा था। देवराज चौहान ने लायसेंस मोहनलाल को थमाते हुए कहा।

"मारने वाले के बारे में जानकारी इकट्ठी करो। नाम पता भी। लिखा है। वो कैसा आदमी था। किसके लिए काम करता था। या फिर ऐसी ही कोई बात।"

मोहनलाल ने सिर हिलाकर नोटबुक जेब में रख ली।

देवराज चौहान ने टेबल पर पड़ी अनिता गोस्वामी की फोन डायरी उठाई और एक एक पन्ना पलटने लगा, उन पर लिखे फोन नम्बरों को चैक करने लगा।

पूरी डायरी चैक करने के बाद उसने जगमोहन को देखा।

"इस डायरी में एक फोन नम्बर के साथ नाम की जगह मामी लिखा है। इस मामी को चैक करो। इसके अलावा और भी कई नम्बर हमारे काम के हो सकते हैं। सब नम्बरों को चैक करो, शायद कोई काम की बात मालूम हो।"

जगमोहन ने फोन की डायरी ले ली।

देवराज चौहान ने अनिता गोस्वामी की तस्वीरों वाली पोटरफोलियो साईज की एलबम उठाई और एक एक तस्वीर को गौर से देखने लगा। कोई तस्वीर घर बाजार में ली गई थी। तो कोई तस्वीर पार्क में। कुछ तस्वीरें समन्दर के किनारे की थीं तो कुछ तस्वीरें पानी में चलने वाले बड़े-बड़े जहाजों की थीं। जिस पर बहुत खूबसूरत चेहरे में अनिता गोस्वामी खड़ी नजर आ रही है।

"तस्वीरों और एलबम की हालत बताती है कि यह तस्वीरें हाल ही में ली गई हैं। आधी से ज्यादा तस्वीरों में एक ही ड्रेस कपड़े हैं यानि कि कैमरे में पड़ी फिल्म एक दो दिन में खत्म कर दी गई है। तो सवाल यह आता है कि तस्वीरें खींचने वाला कौन है जो भी है, अनिता का कोई खास ही होगा।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने जगमोहन और मोहनलाल को देखा।

"हर तस्वीर में वो खुलकर मुस्करा रही है तो तस्वीरें खींचने वाला उसका खास ही होगा।" जगमोहन बोला।

"और उस खास का फोन नम्बर इस डायरी में भी होगा।" देवराज चौहान ने विश्वासभरे स्वर में कहा।

"हां।" जगमोहन ने सहमति में सिर हिलाया "मैं कोशिश करता हूं कि उसके बारे में जान सकूं।"

देवराज चौहान एलबम बन्द करने ही जा रहा था कि एकाएक ठिठक गया। अगले ही पल उसकी आंखें सिकुड़ गईं। चेहरे पर अजीब-से भाव आ गये।

[illegible] तस्वीर से आँखें गड़ाये हुये थे। [illegible]
था [illegible] था। [illegible] के [illegible] पर [illegible]
थी। [illegible] था और [illegible]
[illegible] था। [illegible]
[illegible] को देखकर [illegible]

पल्ले भी पल [illegible] साधारण होने लगी।
गहरे पर [illegible]
[illegible] [illegible] था और [illegible]
बढ़ाई।

"इस तस्वीर को देखा।"
[illegible] तस्वीर को हाथ में पकड़ देखा।
"कुछ [illegible]" [illegible] [illegible]
"[illegible] [illegible] है तस्वीर में। [illegible]
पहले [illegible]" [illegible] तस्वीर में [illegible]

"कभी मालूम ही [illegible], साहब।" [illegible]
सोहनलाल ने [illegible] हाथ में [illegible]
"[illegible] [illegible] [illegible]" कहते हुए
बाद सोहनलाल तस्वीर में निगाहें [illegible] कह उठा- "[illegible]
की तस्वीर है। तस्वीर भी अच्छी ली गई है और -।"

[illegible] ने [illegible] हाथ से तस्वीर ली और [illegible] पर रखी।
"यह तस्वीर [illegible] पर- पानी के जहाज पर ली [illegible]।"
[illegible] ने [illegible] को देखा।

[illegible] ने सहमति से सिर हिलाया।
"[illegible] वो छुट्टी है। [illegible] पर, पर जहाज का [illegible]
[illegible] है।"

"यह [illegible] [illegible] [illegible] है, ये [illegible] कि [illegible]
[illegible] [illegible] है।" सोहनलाल कह उठा।

"यह [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] -।"

[illegible] ने सिर हिलाकर [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

दोनों चौंके।
"तीन सौ दो।"
"यह [illegible]"

"हां," देवराज चौहान ने सोचते हुए सिर हिलाया। "हो सकता है, जहाज नम्बर तीन सौ दो के बारे में कुछ कहना चाहता हो।"

जगमोहन और सोहनलाल की निगाह देवराज चौहान पर जा टिकी।

"तुम्हारा मतलब कि महादेव इसी जहाज नम्बर तीन सौ दो के बारे में कुछ कहना—!" जगमोहन ने कहना चाहा।

"हो भी सकता है और नहीं भी।" सोहनलाल ने टोकते हुए कहा।

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाई और होंठों पर सिगरेट फंसाकर बोला।

"महादेव, इसी जहाज नम्बर तीन सौ दो के बारे में कुछ कहना चाहता था।"

"यह बात तुम इतने दावे के साथ कैसे कह सकते हो—हो सकता है तस्वीर में तीन सौ दो नम्बर जहाज का दिखना महज इत्तफाक हो। इस नम्बर को हम महादेव के साथ इसलिए जोड़ रहे हैं कि मरने तक महादेव के मुंह से तीन सौ दो निकला था।" जगमोहन ने अपने शब्दों पर जोर देकर कहा।

देवराज चौहान के होंठों पर अर्थपूर्ण-सी मुस्कान उभरी।

"तुम्हारी बात सही है कि इस वक्त हम यह जानने की चेष्टा कर रहे हैं कि तीन सौ दो नम्बर क्या है। ऐसे में जो भी हमें तीन सौ दो नम्बर हमारे सामने आएगा उसे हम महादेव वाला तीन सौ दो समझने लगेंगे। इस वक्त अगर हम जहाज पर लिखे तीन सौ दो नम्बर के साथ-साथ अंग्रेजी गोलार्धों को भी साथ ले, जो कि तीन सौ दो नम्बर जहाज पर लगे हैं—जो आखिरी तीन-चार दिनों में महादेव के साथ रही थी, और—— ए, . इसी पर कुछ काम करवा रही थी, तो हमें यह मानना पड़ेगा कि महादेव इसी जहाज नम्बर तीन सौ दो के बारे में कुछ कहना चाहता था। क्योंकि तीन सौ दो नम्बर के जहाज और अंग्रेजी गोलार्धों का एक ही साथ होना महज इत्तफाक नहीं हो सकता।"

जगमोहन और सोहनलाल देवराज चौहान को देखते रहे।

मन पहले ही कहा था कि यह नम्बर हाल ही में जा गुम लगती है। यानि कि ज्यादा से ज्यादा इस बारह दिन पहले इसका सम्बन्ध जहाज नम्बर तीन सौ दो समेत बन्दरगाह पर हो इस वक्त नजर डाल रहा है। इस नम्बर से स्पष्ट जाहिर है कि नम्बर सुर्ख जहाज पर जा गुम है। नम्बर देने वाला समन्दर के बीच पर जा

जाना खतरे वाला काम हो सकता है, तुम मेरे भाई के साथ कुछ इन्तजाम करो। वैसा वहां पहुंचकर हो बन्दरगाह पर उसका पीछा करना और इन्तजाम करो। वहां पहुंचकर ही बन्दरगाह पर उसका पीछा करना और इन्तजाम करो।

सोहनलाल ने कहा।

जगमोहन ने सबके चेहरे पर से होती हुई निगाह वहां खड़े किसी अपरिचित आदमी की ओर उठी। वह अपरिचित आदमी के मुखड़े पर निगाह पड़ी थी।

"यह तस्वीर किसकी है?" जगमोहन ने कहा।

"यह तस्वीर उस किसी खास व्यक्ति की है जो अपने साथियों के लिए खास महत्वपूर्ण रखता है।" देवराज चौहान ने कहा। "इसीलिए वह मुखड़े में अपने कपड़े बनवाकर महादेव के यहां ले आया था। इस पर किसी की तस्वीर भी साथ में आने का यही कारण है कि यह खास आदमी की है।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने जगमोहन के हाथ से तस्वीर ली और वापस जेब में रख ली।

□□

सुबह के आठ बज रहे थे।

देवराज चौहान मुम्बई बन्दरगाह पर पहुंचा। वह सफेद कपड़े पहने था। बदन पर कुर्ता-पैजामा पहन रखा था। गले में काला रूमाल बांधा हुआ था। गाल पर काले रंग के बिल्ले जैसा दाग था। सिर के बाल भी काले रंग से रंगे नजर आ रहे थे। आंखों पर भी हल्के बाल लगा रखे थे। पीछे पर नजर डालने पर उसकी लम्बी शीशी प्लेन थी।

इसके अलावा उसका कोई भी परिचय नहीं दिया जा सकता था।

बन्दरगाह का विशाल बड़ी इमारत के सामने पहुंचकर उसने टैक्सी रोकी और किराया देकर, भीतर प्रवेश कर गया। भीड़ और गर्मी वहां नजर आ रही थी। हर कोई अपने काम में व्यस्त नजर आ रहा था। वर्दी पहने बन्दरगाह के कर्मचारी कोई अफसर और कुली घूमते नजर आ रहे थे।

कुछ आगे जाकर अलग-अलग काउन्टर बने हुए थे। जिन पर कर्मचारी मौजूद थे और लोग भी लाईन में खड़े थे। देवराज चौहान समझ गया कि, कोई यात्री जहाज के वह यात्री हैं जिनकी रवानगी की तैयारी हो रही है। उन काउन्टरों के बीच, काफी लम्बी गलियारे दूर तक जा रही थी जहां तक जाने के लिए यात्रियों को वहां से

[illegible] थी। [illegible]

[illegible] थी।

[illegible] था।

[illegible] थी।

[illegible] थी।

[illegible] थी

था, नौकर, अभी पढ़े हैं।"

"पढ़ने पढ़े हैं, मगर एक पड़ोसी भी था। वो भी बहुत पढ़ता था।" उसने तल्खी साथ लेकर कहा।

"पढ़ता था, तो अब क्या हो गया उसे?"

"जेल में है। उम्र कैद की सजा भुगत रहा है, उपन्यास पढ़ने की बदौलत।"

"ये कैसे हो सकता है, मैं समझा नहीं।"

"उसकी नौकरी छूट गई थी। नई और नौकरी मिली नहीं। पल्ले जमा जमा भी था गया। अब तो ना की नौबत थी। दो ही काम थे। भीख मांगो या चोरी करो। नौकरी मिलने की आस तो पूरी तरह खत्म हो गई थी। और वो रोज लेखक के उपन्यास पढ़ता था, जिसकी कहानियों में डकैती की योजनाएं होती थीं।" कहकर दो पल के लिये चौकीदार रुका—"साहब जी! आप लोग जो उपन्यास लिखते हो, वो कल्पना की उपज होती है। सांचों की पर्ची होती है। हकीकत की हवा भी उपन्यास को छूकर नहीं गई होती। लेकिन कुछ पढ़ने वाले समझ बैठते हैं कि उपन्यास में सच लिखा है। मैंने पत्रकारों को बात समझाया कि ये सब झूठ होता है, परन्तु वो नहीं माना। उसने उस उपन्यास लेखक के उपन्यास में से, एक उपन्यास चुना, जिसमें उसने डकैती की और इसी डकैती को मानने रखकर जैसे छोटे बच्चे पेपर देते हैं, वैसे ही उसने डकैती करने की कोशिश की और जेल में पहुंच गया। इतने पर भी उसे अक्ल नहीं आई। परसों ही जेल में उसकी बीवी उससे मिलने गई तो बीवी को बोला मुझे उसी लेखक के छोड़कर वो उपन्यास लाकर दो, जिन उपन्यासों में उपन्यास का हीरो जेल से भागता है योजना बनाकर। मतलब कि अब वो जेल से भागने की सोच रहा है, उपन्यास के हीरो की तरह—।"

देवराज चौहान मुस्कराया।

"तो ये उपन्यास लिखने वाले की गलती हुई या पढ़ने वाले की?" देवराज चौहान बोला।

"लिखने वाले ने तो कल्पना से लोगों का मनोरंजन किया है। शायद उपन्यासों में ऐसा कुछ लिखा छपा भी होता है कि ये नकली कहानी है। इसे मजे लेने के लिए ही पढ़ें। इस पर भी तो नहीं समझा तो गलती पढ़ने वाले की ही हुई कि नकली बातों को असली समझ कर चल दिया मुंह उठाकर—।" चौकीदार ने मुंह बनाया।

मुस्कराता हुआ देवराज चौहान उसे देखता रहा।

"आप को भी उपन्यास लेखक से मतलब है ?"

"नहीं। मैं तो प्रेम 'विनाश पुर अभिलाषा' उपन्यास लिखता हूं।"

"फिर तो आप बहुत अच्छा काम करते हैं।"

"किसका?"

"भगवान लड़के-लड़कियों का। आपके इस धंधे से प्रेम करने के कई रास्ते टूट जाएंगे।"

"मुझे तो नहीं कोई सुबहा नहीं लगता।"

"हमारी सखी में एक लड़का-लड़की एक दूसरे से प्रेम करते हैं। वह भी प्रेम के उपन्यास ही पढ़ता था।"

"हो सकता है।"

"आपने अपने किसी उपन्यास में लिखा कि एक लड़का-लड़की लड़की को भगा ले जाता है।"

"अभी तक तो नहीं लिखा।"

"तो फिर इस लड़के ने किसी और लेखक का उपन्यास पढ़ा होगा।" उसने समझने वाले भाव में सिर हिलाया।

"तुम उपन्यासों के बहुत शौकीन लगते हो।"

"हां। बहुत उपन्यास पढ़ता था। मुंशी प्रेमचंद, शरत चंद्र चट्टोपाध्याय, कौशिक, इलाचन्द्र जोशी। इन्हें पढ़ते थे।"

"पुराने पापी हो।"

वह हंसा फिर बोला।

"बहुत खुशी हुई आपसे मिलकर कि आप लेखक भी हैं। लेकिन काम क्या करते हैं?"

"उपन्यास लिखता हूं।" सहसा वह झेंपता सकुचाया।

"माया। सुना। लेकिन काम क्या करते हैं?" वह फिर कह उठा।

"यह काम नहीं है?"

"उपन्यास लिखना?"

"हां।"

"असंभव है। उपन्यास लिखना कैसे काम हो सकता। इसमें क्या कमाई होती है?"

"कोई खास नहीं होती।"

"हैरानी है। पहली बार सुन रहा हूं कि उपन्यास लिखना काम है। थोड़ा बहुत वैसे भी लिख लेते हैं। और अच्छा खासा काम। मैं तो

इसे काम करना नहीं मानता।" उसने कुछ ज्यादा ही लम्बी सांस ली। थोड़ा-सा मुंह बनाया।

देवराज चौहान के होंठों पर बराबर मुस्कान छाई हुई थी। बात आगे बढ़ाने के लिये वो पुनः बोला।

"आप कुछ कह रहे थे—?"

"मैं बता रहा था कि मैं उपन्यास लिखता हूं। और अब जो उपन्यास लिख रहा हूं उसमें मुम्बई बन्दरगाह दिखाना है। गोदी, सामान रखने की जगह और एक जहाज को अन्दर से देखना है कि वो कैसा होता है।"

"देखने के बाद ये सब चीजें आप उपन्यास में लिखेंगे?"

"हां।"

"फिर तो आपको ये भी जानना होगा कि जहाज पर कौन कर्मचारी, क्या-क्या काम करता है।"

"हां।"

"एक बात के अलावा बाकी बातें तो मैं पूरी कर सकता हूं।"

"कहां दिक्कत है?"

"जहाज भीतर से दिखाना मेरे बस से बाहर है।"

"क्यों?"

"किसी बाहरी आदमी को बन्दरगाह पर लंगर डाले जहाजों के भीतर नहीं ले जाया जा सकता। जमाना बड़ा खराब है। क्या मालूम कोई बम रखकर, जहाज को नुकसान पहुंचा दे।"

देवराज चौहान ने जेब से पांच सौ का नोट निकाला और उसकी हथेली में दबा दिया।

"यह क्या?"

"रख लो। मैं यह नोट खर्चे में डालकर फर्रा प्रकाशक को दे दूंगा कि ये पैसे उपन्यास लिखने की भागदौड़ में खर्च हुए तो वो हमें दे देता है। अब बताओ, जहाज को भीतर से देख सकता हूं?" देवराज चौहान मुस्कराया।

"प्रकाशक आपको इस तरह के खर्चे देता है तो फिर शायद जहाज को देखा जा सकता है।" वो मुस्कराया।

"दिखाओ। नोट और मिल जायेंगे।"

"आगे का काम मुखी करेगा। वो जो कुर्सी पर बैठा है। आप वहीं रुकिये। मैं उसको एक ही लाईन में सारी बात समझा देता हूं। आपकी बात समझने में दो दिन लगा देगा।" देवराज चौहान ने

"और कोई चक्कर नहीं है। तुम अपनी बात करो।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

"ये, तुम्हें गोदी दिखा सकता हूं। गोदाम दिखा सकता हूं। जहाज पर कौन कर्मचारी क्या काम करता है, वो बता सकता हूं। कहां से समन्दर का ठंडा-सा चक्कर होता है, वो बता सकता हूं। कहां से समन्दर का ठंडा-सा चक्कर भी लगवा देता हूं, बाहर से। लेकिन किसी जहाज के भीतर नहीं ले जा सकता। नौकरी खतरे में पड़ जायेगी।"

"तुम्हारी बीवी की साड़ी दिलाने की भारी है।" देवराज चौहान ने पूछा।

"तीन हजार तो लगता है। तुम देवी लोट की बात कर रहे थे तो साढ़े तीन लगा लो।"

"इसके अलावा साड़ी के साथ और जो जो भी कपड़े जाते हैं, उनकी कीमत लगा लो।"

"लेकिन—।"

"कीमत तो लगाओ।"

"फिर तो पांच हजार का खर्चा देना पड़ेगा।" इसने देवराज चौहान के चेहरे पर निगाह मारी।

देवराज चौहान ने जेब से दस हजार की गड्डी निकाली। सबकी आंखों के सामने फेंकी दी और उसे वापस जेब में रखकर खड़ा हो गया।

"हमें जाने दो।"

"यह दस हजार मैं किसी और को दूंगा। वो मुझे जहाज के भीतर भी घुमा देगा।"

"ये क्या कह रहे हो। फिर तो मेरी बात का मतलब नहीं रहा।"

"मेरा काम करोगे तो मतलब के साथ मतलब रखना भी आ जायेगा।" देवराज चौहान ने कहा। "दस हजार दूंगा। [illegible] लिखने के लिए जहाज के भीतर से देखना बहुत जरूरी है। तो ये देखकर ही रहूंगा। तुम [illegible] तो कोई दूसरा [illegible]"

"दूसरे की बात मत करो। लाओ गड्डी मुझे दो।"

देवराज चौहान ने गड्डी निकालकर उसे दी, तो सबकी जेब में पहुंचकर गुम हो गई।

"सुनो, तुम्हारा काम मैं करा देता हूं। लेकिन याद रखना, तुम मेरे रिश्तेदार हो और तुमने कभी भी भीतर से जहाज नहीं देखा। तुम्हारी जिद और रिश्ते की मजबूरी में तुम्हें जहाज दिखा रहा हूं।

कहीं बात हो तो ये ही कहना। कहीं दस हजार के चक्कर में तेरी नौकरी मत लटका देना।"

"फिक्र मत करो। लेकिन मैं वही जहाज भीतर से देखूंगा, जो मुझे बाहर से पसन्द आयेगा।"

"जब तक जहाज बन्दरगाह पर लंगर डाले खड़े है, तब तक तो अपना ही माल है, कोई भी देख लेना। तुम रुको। मैं अपनी जगह पर किसी और को फिट करके आता हूं।"

□□

□□

वो मुर्गी, जिसका नाम रघुवीर सिंह था। उसने देवराज चौहान को गोदाम दिखाया उसके बाद हैंक। देवराज चौहान वहां के माहौल को बारीकी से देख रहा था।

"सुनो।" रघुवीर सिंह बोला—"तुम्हारे उपन्यास की कहानी में लड़का बन्दरगाह पर आता है या कहानी की हीरोइन?"

"अभी यह तय करना बाकी है।" देवराज चौहान ने कहा।

"तो अभी तय नहीं किया। कहानी तैयार नहीं की अभी?"

"सब-कुछ तैयार है। जहाज के भीतर नजर मारने के बाद, बाकी बातें भी तय हो जायेंगी।" देवराज चौहान ने कहने के पश्चात् सिगरेट सुलगाई।

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"राजन कुमार।"

"राजन कुमार—?" रघुवीर सिंह सावधान स्वर में कह उठा—"शायद मैंने तुम्हारा नाम सुन रखा है।"

"मेरा उपन्यास भी देखा होगा।"

"हां—हां, वो भी देखा है। याद आ गया।" रघुवीर सिंह जैसे याद आ जाने वाले लहजे में कह उठा।

देवराज चौहान के होंठों पर शांत मुस्कान उभरी।

"जहाज पर चलें?"

"हां—हां चलो। आओ, बन्दरगाह के किनारे की तरफ चलते हैं। वहां से बात न होगी। वहीं से तुम्हें नंगर डाले खड़े कई जहाज नजर आ जायेंगे। जो कहोगे, दिखा दूंगा।"

दोनों चल पड़े।

कई रास्तों से गुजरते हुए, लगभग आठ मिनट बाद वे दोनों बन्दरगाह के किनारे पर पहुंचे। समन्दर की सतह से टकराकर आती नमी से

पास किन्तु चलने की सराई में।

"कब की तैयारी से रही है रघुवीर?"

नहीं, नहीं मैं नहीं जाऊंगी।"

"तुम भाई सिंघल कम्पनी की ओर से बराबर सिग्नल दे रहे थे। फिर क्यों नहीं आए?"

"मैं तो समझा था कि कोई और ही है। और फिर मैं तो यह भी नहीं जानता था कि तुम्हारे पास कोई नई बोट खरीदी है।"

"मैं तुम से कुछ नहीं कहता।" बोट चालक बोला।

"तुम भाई सिंघल कम्पनी की ओर से बराबर सिग्नल दे रहे थे। फिर क्यों नहीं आए?"

"मैं तो समझा था कि कोई और ही है। और फिर मैं तो यह भी नहीं जानता था कि तुम्हारे पास कोई नई बोट खरीदी है।"

"मैं तुम से कुछ नहीं कहता।" बोट चालक बोला।

साइड इतनी ऊंची थी कि [illegible]

[illegible]

क्या?"

"[illegible]

जहाज के पास पहुंचकर ऐसा ही करना पड़ेगा।"

"ठीक है। चल भाई गोपाल।"

बोट ने [illegible]

[illegible]

दूसरे जहाज पर [illegible]

बोट जब तीसरे जहाज पर [illegible] तो उसमें सवार लोगों के भाव ही गये। इस जहाज के पीछे सफेद रंग के ऊपर नीचे 302 लिखा हुआ था। यह काफी विशाल जहाज था। करीब छ मंजिलें और तीन बड़े बड़े डेक नजर आ रहे थे। जहाज की बाहरी दीवार लोहे जैसी बड़ी मजबूत लग रही थी। जहाज के दोनों तरफ साइडों में मोटे मोटे अक्षरों में 'नीलगिरी' लिखा था।

मोटरबोट ने 302 का चक्कर लगाया।

"यह जहाज मुझे भीतर से दिखा दो।" देवराज चौहान ने कहा।

रघुवीर सिंह ने गोपाल को देखा।

"इस जहाज के भीतर कौन होगा?"

"सफाई वाले होंगे। मालूम पड़ा है सिंगापुर से आया था और तीन दिन बाद फिर सिंगापुर जायेगा।" गोपाल बोला।

"यह सरकारी जहाज है?" देवराज चौहान ने जानबूझकर पूछा।

"नहीं। ये नीलगिरी शिपिंग कॉरपोरेशन का जहाज है। इस कम्पनी के चार बड़े बड़े जहाज हैं। बूग साहब मालिक है इस कम्पनी के। बहुत बढ़िया आदमी है।" रघुवीर सिंह ने जवाब दिया – "गोपाल, बोट को सीढ़ी के साथ लगा जो नीचे लटक रही है। वहां से हम ऊपर चले जायेंगे।"

"लेकिन जहाज देखने में तो बहुत बड़ा लगेगा।" गोपाल बोट का रुख उधर मोड़ता हुआ बोला।

"ये बात तो है।" कहते हुए रघुवीर सिंह ने प्रश्नभरी निगाहों से देवराज चौहान को देखा।

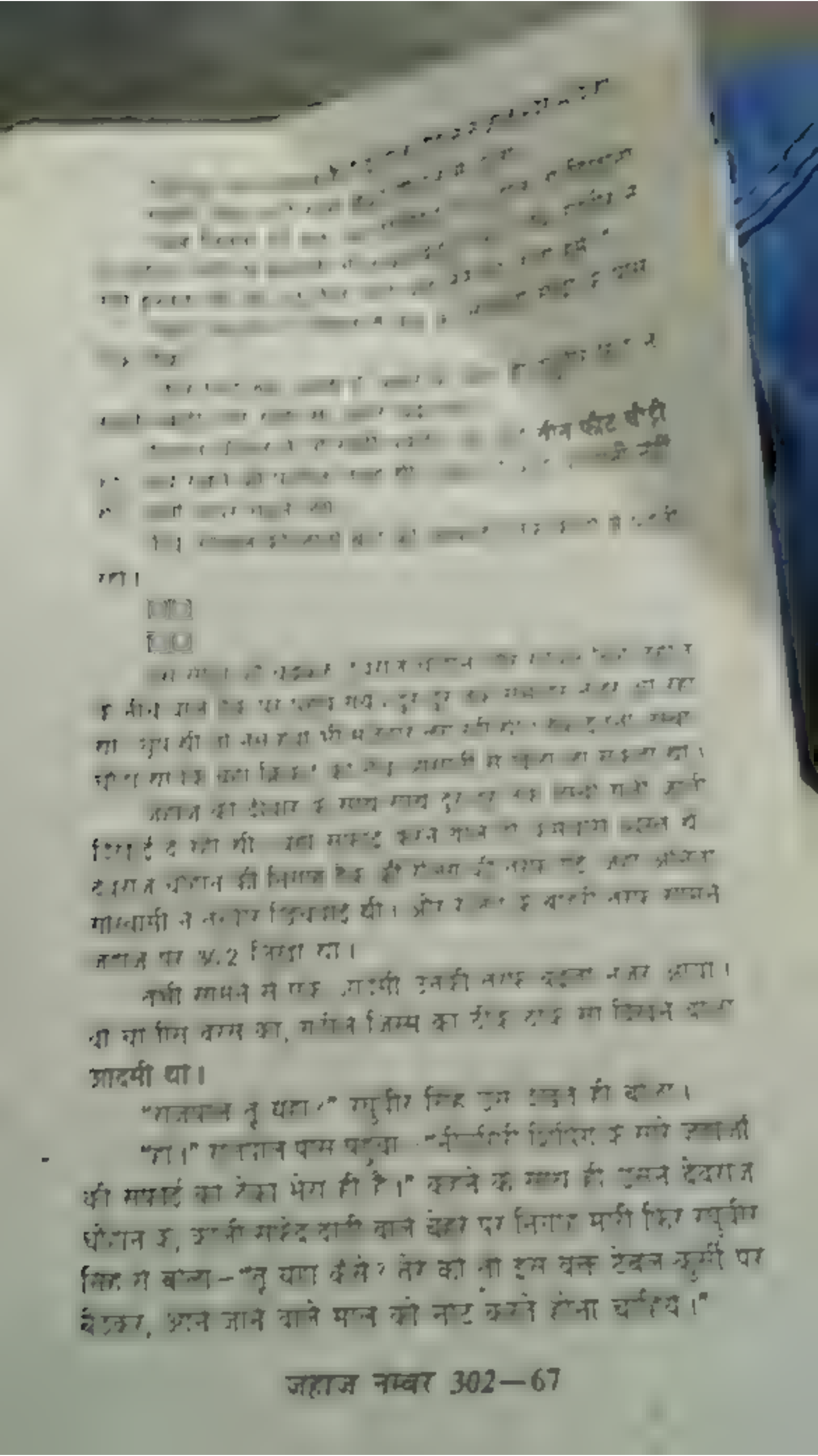

आदमी था।

"राजपाल तू यहां?" गुरबीर सिंह पूरा खड़ा हो गया।

"हां।" राजपाल धम्म पड़ा। "मैं-मैं-मैं दिल्ली से सीधे इसी गाड़ी में बैठा हूं।" कहते के साथ ही पुलिस डिपार्टमेंट की सारी हेकड़ी भूल कर, उसने गुरबीर सिंह के गले में बांहें डाल दीं। गुरबीर सिंह ने उसे अपने से अलग किया और उसके कंधे पर मुक्का मारते हुए कहा—"तू यहां कैसे? तेरे को तो इस वक्त ड्यूटी पर होना चाहिये।"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

यह जहाज यात्रा पर रवाना होता है तो बूटा साहब अकसर इसी जहाज पर यात्रा करते हैं। कभी नहीं भी करते। परन्तु इस तरफ कोई आम आदमी नहीं आ सकता बूटा साहब भीतर हों या न हों। जहाज की रवानगी के वक्त से ही यहां सख्त पहरा लग जाता है।"

देवराज चौहान को महसूस हुआ कि इस मकसद की बात मालूम हो गई है। इसके बाद जहाज के एक फेरे के आधे हिस्से की इस तरफ हमेशा ही निगरानी रखना उसकी समझ से बाहर था। यकीनन कोई बात होनी चाहिये। जिसका कम्पनी का मालिक बूटा, पागल तो होगा नहीं।

"तुम कभी भीतर गये हो? इस दरवाजे के पार ..." देवराज ने मुस्कराकर पूछा।

"हां। दो तीन बार बूटा साहब के आदमियों के साथ ही गया था," राजपाल ने बताया।

"क्या है इस दरवाजे के पार। मतलब कि भीतर के रास्ते कैसे हैं और--?"

"सॉरी।" राजपाल ने सिर हिलाकर मुस्कराकर कहा--"बूटा साहब की तरफ से सख्त हिदायत है कि जहाज के प्राईवेट हिस्से के बारे में किसी से कोई बात नहीं की जाये। और आप तो उपन्यासकार हैं। कहीं अपने उपन्यास में भीतर के रास्तों का जिक्र कर दिया तो मेरी खैर नहीं।"

"यकीन रखिये। यह बात मैं उपन्यास के लिये नहीं, अपनी जिज्ञासा के लिये पूछ रहा हूं।"

"तो भी मैं माफी चाहूंगा। बूटा साहब की तरफ से, इस बारे में बात करने की इजाजत नहीं है।

"कोई बात नहीं। मैं इस बात के लिये आप पर जोर नहीं डालूंगा। अब जहाज कब रवाना हो रहा है?"

"तीन दिन बाद। सिंगापुर के लिये। इस बार तो बूटा साहब भी जहाज पर यात्रा करेंगे। आओ मैं तुम्हें जहाज की बाकी चीजें दिखाता हूं। उसके बाद तुम्हें जहाज के स्टाफ के बारे में बताऊंगा। उपन्यास लिखते समय शायद इन बातों की जरूरत पड़े।"

देवराज चौहान ने उस बन्द दरवाजे को देखा। फिर राजपाल और रघुवीर के साथ चल पड़ा। उस बन्द दरवाजे के पार, दूसरी मंजिल के, उस प्राईवेट हिस्से पर कुछ है। खास कुछ है। इसी वजह से उस तरफ किसी को जाने की इजाजत नहीं थी।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अहम काम जहाज

हर सामान को मुहैया कराना इस विभाग का काम है। इसमें मुख्य

बहुत ज्यादा होती है। जहाज पर डेम हादसा होता है। इसे डैमेज

पाइप वगैरह की जांच करता है।"

"हर तरह की फौज होती है, जहाज पर।" रघुवीर सिंह ने

देवराज चौहान को देखकर कहा।

"हां।" राजपाल ने सिर हिलाया—"जहाज में लाइट फीयर होता

है। जहाज के मार्ग-निर्देशन, सिगनल लेने देने का महत्वपूर्ण काम

यही लाइट हासिल करता है। यह मौसम, तापमान, हवा का बहाव

और समन्दरी हादसों के आंकड़ों का भी हिसाब रखता है, ताकि रात

में, समन्दरी तूफान में या फिर बिना मौसम में जहाज को कैसे चलाया

जाये। मुसीबत के वक्त मदद मांगने का काम भी यही करता है।"

"सब किसी को अपना काम जिम्मेवारी से करना होता है।"

रघुवीर सिंह ने कहा—"एक की भी लापरवाही सबकी मेहनत पर

पानी फेर सकती है। किसी का भी काम हल्का नहीं होता।"

देवराज चौहान ने उसे देखा। कहा कुछ नहीं।

राजपाल कह जा रहा था।

"एक जगह नॉटिकल सर्वेयर की होती है। इसका काम सागर

के खास खास हिस्सों के नक्शे तैयार करना होता है, ताकि जीव

[illegible] गजपाल ने अपनी बात समाप्त की।

देवराज चौहान आश्चर्यचकित-सा उसे देखता रहा।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] "अब मरो दुःख-पीड़ा से चिल्लाओ आपसे।"

"[illegible] मेरी सहायता करोगे तो [illegible] मेरी [illegible] मरूंगा।" गजपाल [illegible]

"ये कौनसी, विधवा हुआ।"

"यह तो तीर भी पहुंचे हैं भाई हैं, [illegible] आगमने कैसे?"

"[illegible] मेरे [illegible] "मेरी [illegible] बाद भी जीवित न रखा गया है।"

"रखा गया होगा तो बन्दरगाह [illegible] हुआ।" गजपाल ने कहा।

लेकिन गजपाल और के साथ, दूसरी गाड़ी में पहले पहुंच गया।

गजपाल से विदा लेकर दोनों और से [illegible] वहां तक दौड़ पड़ी। इस वक्त दोपहर के तीन बज रहे थे। धूप सिर पर चढ़ी थी। चारों तरफ शांत समुद्र था।

"सुधीर।" देवराज चौहान बोला।

"हां।"

"चाबी तब तो समझ में आ गया। एक बात समझ में नहीं आई।" देवराज चौहान ने उसे देखा।

"कौन-सी बात?"

"जहाज की दुर्घटना [illegible] तेजा प्रतीयत कि, उधर [illegible]

[illegible]

फाड़ ही देगी।"

□□

□□

दूसरे चौहान जब मालखाने में दाखिल हुए तो उनका [illegible] था। मूर्ति पर [illegible] खड़ा था।

"मालूम किया अंतिम मालकीनी के हत्यारे कौन थे?" इंस्पेक्टर चौहान ने पूछा।

"पता करने जा रहा था कि तभी मैं अलीम खान से मुलाकात हो गई।"

"अलीम खान?"

"जी हाँ, जिसने मलबार हिल अंतिम मालकीनी के साथ किया था," मदनलाल ने कहा।

इंस्पेक्टर चौहान ने सिर हिलाया।

"अंतिम मालकीनी और मुंबई की अलीम खान से क्या दुश्मनी थी, इसका पता लगाना था," मदनलाल ने गंभीर स्वर में कहा—"मालूम हुआ कि अलीम खान फिर किसी नए आदमी से मुलाकात करनेवाले थे बन्दरगाह के पास में जानकारी मिली।"

इंस्पेक्टर चौहान की आँखें सिकुड़ीं।

"अलीम खान ने मना कर दिया कि मलबार के [illegible] था पता ही मुर्गीवाला मार्ग से चुका है, समुद्र में [illegible] है बाद, उसके [illegible] है। अलीम खान ने

[illegible] पर हत्यारा कहां है।"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सकते।"

देख रहा था।

"तुम जहाज पर गये थे। तब भी जहाज में [illegible] नहीं देख पाये" मोहनलाल बोला।

"नहीं। जहाज चलाने वाले ने स्पष्ट तौर पर मना कर दिया था। उसका कहना था कि यह खतरनाक काम है। मजबूत इरादों वाला आदमी था। उस इन्सान की बातों से स्पष्ट लग रहा था कि वह झूठ से सख्त नफरत करता है। उसके साथ काम करने के दौरान मैं समझ गया था कि कोई लालच देकर, या मानने वाला नहीं, इसी वजह से उसने दरवाजे पर ताला लगा लिया होगा।"

मोहनलाल ने सोचते हुए सिगरेट का कश लगाया।

"जो कहानी सेठ झूठा की [illegible] है, उसके अनुसार 15 दिसम्बर को जहाज को बन्दरगाह पर आना होगा। ऐसे में बन्दरगाह के अधिकारी जहाज के हर हिस्से की तलाशी लेने का हक रखते हैं और लेते भी हैं।"

दरवाजे पर खटखटाहट हुई।

"यह झूठा ही होगा। उसे लिये बिना [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] इत्मीनान [illegible] एक बार [illegible] दूर से [illegible] इत्मीनान [illegible] सके कि बोट को इत्मीनान [illegible]

सोच भरे स्वर में कह उठा।

"क्यों?"

[illegible] इत्मीनान [illegible] बोट [illegible] इत्मीनान [illegible] कि बोट इस [illegible] इत्मीनान [illegible] है [illegible] इत्मीनान [illegible] इत्मीनान [illegible] इत्मीनान चंदन ने सोचभरे स्वर में कहा - "इस बार में [illegible] एक पतवार से ज्यादा हम लोग को इत्मीनान देंगे।"

"भाव?"

"इस [illegible] पानी का पानी में बहुत चक्कर है। क्या कि" इतना कह इत्मीनान चंदन [illegible] हम [illegible] तक पहुंच सकते हैं।" कहते हुए इत्मीनान चंदन [illegible] ने [illegible] कहा- "इस में तो [illegible] पर अपने [illegible] के लिए [illegible] मांझी [illegible] रही थी [illegible] चंदन [illegible] के बल [illegible] मांझी [illegible] को [illegible] जाती होगा हमें [illegible] इत्मीनान [illegible] हाथ, [illegible] हमारा [illegible] बदौलत [illegible] सके। [illegible] कहते [illegible] होना [illegible] किसे [illegible] रस्सी [illegible] महारे [illegible] फेंककर [illegible] जहाज [illegible] पुरानी [illegible] किनारे [illegible] पर [illegible] फंसाकर [illegible] रस्सी [illegible] सहारे [illegible] पहुंचा [illegible] सके, [illegible] इन [illegible] चीजों [illegible] का [illegible] इन्तजाम [illegible] पहले [illegible] करना [illegible] होगा [illegible] हम [illegible] यहां [illegible] है [illegible] यहां [illegible] और [illegible] वक्त [illegible] बीत [illegible] गया [illegible] तो [illegible] फिर [illegible] इन्तजाम [illegible] करने [illegible] में [illegible] मुश्किल [illegible] आयेगी।"

सोहनलाल फोरन खड़ा हो गया।

"मैं एक मिनट में यह सामान लेकर आया हूं।"

"सिवाच्चा पर जाने के लिए माइलैंबर भी ले आना।" सोहनलाल ने इत्मीनान निगाह से इत्मीनान चंदन को देखा। इत्मीनान चंदन के चेहरे पर कठोर-गंभीर भाव थे।

"जहाज पर अगर कार्यरिंग की जरूरत पड़ी तो सिवाच्चा पर माइलैंबर लगा होना जरूरी है। नहीं तो तुम अगर में मांझी की आवाज के धमाके, बन्दरगाह के नए तक जा सकते हैं और ऐसे कई लोग हों, जिन्हें मांझी की आवाज की पहचान होगी। बन्दरगाह पर जाहिर है कि रात को पुलिस वालों की भी ड्यूटी होगी।"

"माइलैंबर का इन्तजाम भी हो जायेगा।"

"लगमोहन आया?"

[illegible]

महाव नम्बर 302—83

[illegible] पाल्ता है कि—।

[illegible] पहले आते तो मिल लेते। अब तो [illegible] पूछ रहे हैं मैं नहीं जानती।" उसने शान्त स्वर में [illegible]

[illegible] साथ मेरी दोस्त थी। इसका न उसकी जान से की। या मालूमी है कि किसने उसकी जान—।"

[illegible] ही अपनी बिरादरी।

[illegible] के बारे में मालूमात कर रहे हो।"

[illegible]

क्या? अपने दोस्त की मौत की खबर लेना है [illegible] जगमोहन को आशा न थी।

"हां।" जगमोहन के दांत भिंच गये।

"[illegible] ? [illegible] का मालूम कर रहा?" वो व्यंग्य से कह उठी।

[illegible] बात पर विश्वास। तुम इसका [illegible] मालूमी [illegible] चले गये "[illegible] न होता तो मैं [illegible] ? [illegible] नहीं करता।"

वो, जगमोहन को देखती रही।

"जवाब नहीं दिया तुमने?" जगमोहन बोला।

[illegible] जवाब दे सकी [illegible] और भी पूछना है या।"

"जानता गोरमाली [illegible] करके [illegible] काम कर रहा है।" जगमोहन बोला।

"और सवाल?"

"[illegible] गोरमाली ने अपने घर पर किसी को कत्ल क्यों किया। क्यों?"

"[illegible] सही जान [illegible] था।" उसने शान्त स्वर में कहा।

"बाकी सवालों का जवाब?"

"बाकी जवाब शायद मैं न बता सकूं।" उसने सोचभरे स्वर में कहा—"[illegible] से ही पूछो तो ठीक रहेगा।"

[illegible]

"[illegible]
मैं नहीं जानती। [illegible]
[illegible]
हुआ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[

[illegible]

[illegible]

[illegible]। जो कि [illegible] अपनी [illegible] [illegible] माता नहीं लगती। [illegible] [illegible] [illegible] किसी सवाल का जवाब [illegible] [illegible] बताया कि उसके [illegible] [illegible] [illegible]

निकलता चला गया।

[illegible] कोई खास ही वजह होगी। हम अभी तक इस मामले की [illegible] पर हैं, जबकि आनंदा गोस्वामी मामले की [illegible] इसके अलावा और कोई नहीं [illegible] को जानने की कोशिश [illegible] के लिये जान दी।"

"लेकिन हमें यह तो मालूम नहीं कि हमारा [illegible] है।" जगमोहन बोला। "हमारा मकसद क्या [illegible]"

देवराज चौहान मुस्कराया।

"उसी मकसद की तलाश में हम पहले पहल इस [illegible] जगह पर जाते हैं। क्योंकि मदनलाल ने मरने [illegible] का नम्बर '902' लिखा था और इस 902 में यूरा को [illegible] है अलावा और कोई खास चीज तो मुझे नजर नहीं आई और [illegible] दिखना है कि उस खास चीज के भीतर खास क्या है। जिस मतलब [illegible] पीछे छिपाया गया है।" देवराज चौहान ने सिर हिलाकर कहा।

जगमोहन ने रस्सा थामा और गाड़ी चलानी शुरू कर दी।

"मुझे यकीन है कि [illegible] इस [illegible] खास हमें अवश्य मिलेगा।"

"वैसा कोई खास बात है। इसमें शक नहीं। लेकिन वो [illegible] में मिलता है, दिखता है, या उस बारे में [illegible] इस बारे में कुछ कह पाना कठिन है।"

एक घण्टे में पहले ही सोनलाल खाना पैक करवा कर ले आया।

□□

□□

आसमान में बादल अपना भयंकर झुण्ड बनाकर, हवा के संग बह रहे थे। कभी जो झुण्ड चन्द्रमा के सामने आ जाता तो, चमकता समन्दर, गुम सा हो गया लगने लगता। जब वो टुकड़ा चन्द्रमा के आगे से हट जाता तो समन्दर फिर दूर दूर तक चमकता नजर आने लगता।

चन्द्रमा की रोशनी में कुदरत का नियम भी लागू हो रहा था। दिन में सूर्य की रोशनी में समन्दर हमेशा शान्त, जैसे बांध लिया हो,

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] साथ ही जगमोहन ने रस्सा पकड़ा और पहली ही साथ ऊपर चढ़ने लगा।

सोहनलाल ने रस्सा [illegible] बांधने लगा।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

देवराज चौहान सब [illegible] फ्लोर कर हिस्सा था।

देवराज चौहान सब [illegible] ने ऐसा कुछ भी नजर नहीं आया कि खतरे का एहसास होता। हर तरफ खामोशी और खालीपन था।

जगमोहन ऊपर आ पहुंचा।

"सब ठीक है।" जगमोहन ने पूछा।

"हां। अभी तक तो कोई खतरा नहीं आया।" देवराज चौहान ने सपाट स्वर में कहा।

"तुम्हारा क्या ख्याल है जहाज पर पहरा होगा।"

"होना तो हर हाल में चाहिये।" देवराज चौहान सतर्क स्वर में बोला।

"साफ कहते हो। इतने बड़े जहाज को रात में अकेला नहीं छोड़ा जा सकता।" जगमोहन कह उठा।

सोहनलाल भी आया।

"इस पर कोई भी नजर नहीं आ रहा।" वो बोला - "लगता है सारे लोग किसी काम से गये हैं।"

"मैं अभी आता हूं। तुम लोग रस्सा पकड़कर पीछे से नीचे उतर जाओ। जहाज में कोई खास खतरा नहीं, लेकिन सावधानी बरतना जरूरी है। इसी जहाज पर हम अपनी जान खतरे में डालकर पहुंचे हैं। इसमें से हम एक भी चीज दूसरी चीजों पर पड़ने दी। सामने से कोई खतरा और हो हम पर हमला करता पाये तो, उसे फौरन शूट कर देना क्योंकि मैं नहीं चाहता, उससे पहले वो हम पर शूट कर दे।"

[illegible]

[illegible] दिन में आकर वो [illegible] इसलिये अंधेरे में भी उस [illegible] नहीं हो रही थी।

देवराज चौहान ने कुछ कदम [illegible]

[illegible]

[illegible]

सब ठीक रहा।

[illegible]

[illegible] पिस रहा था उन्हें।

[illegible]

[illegible]

[illegible] था। [illegible]

[illegible] मे धीमा स्वर निकला।

"कोई भी खतरा नहीं आ रहा। ये भी सबसे आसान [illegible] है।" देवराज चौहान [illegible] बोला था। "कोई भी खतरा आने की सम्भावना हो सकती थी। परन्तु इस वक्त [illegible] हालात हमें स्पष्ट दिखाई [illegible] दे रहे हैं। किसी कि अब तक दिखाई दे जाना चाहिये था।"

"हो सकता है, जहाज पर किसी नशे का कोई पागल ही न हो।" जगमोहन बोला।

"पागल है।" देवराज चौहान की आवाज में खतरनाक भाव थे। उसने सिगरेट की राख बोतल पर बना रखी नकली दाढ़ी पर लगाई। उसकी आखों में फैसले के भाव आ गये थे।

देवराज चौहान आगे बढ़ा।

जगमोहन, सोहनलाल पीछे दोनों के हाथों में साईलेंसर लगी रिवाल्वरें थीं।

सीढ़ियों में खास बदलाव पाया किया तो आगे मोड़ से मुड़ गये। वो सीढ़ी थी। जिसके दोनों तरफ यात्रियों के लिये केबिन बने हुए थे।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

साहबलाल कुछ न कह सका।

"पूरा एक हादसा बना रखा है तुम ने" साहबलाल ने
कहा है कि मैं ने पहले क्यों है कि मैं अपने लिए कुछ बनाऊँ
सकती है।"

"मैं समझती हूँ कि, अगर आप इसे अपने ऊपर लिया
है तो आप को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि
इस का बोझ ही आप पर बहुत ज्यादा न हो जाए।"

साहबलाल ने दरवाजा खोला और कहा।

"अगर आप ने इस बात को ठीक से समझ लिया है तो
मैं चलता हूँ। मैं आप को यकीन दिलाता हूँ कि आप
को मेरी तरफ से कोई परेशानी नहीं होगी।"

"[illegible] ऐसा नहीं हो सकता कि इसका कहीं कोई गलत [illegible]"

[illegible]

"यह नहीं मालूम," दामोदर [illegible] "लेकिन इस बात का पक्का विश्वास है कि मालकोश ने [illegible] कि वो मालव [illegible] है। यही कारण [illegible] की जरूरत बनी।"

"[illegible] का कुछ अता-पता मालूम किया?" सोमदत्त ने दामोदर [illegible] "पता तो लगा लेंगे ही, पर यह नहीं आया कि [illegible] बात है, पहले से [illegible]।"

"[illegible] मालव में [illegible] है। [illegible] अगर [illegible] हुआ तो [illegible] [illegible] है।"

सोमदत्त [illegible] की ओर देखता रहा।

"[illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible], [illegible] के लिए। यहां भी [illegible] [illegible] [illegible]

□□

□□

मलानी।

नरेश मलानी। बूटा का सबसे खास आदमी। खलासियों का सरदार। पिछले पन्द्रह सालों से बूटा के साथ था। लम्बा कद। पतला जिस्म। सिर के बाल सामान्य से कुछ बड़े हुए। माथे पर छोटी कटी मूंछ। बदन पर अक्सर सूट पहने रहता था। लम्बा नाक। घनी भौंहें। चेहरे से निहायत ही शरीफ, परन्तु भीतर से बेहद खतरनाक लगने वाला, नरेश मलानी।

बूटा जैसे अरबपति व्यक्ति के जाने कितने काम थे। किस काम में कब क्या करना है, मलानी को खूब जबानी याद रहता। कोई भी काम भूलता नहीं था। बूटा उसकी समझदारी का कायल रहा था। पिछले पन्द्रह सालों में एक बार भी बूटा को उसके काम पर नाराज होने का मौका नहीं मिला था और मलानी का हुक्म, लगभग बूटा का ही हुक्म माना जाता था।

था। ऐसा लगता था कि [illegible] खड़ी लगा कर खींचा गया है
[illegible]

"कोई और आया?"

"आओ।"

"वे दोनों चले गये।

पास आ जाओ। मैं घायल हूं।"

"नहीं।"

इंडियाना में पहुंचा।

"मैं डी०सी०आर० में [illegible] की धीमी आवाज [illegible]

[illegible] बीस [illegible] रहा था [illegible]

[illegible] "इस कारण से वे [illegible] का बल।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] पर थी—"इस बात के [illegible]
[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]," [illegible] विश्वासभरे स्वर में कहा।

[illegible] दिया। [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]" राजवान के [illegible]
[illegible] और राजवान को "[illegible]
[illegible]
[illegible] बोला। "[illegible]
[illegible]
"[illegible]
[illegible]
"[illegible]
[illegible]
"

[illegible] रह गये।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

आवाज में अपना के भाव थे। "कुछ मालूम नहीं कहां गया है कुछ बोले।"

"मैं मालूम करता हूं।"

"ठीक है," मलानी ने धीमे स्वर में कहा - "और इस बात का जिक्र किसी से मत करना। यह जहाज पर इस तरह आई चीजें छिपाने का मामला है। खुशवंत से बूढ़ा साहब ने इस प्रकार किस्से में ..."

"न ... ही।" रणधीर ने गर्वभरे ढंग से सिर हिलाया और जान बूझ कर ढंग में बिछलता बना गया।"

मलानी की भावभरी निगाह ऑफिस हो चुकी टी0 वी0 स्क्रीन पर जा टिकी।

रणधीर अपने साथी के साथ कुछ घण्टे बाद लौटा और मलानी से बात की।

"रघुवीर सिंह मुंशी से बात हुई। उसने बताया तो वाला कि रोशन कुमार उसका रिश्तेदार नहीं था। वो खुद को उपन्यासकार कह रहा था और जहाज को भीतर से देखने के लिये कह रहा था। इसके लिये रोशन कुमार ने उसे दस हजार दिए तो वह उसे जहाज दिखाने के लिये यहां ले आया।"

"मुझे भी पूरा विश्वास था कि वो उसका रिश्तेदार नहीं होगा।" मलानी के होंठ भिंच गये।

"घोड़ा और घास यारी" पर रणधीर सिंह बोला कि रोशन कुमार ने ही, इसी जहाज को दिखाने के लिये कहा था। यानि कि रघुवीर सिंह सीधे, उसे इस जहाज पर नहीं लाया था।"

"दस हजार रुपया खर्च करके, सिर्फ जहाज को भीतर से देखना ही उसका मकसद नहीं रहा होगा।" मलानी ने बेकरार निगाहों से रणधीर को ... "दिन में वो जहाज के भीतरी रास्ते को देख ... और रात में ... के इस प्रकार हिस्से में आ पहुंचा। उनके ... में होने ... से साफ जाहिर है कि उन्हें यकीन है कि खुर्शा साहब, यहां कोई ... काम करते हैं और उसी गलत काम को मालूम ... के लिये वो यहां आये थे। क्यों, वो कौन थे, इन बातों का जवाब पाना जरूरी है।"

"इन्हें ढूंढने की कोशिश करें।"

"कोई जरूरत नहीं।" मलानी शब्दों को चबाकर बोला - "वह

[illegible]

"[illegible]" जगमोहन ने [illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]" जगमोहन [illegible] – "[illegible]

[illegible]?"

"[illegible] जब मैं इस काम पर लगा था और–।

"[illegible]

"[illegible]

[illegible] उठा।

"[illegible]"

"क्यों?"

"[illegible] दे। निकाल–।"

"[illegible] बने है। [illegible]

[illegible]

"[illegible] नहीं देगा।"

मोहनलाल ने [illegible]

"[illegible]" जगमोहन [illegible] – [illegible] साथ वसूल करूंगा।"

मोहनलाल ने [illegible]

"[illegible]"

"ये [illegible]" मोहनलाल मुस्कराया।

"समझ ले, [illegible]" जगमोहन ने जल भुनकर कहा।

[illegible]

[illegible] कि देवराज चौहान

[illegible]

[illegible] मोहनलाल बोला।

[illegible], लेकर आ। उन्हें देखना

[illegible]

[illegible] बाद में [illegible], अब पूरी तरह [illegible]

[illegible] पत्र में [illegible]

"हूं।" जगमोहन ने सिर हिलाया—"क्या [illegible]?"

"हां, अभी लाया।" कहने के साथ ही [illegible]

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगा ली।

पत्र को पूरी तरह अगरबत्ती [illegible]

"इस सिलसिले में कुछ खास होगा।"

"कुछ खास तो अभी कम से कम यह भी नहीं जाना जा सकता है कि मृत्यु के कारण के पीछे क्या हाथ है। अगर यह भी पता चल सके कि वहां क्या होता है।"

"इसके लिए जहाज पर जाना जरूरी हो गया। कोई [illegible]"

"अभी इस बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता कि जहाज पर [illegible] कि नहीं।" देवराज चौहान ने सोचपूर्ण [illegible] - "कभी कुछ ऐसा सामने न मिलने पर भी, कुछ ऐसा [illegible] जिसे हम पकड़ नहीं पाते और जिसका [illegible]"

[illegible]

"अब यह भी [illegible], पढ़ के [illegible]

"अब यह भी [illegible], [illegible] गया [illegible] कि कोई [illegible] में गया है। [illegible] जहाज [illegible] पर भी पुलिस का [illegible]"

"पुलिस को आने की जरूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि दरवाजे पर लगे [illegible] [illegible], वो [illegible] हम लोग भगा गये थे। [illegible] [illegible], रात को [illegible], कोई भी इस काम में हमारी [illegible]

[illegible] बड़ी आदमी को एक अजीब गुस्से भरे [illegible] ने फिर चिल्लाकर कहा—"तुम्हारी ये हिम्मत कैसे हुई कि तुम मेरे [illegible] में मुझसे बिना आज्ञा लिए घुसे। तुम्हें मालूम है, मेरे [illegible] की आज्ञा के बिना [illegible] नहीं मार सकता।"

बड़ी आदमी जहाज पर आया था और अब वह उस हिस्से में खड़ा था जो कैदियों का था। कैदी ने हमारी हरकतों को अपने [illegible] कैद किया होगा। शायद अब तक उन लोगों ने कैसेट में दर्ज हमारी [illegible] का [illegible] लिया हो और सरकार को [illegible] कि हम [illegible] हैं।

"मेरे [illegible] हमारी सरकार [illegible] कि हम [illegible] हैं।"

"तो तो भी आप इस तरह [illegible] पड़ता।" देवराज चौहान का स्वर शांत था।

"जहाज पर आने और उसे [illegible] के बाद भी हमें कुछ नहीं पता कि मालूम होता हुआ पता क्या करना है।" जगमोहन ने देवराज चौहान को देखा।

"मालिक इस जहाज को और वहां के इन्तजामों को देखने के बाद इस बात को ना चुकाने हो गया कि जहाज के उस प्राईवेट हिस्से का चक्कर कोई खास गैरकानूनी काम होता है।" देवराज चौहान की आवाज में दृढ़ता थी—"और उस काम को बहुत बड़ी सावधानी से करता है।"

[illegible] टी०वी०, वी०सी०आर० ले आया।

वो आठ वीडियो कैसेट थीं, जिन्हें जहाज के प्राईवेट हिस्से में [illegible], मुखड़ा कंट्रोल रूम में वे उठाकर लाये थे। वी०सी०आर० पर लगाकर जगमोहन एक-एक कैसेट को देखा।

परन्तु सब की सब कैसेट खाली थीं।

"यह क्या। इन कैसेटों में तो किसी का भी चेहरा नहीं है।" जगमोहन के होंठों से निकला—"हर कैसेट में जहाज के उस प्राईवेट हिस्से के दृश्य हैं। कहीं तो वो गैलरी है, जहां से हम भीतर प्रवेश हुए थे। कहीं खूबसूरत बैडरूम है। तो कहीं ड्राईंगरूम। या फिर छोटे छोटे केबिन। खेलने के लिए बड़ा सा हाल। ऐसी और भी कई जगह। लेकिन एक भी इन्सान का चेहरा कैसेटों में दर्ज नहीं है। कितनी अजीब बात है—।"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible] आप कौन से नम्बर है और क्या आप मेरी [illegible] तो मैं इस मदद की [illegible] दूंगा।" देवराज चौहान ने कहा। "[illegible] किसी का [illegible] दे सकती हो, तो [illegible] मैं आप के [illegible] से [illegible]

यह सुनते ही नदीम खान चौंक सा गया।

"मेरा नम्बर है देने आये।"

"हां।"

"वो ज्यादा हुआ तो?"

"[illegible] हमारे [illegible] है आपने [illegible] में, कौन [illegible] देवराज चौहान मुस्कराया।

"थैंक्यू सर।" नदीम खान चौंक बोला।

"मैं चुकता कर दूंगा।"

"तुम पर पांच हजार भी बहुत बड़ा [illegible]" नदीम खान ऐसे मुंह बनाने पर मजबूर हो गया।

"मतलब कि कल तीस हजार हुआ।"

"हां।"

"ठीक है। मैं तीस हजार आपको दे दूंगा। आप मेरा [illegible] कर देना"" ।"

"कब देंगे आप?"

"जब आप नीलांगनी में दूसरी मंजिल पर बने एयरकंडीशन रेस्टोरेंट, बुक करवा देंगे।"

"कौन कौन से नम्बर वाला करवाना चाहेंगे?" नदीम खान सिर हिलाकर बोला।

"नम्बर का तो मुझे ध्यान नहीं है। आप ऐसा करें कि दूसरी मंजिल के सारे का बुकिंग चार्ट दिखा दें तो मैं अपने बता सकता हूं कि मुझे कौन कौन से नम्बर चाहिये।" देवराज चौहान ने कहा।

"मामूली बात है। अभी लीजिये।"

"कब—?"

"अभी। मैं अपने बुकिंग चार्ट दिखाता हूं।"

"किसी को कहा करवाना कि मुझे चार्ट वहीं दिखा दे—।"

"चिन्ता मत करो। कोई कुछ नहीं पूछेगा। तुम कैफेटेरिया में बैठना। मैं चार्ट लेकर वहीं आता हूं।"

देवी सदन बन्दरगाह की दूसरी ओर बढ़ गये।

थोड़ा पहुंचकर देवराज चौहान कैफेटेरिया में आ बैठा और नदीम

खान दूसरी तरफ चला गया और एक सिगरेट बाद में ड्रेसिंग में पहना। हाथ में वह पहले से था। उसके सामने दूसरी पर बैठा हुआ नसीम ने कलाई घड़ी की ओर देखा।

"यह हमारा मौजूदा के पास्ते का आखिरी है। इसे समाप्त करते ही कॉफिन बुक करा लो।"

देवराज चौहान ने सिर हिलाया। खान ने नम्बर मिलाए हुए थे। सम्बन्धी, यानि कि उसके भी बॉस कैसे ही रहे होंगे पर थे। नक्शे का आधा हिस्सा खान के हाथ पर था।

"इस जगह पर अभी स्याही का धब्बा क्यों है?" नक्शे पर भी देवराज चौहान ने पूछा।

"यह जहाज के मालिक का प्राइवेट हिस्सा है। यह जगह यात्रियों के लिए नहीं है," नसीम खान बोला।

देवराज चौहान ने सिर हिलाया फिर धनराशि के आंकड़े देखने के बाद बोला।

"मुझे चौदह पन्द्रह और सोलह नम्बर केबिन चाहिए।"

नसीम खान ने नक्शा अपनी तरफ घुमाया। डेटा नोट करने फिर बोला।

"चौदह सोलह नम्बर केबिन बुक हो चुके हैं। पन्द्रह नम्बर मिल सकता है।"

"चौदह-सोलह जिसे दिए हैं, उसे कैंसिल कर दो।" देवराज चौहान बोला।

"ये नहीं हो सकता।" नसीम खान ने इन्कार में सिर हिलाया— "हो चुकी बुकिंग को कैंसिल करने की ठोस वजह होनी चाहिए। यह वजह पर्याप्त नहीं है कि तुम मेरा तीस हजार का उधार चुकता कर रहे हो। आखिर मुझे भी अपने अधिकारी को जवाब देना पड़ेगा। वरना भारी परेशानी खड़ी हो जायेगी।"

देवराज चौहान नक्शे को देखता रहा।

"कोई और केबिन पसन्द कर लो।"

देवराज चौहान ने जहाज की दूसरी मंजिल का नक्शा चैक करने के बाद दो अन्य केबिनों का चुनाव किया। जिनके तीन और पांच नम्बर थे।

"पन्द्रह, तीन और पांच नम्बर केबिन किस नाम से बुक करूं?" नसीम खान ने पूछा।

देवराज चौहान ने बताया।

"तुम्हारी तैयारी कैसी है। परसों सुबह तक तुम्हारी तैयारी पूरी हो जानी चाहिए।"

"सब कुछ है।"

"ठीक है। तुम्हारी ड्रेस कहाँ है। मेरा मतलब है कि तुम्हारी ड्रेस कैसी है। इस मिशन में तुम्हें कुछ [illegible] यही ड्रेस पहननी है। नईम खान ने अपने पास रखे कागजों की ओर इशारा किया।

देवराज चौहान ने सिर हिलाया। फिर कुछ कहा।

नईम खान चला गया।

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाई और कश लेने लगा।

नईम खान पन्द्रह मिनट बाद वापस लौटा। उसके हाथ में कैमिकल था। देवराज चौहान ने उसे देखा तो पूछा।

"यह क्या है?"

नईम खान के पन्द्रह तीन और पांच नम्बर इंजेक्शन की बूंदें गिरी।

"अगले परसों दोपहर को ठीक तीन बजे तुम्हारे शरीर पर लगाना होगा, कम से कम दो घण्टे पहले यह लगाना पड़ेगा। परसों और सामान की जांच में तुम्हारी मदद करूंगा।"

देवराज चौहान ने सिर हिलाया और [illegible]

नईम खान भी उठा।

"कोई खास बात है इन नम्बरों की जो इन्हें [illegible] कहा है?" नईम खान ने पूछा।

"हां, मैं अब भी कहता हूं तो मेरा नम्बर वन है। नम्बर आदमी पसन्द है।"

"[illegible]"

"हो सकता है। लेकिन मेरा आदमी इस आदमी पर [illegible] मैं [illegible]। तुम अपना काम शुरू करो। मैं भी अपनी तैयारी शुरू करता हूं।"

□□

□□

सही किसान हुआ।

[illegible] था। [illegible] से आया। उसकी [illegible] के लिए [illegible]। [illegible] के घर नाम [illegible] और मुम्बई [illegible] [illegible] पर [illegible] गया। घर आने से पहले [illegible] पर ले [illegible] है। आज मुम्बई में कई [illegible] ड्रेस [illegible] के [illegible] है। [illegible] मुंह [illegible] था कि [illegible] है।

जगमोहन गहरी सांस लेकर रह गया।

"जो भी हो, जहाज पर हम अपनी मनमानी नहीं कर सकते।"

"क्यों?"

"बूटा का जो जहाज है। मर्चेन्ट के दौरान बूटा भी वहां होगा। अपने प्राईवेट हिस्से में होगा और अब तक उसे मालूम हो गया होगा कि कोई ताला खोलकर, उसकी प्राईवेट जगह में आया है। हमारा चेहरा भी वीडियो फिल्म में उसने देख लिए होंगे। वह ये इस बात की पूरा सख्त पहरा रखेगा, जब कि हम भीतर जाने की सोच रहे हैं।"

सोहनलाल ने देवराज चौहान को देखा।

"यह तो अब देवराज चौहान ही बताएगा कि इसने क्या सोच रखा है कि बूटा के प्राईवेट हिस्से में, उसकी निगाहों में बचकर कैसे प्रवेश किया जा सकता है।" सोहनलाल का स्वर गम्भीर था।

देवराज चौहान बराबर उन दोनों को देख रहा था।

"इस बात का जवाब मैं जहाज पर पहुंचकर ही दूंगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"अब क्यों नहीं?"

"कुछ बातें मौके पर बनाई जाती हैं। वैसे भी मैं अभी पक्के नतीजे पर नहीं पहुंच पाया हूं कि किस तरह बूटा के उस प्राईवेट हिस्से पर पहुंचना है। और कुछ भी करने से पहले, जहाज पर अनिता गोस्वामी से मुलाकात करूंगा। हो सकता है कि उसकी बातों से भी हमें अपने काम में सहायता मिले।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

सोहनलाल ने गोली वाली सिगरेट सुलगाई।

कुर्सी पर बैठे बैठे पुश्त से सिर टिकाकर आंखें बंद कर लीं जगमोहन ने।

"जो-जो सामान साथ में ले जाना है, उसके बारे में सुन लो।" देवराज चौहान ने सोहनलाल से कहा।

"ये आठों वीडियो कैसेट तुमने जहाज पर ले जानी हैं।"

"वापस—।" सोहनलाल अजीब से स्वर में कह उठा।

"हां।"

"लेकिन इनका इस्तेमाल क्या है? ये तो खाली हैं। बूटा के प्राईवेट हिस्से की रिकॉर्डिंग है। जिनमें कोई इन्सान नजर नहीं—।"

"ये बाद की बात है कि इनका इस्तेमाल क्या है।" देवराज चौहान ने बात काटकर कहा—"तुमने इन कैसेटों को जहाज पर ले

[illegible]

"ठीक है।"

[illegible]

देवराज चौहान ने कहा।

"[illegible]"

"हां।"

"[illegible]" सोहनलाल ने कहा।

"कोई शक नहीं करेगा। तुम्हारी आदत है जिन्न रखने की। पागलपन की हद तक तुम पर जिन्न देखने का भूत सवार रहता है इसलिए वी०सी०आर० और टी०वी० तुम साथ रखते हो। किसी को क्या एतराज हो सकता है। साथ में कुछ कैसेट जिन्नों की भी ले लेना।"

"टी०वी० तो जहाज के केबिन में भी होगा।"

"होने दो। तुम अपना ले जा रहे हो। किसी को क्या एतराज हो सकता है।"

"ठीक है। मैं वी०सी०आर०, टी०वी०, कैसेट जहाज पर ले जाता हूं। लेकिन इनका इस्तेमाल क्या होगा?"

"अगर मैं ठीक सोच रहा हूं तो इसका इस्तेमाल बहुत बढ़िया होगा।" देवराज चौहान मुस्कराया।

"तुम क्या सोच रहे हो?"

"इस बारे में जहाज पर पहुंचने के बाद ही बात करूंगा।"

सोहनलाल समझ गया कि देवराज चौहान के मस्तिष्क में कोई योजना आ चुकी है।

"[illegible] बीस फीट लम्बी टी०वी० स्क्रीन और साथ में [illegible]" सोहनलाल ने सामान्य से स्वर में कहा।

"और इन [illegible] सारी की सारी व्यवस्था आ जाएगी।"

"[illegible]" देवराज चौहान ने हाथ झटक दिया।

"हां। साथ में कुछ, जिससे कि [illegible]

है। कोई ऐसा तरीका भी हो, जिससे कि पीने वाला, बेहोश होने से पहले को उधेड़ा जा सके।" देवराज चौहान ने सोचपूर्ण स्वर में कहा।

"और—?"

"अभी तो इन सब बातों का इन्तजाम करो। बाद में देखा

में आया तो बता दूंगा।"

सोहनलाल सिर हिलाकर रह गया।

"मुझे मालूम कि तुम्हारे दिमाग में कई योजना आ चुकी

है।" जगमोहन ने कहा।

"हां।"

"क्या?"

"इस बारे में जहाज पर ही बात करेंगे। अभी यहां ना ही

कभी है। उनके बारे में सोच रहा हूं।"

"जहाज कब बन्दरगाह से रवाना होगा?"

"कल।" देवराज चौहान ने कहा—"कल दिन में बारह के

आसपास अलग-अलग हमें बन्दरगाह पर पहुंचना है।"

□□

□□

जहाज का लंगर उठाया जा चुका था। सब यात्री जहाज में पहुंच चुके थे। कुछ अपने केबिन में थे तो कुछ धूप में ही डेक पर खड़े थे।

जहाज का भोंपू (सायरन) कई बार बज चुका था। केबिनों में लगे छोटे-छोटे स्पीकरों से मध्यम-सी आवाज निकलकर, इस बात की सूचना दे रही थी कि जहाज रवाना होने वाला है। डेक पर लगे स्पीकर, वहां खड़े यात्रियों को भी इस बात की सूचना दे रहे थे।

और फिर धीरे-धीरे जहाज समन्दर की लहरों पर रेंगने लगा। बन्दरगाह धीरे-धीरे दूर होने लगा। भोंपू बार-बार बज रहा था। धीरे-धीरे भोंपू बजना बंद हो गया। जहाज पन्द्रह मिनट में ही खुले समन्दर की लहरों पर रफ्तार के साथ दौड़ना शुरू हो चुका था और रफ्तार तेज बढ़ती जा रही थी।

शाम के चार बज रहे थे।

जहाज में अधिकतर यात्री अपने अपने केबिनों में थे। सोहनलाल के नाम से पन्द्रह नम्बर केबिन बुक थी। पारसपाल

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"राजन।" बेटर ने कहा।
देवराज चौहान ने पचास का नोट निकालकर उसे थमाया।
"इसकी क्या जरूरत थी सर।"
देवराज चौहान ने मुस्कराकर एक और सौ का नोट निकाला और उसकी तरफ बढ़ाया।
"और क्या सेवा करूं सर।" बेटर राजन नोट थामते हुए बोला।
"सेवा यही बस हुआ।" देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगा ली और बोला - "जाने वाले को कौन जेब में डाल लेना चाहिये।"
बेटर ने तुरन्त नोटों को जेब में डाला।
"जाओ।"
बेटर चला गया।
देवराज चौहान ने कॉफी उठाई और सोचभरे ढंग से एक-एक घूंट पीने, कॉफी समाप्त की फिर उठकर केबिन का दरवाजा बंद करके खिड़की चढ़ाई और बैड पर रखा सूटकेस खोलकर उसमें पड़ा सारा सामान निकाला। उसके बाद सूटकेस के तले की परत उठाई तो नीचे साइलैंसर लगे दो रिवॉल्वर और फालतू राऊण्ड नजर आये। देवराज चौहान ने दोनों रिवॉल्वर उठाकर बाहर रखे फिर तले को वैसे ही फिट किया और सारा सामान वापस रखकर सूटकेस बंद किया फिर एक रिवॉल्वर तकिये के नीचे रखा। दूसरा उठाकर कपड़ों में छिपाया और बाहर निकलकर, दरवाजा बंद करने के पश्चात् वो आगे बढ़ा और चार नम्बर केबिन पार करके तीन नम्बर के सामने ठिठका।
दरवाजा भीतर से बंद था।
देवराज चौहान के थपथपाने पर जगमोहन ने दरवाजा खोला। देवराज चौहान ने भीतर प्रवेश किया। दरवाजा पुनः बन्द हो गया। देवराज चौहान ने रिवॉल्वर निकालकर उसे दी।
"इसे रख लो।"
जगमोहन ने रिवॉल्वर लेकर, अपने कपड़ों में रख ली।
देवराज चौहान कुर्सी पर बैठ चुका था।
"अब तक तो सब ठीक रहा -।" जगमोहन ने कहा।
"हां।"
"आगे का क्या प्रोग्राम है? तुम्हारी क्या योजना है? इस के इस प्राईवेट हिस्से में कैसे प्रवेश करना है?"
"आज रात दस बजे अभिनेता गोस्वामी से मिलना है।" देवराज चौहान ने धीमे स्वर में कहा - "उसके बाद ही इस बारे में बात करेंगे।"

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कोशिश तो वे जारी रखेंगे।"

सावधान रहना।"

ठीक है।"

[illegible] [illegible] [illegible] [

...ाली की साड़ी जो बने अपने रंग पर होगी। इस वक्त यहां ...र के लिए जहाज रोका जायेगा। जहाज क्या रुका? कोई इस बात ...ी परवाह भी नहीं करता। वैसे हम यहां तक कितने बजे पहुंचेंगे?"

"करीब यही दो बजे का वक्त होगा।"

"ओके है। वहां पहुंचते ही जहाज रोक लेना और माल रिसीव कर लेना।" कहने के साथ ही वृंदा उठ खड़ा हुआ। चेहरे पर शांत भाव थे "वैशाली कहां है?"

"जी यहीं, अपने कैबिन में।"

"भेजो उसे।"

मलाली चला गया।

पांच मिनट बाद ही सजी संवरी वैशाली ने भीतर कदम रखा। वैशाली कोई और नहीं, वो ही थी, जिसमें जगमोहन मिला था। तो भोलता गोस्वामी की मौसी बनी बैठी थी, इस वक्त उसके खूबसूरती को चार चांद लग रहे थे।

"हाय डार्लिंग -।" वैशाली ने जान लेने वाले अंदाज में कहा।

उसे देखते ही वृंदा के चेहरे पर मीठी मुस्कान फैल गई।

□□

□□

जहाज के ग्राऊंड फ्लोर पर स्थित पार्टी हाल इतना बड़ा था कि वहां छः सौ व्यक्तियों के बैठने का इन्तजाम था। करीब दर्जन भर टेबल थीं। हर टेबल के गिर्द चार कुर्सियां थीं। एक तरफ बड़ा सा स्टेज बना हुआ था। जो इस वक्त रोशनियों से चमक रहा था।

छः सात सौ लोगों के खड़े होने का इन्तजाम था। वहां वेटरों की संख्या भी काफी थी।

उस हॉल में आने जाने के कुल दरवाजे थे।

एक तरफ करीब सौ फीट से ज्यादा लम्बा बार काउन्टर था। बार काउन्टर के पीछे करीब पन्द्रह बार टेण्डर सर्विस के लिए मौजूद थे। टेबल पूरी नहीं भरी थीं। फिर भी वहां तीन साढ़े तीन सौ के लगभग लोग मौजूद थे। लोगों की बातें करने-हंसने और ठहाकों की आवाजें वहां गूंज रही थीं।

स्टेज पर डांस शुरू हो गया था। एक खूबसूरत लड़की, चार अन्य लड़कियों के साथ डांस कर रही थी। उसके शरीर पर नाममात्र के ही कपड़े थे। कोई उसकी तरफ ध्यान दे रहा था या कोई अपनी बातों में व्यस्त था। कॉकटेल पार्टी अभी शुरू नहीं हुई थी।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अदालत सतर्क गया।

किसी ने विक्रम से मोहनलाल को पहचानने और फँसाने में लगाई, तब वह सतर्क-सा विक्रम ने दिखाए हुए दृश्य से यह था कि कोई खतरा है। सतर्कता से काम लेने पर बल दिया और उस दरवाजे की तरफ बढ़ गया जिधर अदालत थी।

दरवाजा खोलने से पहले उसने विक्रम को आगे

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

चार ओसस्टैट दो।

मलानी ने उसे देखा।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] समझ नहीं आता कि तुम
[illegible]

[illegible] वैशाली तीखे स्वर में कह
[illegible] "हम पहाड़ के [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

मलानी चुप!

[illegible]

"मैं उसे जिन्दा पकड़ना—।"

[illegible]

नहीं होनी चाहिये।"

"इस बात का ध्यान रखूंगा सर।"

"जिस बात का ध्यान, तुम्हें बिना [illegible] रखना चाहिये, वो ध्यान तुम पर हमला करने वाले का नहीं। अपना रखो।" ब्रेगा ने सिर हिलाकर धीमे स्वर में कहा—"मलानी को दोस्त बनाने में पहले मलानी ने किसी जहाज के बारे में बता दिया था। किसी खत्म करने के लिए उसने आदमी भेजे थे। वो भी तुम्हारे हाथ नहीं आया। नहीं मलानी। ये सब नहीं चलने वाला।"

"मैं अपनी गलतियों को सुधार लूंगा।"

"हम जानते हैं जहाज पर कुछ भी गलत होना, हमारे हक में नहीं होगा। किसी की भी जान का क्या अभाव देंगे कि उसे किसने मारा। उसका त्याग कौन है इस बात की छानबीन हम किसी की निगाह हमारी हरकतों पर पड़ गई तो हमें मिशन बूरा हो गया, हो गया मरा काम।" ब्रेगा की आवाज में तीखापन आ गया था "मुझे शिकायत का मौका मत दो। जाओ, माल शिफ्ट करने का वक्त हो रहा है। जहाज को ज्यादा देर मत रोकना। काम जल्दी निपटाना।"

मलानी फौरन बाहर निकल गया।

तभी वेशाली ने बाहर कदम रखा।

[illegible]

करते।" दूत के मरने पर बल पर

[illegible]

"लड़के का क्या कर रहे हो?"

[illegible]

"ये क्या है?"

"लड़के कैसे करेंगे?"

[illegible]

[illegible]

"लड़का है।"

"लड़के कैसे करेंगे?"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

उसने हुए बोला।

सेंक की।

"वैशाली की आग सिकुड़ो।

बापरवाही से पूछा।

"आ आ, बाहर घूमने जाना है आज पूरी सर्दी हवा का मजा लेंगे।"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] हुआ।

[illegible] होगा कि आठ हुई।

[illegible]

[illegible] मेहरा इस हद तक स्पष्ट नजर

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] "[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"

सी। मैं जानती थी कि जो होगा है। और इस बात का दिन कभी देवराज भी नहीं करेगा। अभी दो दिन ही [illegible] में पड़े मोबाइल फोन को देख रही। मलानी ने फोन पर बात की, दूसरी तरफ कुछ था।"

अनिता गोस्वामी दो पल के लिए खामोश हुई।

देवराज चौहान की निगाह उस पर थी।

"मलानी ने कुछ को बताया कि इस [illegible] है। बहुत देर बात करने के बाद मलानी ने फोन बंद करके मेज पर रखा और सिगरेट सुलगा कर मुझे कहा कि यह जहाज पर ही आधे घण्टे का काम है। मुझे उस [illegible] में जाकर दो घण्टे बैडरूम में बंद रहना था। मैं तो बैडरूम देख चुकी थी और वहां ऐसा कुछ नहीं था कि किसी काम में आधा घण्टा लगे। इस विषय पर मैंने अपनी जगह से उठी और बैडरूम के दरवाजे के पास पहुंचकर ही दरवाजा खोला तो खुल गया। मैं एक बार फिर बैडरूम में आ गई। मन की बेचैनी [illegible] खुबसूरत था और है भी।"

"कुछ के इस प्राइवेट विमान के [illegible] है। तुम आगे बात करो।"

"तुमने वो जगह देखी [illegible]" अनिता गोस्वामी के होंठों से निकला।

"तीन दिन पहले, जब मैं [illegible] देखा था।"

"ओह—" अनिता गोस्वामी ने समझने वाले ढंग में सिर हिलाया "खैर, तो मैंने बैडरूम में आकर देखा तो वो नहीं था। मलानी वहां भी नहीं था। मैंने सारा बैडरूम छान मारा, जो आधा घंटा लगा। वहां से बाहर जाने का अन्य कोई रास्ता नजर नहीं आया। दरवाजा भी कोई नजर नहीं आया। हैरान परेशान सी मैं वापस हाल में आ गई। मेरे पास मलानी की वापसी के इन्तजार के अलावा और कोई रास्ता नहीं था। साथ ही सोच भी रही थी कि आखिर वो बंद कमरे में से कहां चला गया।"

देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ चुकी थीं।

"इसके बाद मलानी कहां से वापस आया।" देवराज चौहान ने पूछा।

"उसी बैडरूम से। एक घण्टे बाद उसकी बाहें और मुंह भीगे हुए थे। सिर के बाल भी बिखरे हुए थे। स्पष्ट नजर आ रहा था कि

[illegible] मुझे देखकर मुस्कराया और [illegible] से बाहर निकल आया हूं। कहकर होंठ से [illegible] [illegible] [illegible]

"मैं तुम्हें आने से नहीं रोकूंगा। लेकिन यही बात समझा लो तुम्हें आना होगा। सीन में चलो, वहां बैठकर बातें करते हैं।" कहने के साथ ही मलानी ने उसकी बांह पकड़ी और दूसरे कमरे में ले गया। उसे सोफे पर बिठाया और खुद भी सामने बैठ गया।

अंजना गोस्वामी भी दरवाजे पर मलानी को देख आ गयी थी। मलानी ने सांकेतिक भाषा में इशारा किया और चुप से बात की।

"सर! सामान आ गया है।"

"गुड। तुम वहीं पर ही रहना, अभी मैं भी आ रहा हूं। मैं दो घण्टे तक सामान न लाने के लिए आदमी भेज रहा हूं।" चुप की भाषा मलानी के हाथों में थी।

मलानी ने फोन बंद करके जेब में रखा फिर उसे देखा।

"अब बोलो। तुम क्या कह रही थीं," मलानी का चेहरा गम्भीर ही रहा।

"मैं कुछ नहीं कहना चाहती। मैं यहां से जाना चाहती हूं।" अंजना गोस्वामी ने दांत भींचकर कहा।

"इसलिये कि मैं गलत काम करता हूं।"

"हां। तुम—।"

"यह काम मैं नहीं चुप करता है। वो हथियारों का बहुत बड़ा सौदागर है। कभी पाकिस्तान में हथियार आते हैं तो कभी चीन और अमेरिका से। और यह सारा चुप से ही काम आता है। कोई नहीं जानता कि पाकिस्तान में हथियारों के सबसे बड़ा सौदागर है चुप। कोई जान भी जाये तो उसके खिलाफ सबूत नहीं मिल सकता।"

"और तुम हथियारों के इस बड़े सौदागर के खास आदमी हो तुम—।"

"मैं कुछ भी नहीं हूं।" मलानी गम्भीर स्वर में कह उठा—"पहले साथी मैं चुप के साथ हूं। बनते बनते इसका खास आदमी बनता चला गया। मुझे गलत मत समझो। मैं—।"

"सब कुछ सामने है और तुम कहते हो कि मैं तुम्हें गलत न समझूं। सॉरी मलानी, ये हमारी आखिरी मुलाकात है। आज के बाद कभी मुझसे मिलने की कोशिश मत करना।"

"ये सम्भव नहीं। मैं तुमसे दिल से प्यार करता हूं।"

"तो क्या मेरे साथ जबर्दस्ती करोगे," अंजना गोस्वामी के दांत भिंच गये—"अगर करते हो तो मुझे हैरानी नहीं होगी, क्योंकि तुम्हारा असल रूप देख चुकी हूं मैं। तुम कुछ भी कर सकते हो।"

मलानी ने पैग बनाया। घूंट भरा फिर शांत स्वर में बोला।

"प्यार में जबर्दस्ती नहीं होती अनिता, मैं तुमसे शादी करना...।"

"ये अब नहीं हो सकता। तुम जो काम करते हो, वो छोड़ोगे तो तभी हमारी शादी होगी।"

"इस काम में जो एक बार आ जाते तो बाहर नहीं निकल सकता। बूरा को इस बात का अहसास भी हो गया कि मैंने ऐसा कुछ सोचा है तो वो मुझे खत्म करवा देगा। बूरा की ताकत से तुम वाकिफ नहीं हो।"

"तो मैंने तुम्हें कब कहा है बूरा को छोड़ो।" अनिता गोस्वामी कड़े स्वर में कह उठी "मैंने तो कहा है कि हम दोनों शादी नहीं कर सकते। भविष्य में मुझसे मिलने की कोशिश मत करना।"

मलानी लोभभरी दृष्टि से घूंट भरता रहा।

"अगर मैं बूरा का साथ छोड़ दूं, यह काम छोड़ दूं तो तब तुम्हें मेरे से शादी करने में कोई एतराज है?"

"तब कोई एतराज नहीं।"

"ठीक है। मैं कोशिश करूंगा कि बूरा से अलग हो सकूं। हो सकता है इसमें साल छः महीने का वक्त लग जाये।"

"मैं इन्तजार कर सकती हूं। लेकिन उससे पहले तुम मुझसे मिलने की कोशिश नहीं करोगे।" कहने के साथ ही वो उठ खड़ी हुई "मुझे बन्दरगाह तक पहुंचा दो।"

मलानी ने उसे देखा और शांत स्वर में कहा।

"बूरा के आदमी आने वाले हैं। इस वक्त मैं जहाज छोड़कर नहीं जा सकता। लेकिन बोट जाना, तुम्हें बन्दरगाह तक छोड़ आता हूं।" मलानी उठ खड़ा हुआ - यहां जो भी तुमने देखा है, इसका जिक्र किसी से मत करना। बात खुली तो हम दोनों के लिये खतरा हो सकता है।"

इतना बताने के बाद अनिता गोस्वामी ठिठकी।

दवराज चौहान की निगाह बराबर, अनिता गोस्वामी पर थी।

"मलानी ने ही बातों के दौरान मुझे बताया था कि इस बार जब जहाज सिंगापुर के लिये रवाना होगा तो रास्ते में पाकिस्तान द्वारा भेजी गई हथियारों की बहुत बड़ी खेप, बीच समन्दर में ही जहाज पर, बूरा रिसीव करेगा और उस खेप को अपने आदमियों द्वारा, मुम्बई रवाना कर देगा। और मैं नहीं चाहती थी कि हथियार हिन्दुस्तान में पहुंचे। क्योंकि -।"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अंजिता गोस्वामी ठिठकी।

...ते ही मनवती समझ गया कि

...पर रह गई। ...पांडव के घर पहुंच गई

...जहाज नम्बर 302 – 155

[illegible]

देवराज चंदन ने कहा लिया।

[illegible]

[illegible] हिम्मत, जो कि उसके कपड़ों पर [illegible] है, जिसके कारण वो आसान से [illegible]"

[illegible] और सिर्फ वह का दो।

"[illegible]"

[illegible]

इसी - "इसी के कहने पर, इसके आदमियों ने तुम्हारे दोस्त महादेव
को मारा था। तुमने अपने दोस्त की मौत का बदला कहीं नहीं
लिया। देक पर कोई नहीं था, मौसी को मैं समझा लूंगी। इतना
बड़ा मौका तुमने हाथों से गवां दिया।"

देवराज चौहान ने शांत भाव से सिगरेट सुलगाई।

"दुश्मन की मौत का बदला तब आ गया था जब गाड़ी चलाने की
हिम्मत नहीं।" वो तीखे स्वर में बोली।

"बदला जहाज पर ही है। जान बाकी नहीं।" देवराज चौहान ने
शांत स्वर में कहा।

"क्या मतलब?"

"अगर बूटा को अभी खत्म कर देता तो पुलिस कराड
(हाथ नहीं आयेगे।"

"मैं समझी नहीं।" आनंदा गायकवाड़ को आश्चर्य में उलझन
हो गई।

देवराज चौहान उठ खड़ा हुआ।

आनंदा गायकवाड़ भी उठी।

"बूटा बचने वाला नहीं। यह सही सिद्धांत की अपनाई
गयी है।" देवराज चौहान ने सपाट स्वर में कहा- "पुलिस कराड
जहाज पर सभी आदमी, सब बूटा जिंदा नहीं चाहते। बूटा को खत्म करने के साथ-साथ
अगर पुलिस कराड भी हाथ से गये तो केस हल हो जाएगा।"

"समझी। लेकिन खतरा यह है कि बूटा जिंदा रहा तो
उस पर हाथ डालना आसान नहीं। वो जेल में भी रहकर
अपने आदमियों से काम करवा सकता है।"

देवराज चौहान मुस्कराया।

आनंदा गायकवाड़ के [illegible]
लगा जैसे [illegible]
हो गया। देवराज चौहान की इस बात से [illegible]
रहा है।"

देवराज चौहान के माथे पर [illegible]
"यहां-वहां फोन करके [illegible]
लेगा। उसी गुस्से में [illegible]
"सभी जहाज रुकने जा रहे हैं।"

देवराज चौहान बैठा में फोन [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

देकर कहा।

"आपकी ही उम्र का होगा।"

"आपकी ही उम्र का होगा।" बूढ़ा ने उसकी बात का समर्थन करते हुए कहा। "मुझे तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं हो रहा है। मछली तो मुझे ही खानी है। मछली ही मुझे खा जाएगी।"

"आप ठीक कह रहे हैं।"

"तुम्हारे पास कितने पैसे हैं?"

"दो रुपये।"

है। कर लेना इस काम को।"

□□

□□

"अभी नहीं।" देवराज चौहान ने कहा।

"अभी नहीं।" देवराज चौहान ने कहा।

"आओ।" मोहनलाल ने कहा।

"आओ।" मोहनलाल ने कहा।

"आओ।" मोहनलाल

भीतर आ सकता है।"

इस तरह भीतर आएगा?

इस बात पर कान लगाना होगा। दरवाजा इस तरह बंद होना चाहिए कि हम में से कम से कम दो व्यक्ति उसके सामने से हट सकें। इस दरवाजे को खोलने के बाद हमें बाथरूम के बिल्कुल सामने आकर ई.एम.ओ.आर. में चलने वाले पंखे पर नजर रखनी होगी। तब भीतर प्रवेश करके दरवाजा भीतर से बंद कर लेने के बाद ही हम भीतर आकर हमारे लिये सुरक्षित न होने का इंतजाम कर सकते हैं।" योगेश ने गम्भीर स्वर में कहा—"यह है भीतर प्रवेश करने की योजना। समय पड़ने पर इसमें बदल-बदल भी हो सकता है।"

कोई कुछ न बोला।

"सोहनलाल—!"

"हां।"

"तुम केबिन के पीछे वाली दीवार को साढ़े सात फीट ऊंचे

"तुमने बृजा को क्या दिया है तुमने अनिता मेहरानी को

मलानी का चेहरा कठोर हो गया :

"यह सब सुन्दर ने बृजा को बताया ?"

"हां।"

पर थे।

मलानी, बृजा से मिला। -

बृजा अपने केबिन में [illegible] हुआ पेग से पूरा भर रहा था।

"आओ मलानी," बृजा [illegible] गया होगा ?"

"जी हां। सिगनल मिल ही, हेलिकाप्टर [illegible] में पकड़ ली। मेरे ख्याल से अब तक [illegible] सभाल भी लिया होगा।' मलानी ने प्रसन्न [illegible]

"गुड। तुम हर काम बहुत अच्छे ढंग से [illegible] तुम्हारे न होने पर, मुझे बहुत दिक्कत होगी।"

बृजा के इन शब्दों पर, मलानी मन ही मन [illegible]

"पेग लोगे ?" बृजा ने निगाह उठाकर, मुस्कराकर [illegible]

'नहीं। अभी मैं खाना खाकर आराम करना चाहता [illegible] भी मुस्कराया।

"ठीक है। आराम करो। बहुत काम किया है तुमने [illegible] होगा। विक्रम को किसने शूट किया, मालूम हुआ ?"

"अभी नहीं मालूम हुआ। मैं खुद व्यस्त था। जहाज [illegible]

कोई भी नहीं था।

आवाज शांत थी।

"तो क्या बात है?"

□□

□□

यान के दो चौ तह सौहनलैल नरि ने भीतर से खोलों को [illegible] रहा। गारदे में और [illegible] में। [illegible] बड़ी [illegible] साहसी से काम कर रहा था। वह [illegible] अनुमान के अनुसार काम कर रहा था। इस से [illegible] यान इस या [illegible] से ज्यादा [illegible] में [illegible]।

□□

□□

"कौन है?"

को देखा।

स्वर में कहा।

"ये इतना आसान नहीं।"

"क्यों—डरते हो बूटा से?"

"नहीं, तो फिर क्यों आई हो?"

"अपना सुख लिये बिना, बात दिये बिना कहाँ जाती।"

"मैं अपनी इच्छा से नहीं हूँ। आप मुझे ब्याह दें। मैं आपसे ब्याह कर लूँगी, आपके बिना मर जाऊँगी, फिर भी एक बात नहीं करूँगी, और न तो कभी आपसे बात करूँगी। आपको कभी मुँह नहीं दिखाऊँगी।"

"ऐसा मत करो अनोखा।" मैंने कहा।

"सुधारी कोई बात नहीं हुई थी। मुझे नहीं लगता कि तुम उसे पसंद करते थे। लोग अपना प्यार पाने के लिए सब कुछ कर देते हैं और तुम तो मात्र एक औरत को आग बुझाने को बुला रहे थे।"

मनानी, अनिता गोस्वामी को देखता रहा।

अनिता गोस्वामी के चेहरे पर दुःख के भाव थे।

"इस केस को सुलझा लो तब मेरे पास आना। तब मैं तुम्हें अपना मन खोल दूंगी।" अनिता गोस्वामी के चेहरे पर गम्भीरता लिए पलटा और दरवाजे से बाहर निकल गया।

□□

□□

देवराज चौहान ने मोहनलाल द्वारा दिया पैकेट मेज पर रखा फिर पलटकर बोला।

"आज का सारा दिन तुम्हारे पास है। इस पैकेट को तीन से चार आना चाहिये। इसके बाद धीरे से, पैकेट को जोर से झाड़कर उसकी तार को सिर्फ इस मशीन से बाहर खींचना, ताकि उससे जोड़कर अपनी तार का कनेक्शन उसमें दिया जा सके।"

"समझ गया।"

"दरवाजा बंद करके काम करना।" देवराज चौहान ने उसे सतर्क किया।

"ये लापरवाह नहीं होगा। वैसे आज रात सबको है, बूरा से पाइरेट हिस्सा ही दूसरी जगह में जाने का।"

"हां।"

देवराज चौहान वहां से निकलकर जहाज की ऊपरी मंजिल पर अनिता गोस्वामी के केबिन में पहुंचा।

"आओ।" अनिता गोस्वामी उसे देखते ही मुस्कराई और पीछे हट गई।

देवराज चौहान ने भीतर प्रवेश किया। रुकी पर थे।

दरवाजा बंद करके वो पलटा तब तक।

"मनानी से बात हुई थी। जहाज पर पचास कमांडो और हथियार आ चुके हैं।"

देवराज चौहान ने सिर हिलाते हुए सिगरेट सुलगाई।

[illegible]

"अब आप क्या करेंगे?"

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

[illegible]

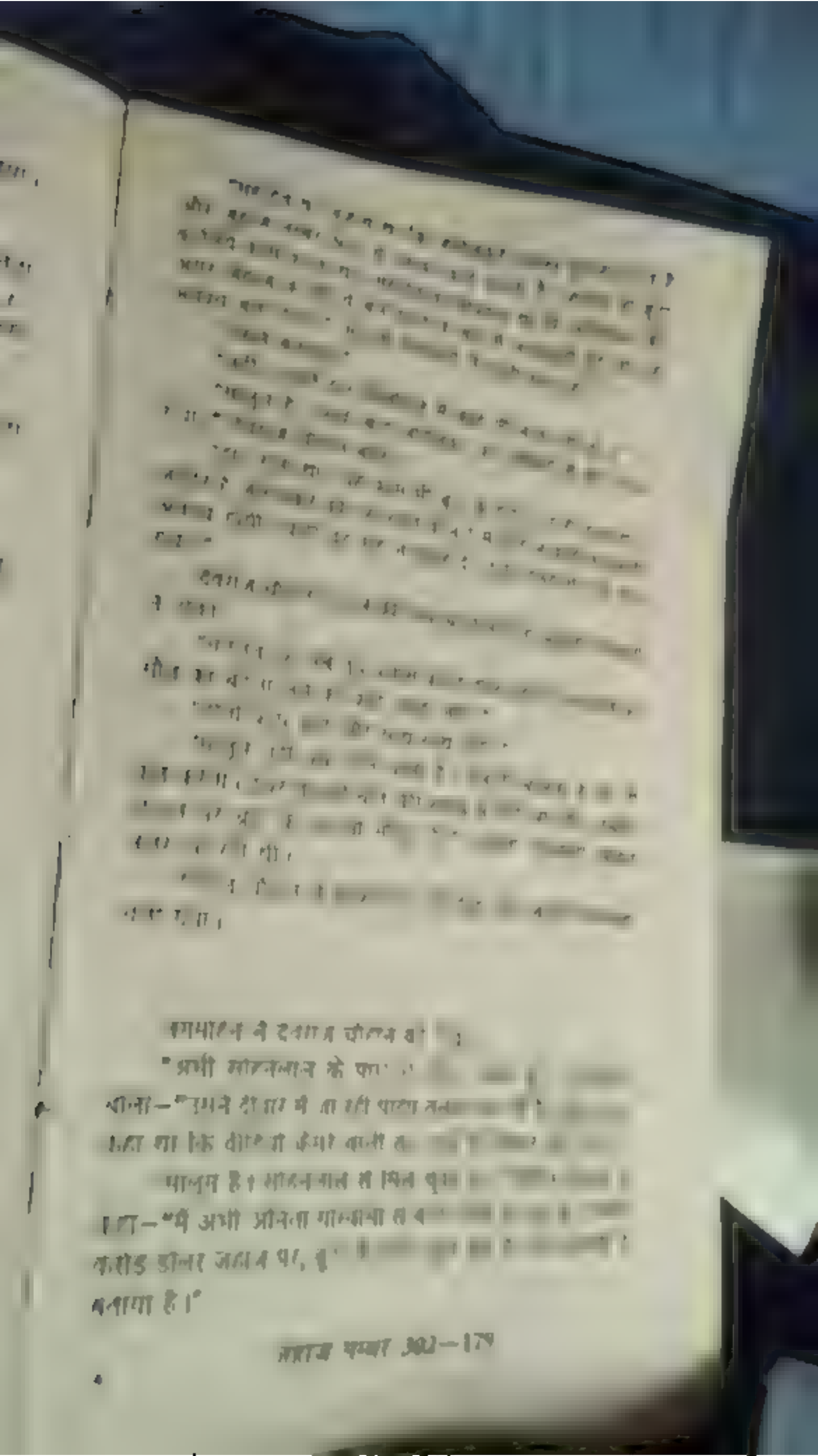

[illegible]

"[illegible]"

देवराज चौहान ने [illegible]

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

[illegible]

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

[illegible]

"[illegible]"

[illegible]

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

[illegible] "[illegible]" [illegible]

[illegible]

[illegible]

[

[illegible]

पासवी कोरस वाला सिंह-चला चला गया।

[illegible]

पुछा।

"बात तो मालूम होगी [illegible]

[illegible]

लगा।

□□

□□

अगस्तान को पैरिस [illegible]

सिंह को ढूंढने में।

[illegible]

समन्दर को देख रहा था। इसकी एक पंचायत [illegible]

दल का फ्रीमा साहबी [illegible]

[illegible]

के थर्ड मेड है?"

[illegible]

देखा।

"[illegible]

"[illegible]

"मैं जहाज का यात्री हूं।"

"[illegible]

"आज सुबह अचानक [illegible]

...ा।" जगमोहन ने कहा "...
...ह जहाज भी डूब गया था इस तरह।"

"नहीं डूबेगा यह जहाज।"

"क्यों?"

"टाईटेनिक डूबा था ...
डूबना मना नहीं है।"

"लेकिन जहाज पर ...

"नहीं, मैंने ...
...ा। और फिर जहाजवालों ने भी...

"अब हम ही थे ...

"मैं ...ा।" जगमोहन ...

"...ा।"

"...ा।" ...
फिर ...ने की इच्छा हो ...

"...ा। ...ा। ...
...ा। ...ा। ...
...ा। ...ा। ...
...ा।" जगमोहन ने कहा।

...ा।

"...
और बताऊं?"

...ा।

"...ा। ...ा। ...
...ा। ...ा। ...
...ा। ...ा। ...

सोहनलाल ने पूछा।

□□

□□

मनोज एक घण्टे बाद, बूटा के पास पहुंचा।

"मन्दर मला है" बूटा उसे देखते ही बोला—"साथ क्यों नहीं लाये उसे?"

[illegible]

"कौन था? मलानी आया था?"

[illegible]

बोला।

[illegible]

"जी!"

[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

का अलार्म बजा देना।"

"यस सर—!"

बूआ, मनानी को चकित होते देखा।

मनानी का दिमाग तभी से दौड़ रहा था। इतना तो वह समझ चुका था कि गड़बड़ हो चुकी है। होश में आते ही बूआ ने जब दवाई ली उसके बाद उसका गनमैन सीरियस बहादुर हो गया

मनानी को यह भारी लोच पर गड़बड़ महसूस होने लगी।

बूआ सच पर बैठा और सिगार सुलगाकर, मनहूस हुए मनानी को देखा। दाना गनमैन बहुत सख्त अन्दाज में खड़ा था कि, बूआ के लिए, जब जरूरत पड़े तो वे तुरन्त हरकत में आ सके

मनानी की निगाह बूआ पर थी।

"मनानी।" बूआ ने कश लिया "यह को हमला नहीं हुई, इस लड़की को मेरे पास देखकर"

"बहुत ज्यादा हुई। सुन्दर ने यही कहा।"

"सुन्दर की बात मत करो। मैं अनिता गोस्वामी की बात कर रहा हूं।" बूढ़ा के स्वर में कठोरता आ गई।

"क्या बात?"

बूढ़ा ने गनमैनों को देखा और व्यंग्यपूर्ण स्वर में कहा -

"मलानी साहब की तलाशी लो।"

मलानी कुछ समझ पाता, एक गनमैन उसके पास पहुंच चुका था। दूसरे के हाथ में रिवॉल्वर नजर आने लगी थी, निशाना मलानी की तरफ था।

मलानी की जेब से रिवॉल्वर लेकर गनमैन पीछे हो गया। मलानी का चेहरा कठोर हो गया।

"बूढ़ा साहब! आपकी इस हरकत का मतलब नहीं समझा।"

"यही, अनिता गोस्वामी ने सब कुछ बता दिया है।" बूढ़ा ने कहा लिया।

"क्या सब कुछ?"

"जो तुम मुझसे छिपा रहे थे। जिसके बारे में सुंदर ने मुझे बताया था। तुमने मुझे बताया नहीं कि अनिता गोस्वामी के साथ कितना खतरनाक खेल खेलना है।" बूढ़ा उसे खा जाने वाली निगाहों से घूर रहा था - "इस वक्त मैं तुम्हें यही बता रहा हूं ताकि तुम्हें याद रहे। तुम छोकरी को जहाज पर, मेरे प्राइवेट हिस्से में क्यों ले गये?"

मलानी समझ गया कि, अनिता गोस्वामी ने सब कुछ बता दिया है।

"तुम्हारी गलती की वजह से दो लोग मारे गये। तुम्हारी गलती को फौरन भुगाया भी जा सकता था अगर तुम उसे खत्म कर देते। लेकिन तुमने उसे खत्म नहीं किया। मुझे इस बारे में बताया। जब दो मर्डर पोर्ट ब्लेयर में हो गये तुमने उसे खत्म नहीं किया। उसे अपने पीछे छोड़ दिया। दूसरों को कहते रहे, उसे तलाश करो और खत्म करो।" बूढ़ा गुस्से में खड़ा हो गया।

मलानी को खेल खत्म होता नजर आने लगा।

"सुन्दर भाग गया कि तुम क्या कर रहे हो। हिम्मत करके उसने सब कुछ साफ साफ मुझे बता दिया और इस वक्त मेरे सामने बैठा है। अनिता गोस्वामी मारी गई और तुमने फौरन सुंदर को बता दिया। ऐसा है यही?"

हां, यही मलानी सामने था।

[illegible]

"[illegible] खास आदमी हैं। [illegible]
[illegible]" [illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]" [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[

के पास पहुंच गये।

"मैं चलता हूं।"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

समझो, वो कर देना।"

"यस—।"

दयाराज चौहान ने दरवाजे के हैंडल पर हाथ रखा और दरवाजा भीतर धकेल दबाकर, दरवाजा खोला और भीतर प्रवेश कर गया। उसके पीछे साथ ही जगमोहन ने भीतर प्रवेश किया। दयाराज चौहान ने दरवाजा बंद किया और भीतर से सिटकनी लगा दी।

सामने दस फीट लम्बी गलियारा था और फिर बायीं तरफ मोड़।

"क्या ख्याल है?" जगमोहन हाथ भींच कर बोला— "हम लोगों के कंट्रोल रूम में मौजूद स्क्रीनों पर हमें देख लिया होगा या हमारी चाल कामयाब रही कि उनकी स्क्रीनों पर हमारी नकाबपोश शक्लें दृश्य नजर आ रहे होंगे।"

दयाराज चौहान ने कुछ नहीं कहा और आगे बढ़ने लगा। वहां पर कालीन बिछी पड़ी थी। मखमली शाल का दामन थामे जगमोहन ने भी कदम आगे बढ़ा दिया।

□□

□□

कंट्रोल रूम में उस वक्त दो व्यक्ति बैठे थे। जिनका काम आंखें खुली और कान बंद रखना था। उनके सामने बोर्ड पर तीन टी०वी० सेट मौजूद थे। टी० वी० सेटों के जरिये वो जहाज पर स्थित बड़ा के प्राइवेट हिस्से पर पूरी तरह नजर रखते थे। अगर कहीं कोई शक या फिर गड़बड़ वाली बात होती तो वे इन्टरकॉम पर तुरन्त बगल में स्थित गार्ड रूम में खबर देते, हालात बताते और फिर आगे का

अनार्य बना देते।

वैरक्रम में नहीं था।

पानी निकालकर भीतर प्रवेश कर के गनमैनों ने उस नालियों सिस्टम में घर बना

इस वक्त उन ने ऊपर से कोई आ सकता था, 'स्निपर' मार गिराया गया। ब्लैक और पैराशूट को 'स्निपर' करने लगे थे। एक तरफ पीछे स्थानांतर चल पड़ा। योजना बना रहा था कि मनोवी को किस चाल से

एक स्थान पर वो छोटी सी जगह थी प्रवेश द्वार था।

[illegible] से कह उठा।

[illegible] रह गया। आखों में अविश्वास था।

[illegible] रिवॉल्वरें थामे खड़े थे।

[illegible]

[illegible] ही फोन उठा लिया।

[illegible] भी खड़े न होना। कोई भी गलत हरकत हुई तो गोली चला दी जायेगी। हमारे हाथों में साइलेंसर लगी रिवॉल्वरें हैं।

दयाशंकर चौहान के शब्दों पर दोनों बुत की तरह तन गये।

"अपने अपने दोनों हाथ सिर के ऊपर रख लो।

दोनों ने फौरन अपने हाथों को सिर पर रख लिया। वे अभी तक हैरान थे।

"दरवाजा बंद करो।" दयाशंकर चौहान ने रामसेवक से कहा। रामसेवक ने कुर्सी समेत ही दरवाजा धक्के से बंद कर दिया।

"हाँ तो तुम लोग।" उसने अपनी हथेली पर ठुड्डी टिकाते हुए कहा—"भीतर कैसे आये?"

"सी दरवाजे से। जहां से सब भीतर आते हैं।" दयाशंकर चौहान ने शब्दों को चबाकर कहा।

"ये नहीं हो सकता।" दूसरा फटे स्वर में कह उठा।

"क्या?"

"तुम यहां से आने जाने वालों को देख रहे हो। काफी देर से कोई भीतर नहीं आया, बाहर नहीं गया।"

दयाशंकर चौहान ने स्क्रीन पर निगाह मारी और फिर कुर्सी घुमा दी।

"जब लोग स्क्रीन पर जो कैमरा देख रहे हो, वो तब की है, जब जहाज मुम्बई बन्दरगाह पर लंगर डाले खड़ा था। खाली था इसी वजह से तुम लोगों को कोई भी नजर नहीं आ रहा।'

"असम्भव। ये कैसे हो सकता है।" उसके हाथ से निकला।

"इस कैमरों की तारों का जो जाल लोगों के साथ फैला रखा है,

[illegible]

[illegible]

"हमारा नाम मत लेना, वरना तुम्हारी खैर नहीं।" दूसरे ने धमकी भरे स्वर में कहा।

"मैं यहां तुम्हारी बातों का बदला लेने आया।" देवराज चौहान ने कठोर स्वर में कहा—"जानते हो?"

"नहीं।" एक ने कांपते स्वर में कहा।

"जो पैसे वाला था उसका सारा जवाब देना।" देवराज चौहान ने दांत भींचकर कहा।

दोनों खामोश रहे।

"कुछ ने मलानी और अन्य गवाहों का कहां इंतजाम कर रखा है?"

दोनों ने एक दूसरे को देखा।

"बताओ।" एक ने हिचकिचाते हुए कहा।

"अगर मरना है तो बताओ। मैं तुम्हें यह बात पूछ रहा हूं।" देवराज चौहान ने दांत-दांत भींचे स्वर में कहा "मैं तुमसे यह बात पूछ रहा हूं, इसकी सच्चाई मेरे पास है, यह बात याद रखना।"

"हमें मत मारना।" अन्य ने घबराए स्वर में कहा—"हमें और से मालूम कर लेंगे।"

"हम मत मारना, बताता है।"

"बताओ।" जगमोहन ने गुर्राते स्वर में कहा।

"रुको।" देवराज चौहान बोला—"तुम दोनों घूमो। हमारी तरफ पीठ करो।"

दोनों तुरन्त घूम गये।

देवराज चौहान ने एक की कनपटी पर रिवॉल्वर के दस्ते से वार किया तो वो बेहोश होकर नीचे गिर पड़ा। देवराज चौहान ने दूसरे की जब की तलाशी ली, रिवॉल्वर निकाली और दूर फेंक दी।

"घूमो।"

वो घूमा। अब उसकी आंखों में डर था।

"तुम हमारे साथ चलकर बताओगे कि मलानी और अन्य गवाहों कहां हैं।" देवराज चौहान एक-एक शब्द चबाता [illegible] स्वर में बोला—"रास्ते में तुमने कहीं भी गड़बड़ की तो हम तुम्हें फौरन शूट कर देंगे।"

वो सूखे होंठों पर जीभ फेरकर रह गया।

□□

□□

[illegible]

[illegible]

[illegible]

होगा।" कहने के साथ ही वृद्ध ने रिवाल्वर वाली बाँह को ऊपर उठा दिया।

□□

□□

गुप्त रोड का दरवाजा आधा सा खुला था। खिड़की में से इकबाल चौहान और अमरकांत ने भीतर का सारा दृश्य देखा और फिर वह में हटकर एक साथ आगे बढ़ गये। कोई भी आ सकता था। ज्यादा देर खुले में रहना ठीक नहीं था। भीतर से आवाजें अब स्पष्ट नहीं आ रही थीं।

"बूढ़ा तो मलानी को मारने की तैयारी में है।" अमरकांत बोला।

"हां।" इकबाल चौहान के होंठ खिंच गए। "हमारा ज्यादा देर यहां रहना ठीक नहीं। बूढ़ा मलानी के साथ धोखा भी कर सकता है। ऐसे में हम मलानी को दुश्मनों से नहीं बचा पायेंगे। अंदर चलें और यहां मौजूद गनमैनों को निशाना बनाना शुरू कर दें। वे हमें देखते ही भून देंगे।"

"लाइये हम दो, एक साथ दस गनमैनों का मुकाबला कैसे कर सकते हैं।"

"घबराइये मत दोस्त, मैं सब संभाल लूंगा।" इकबाल चौहान ने कहते हुए रिवाल्वर पर से सेफ्टीकैच हटाया और जेब्रा क्रॉसिंग की तरह बने गलियारे में से होकर आगे बढ़ गया। गलियारे का एक खासा लंबा हिस्सा पार करने के बाद वह गोदाम के पिछले हिस्से में पहुंच चुका था।

"हमें क्या करना होगा?"

"मेरे पीछे-पीछे आते रहिए।" इकबाल चौहान ने धीमे स्वर में कहा और दबे पांव आगे बढ़ गया।

दोनों दरवाजे की तरफ बढ़े।

पास पहुंचकर, खिड़की में से पहले ही तरह भीतर झांका। भीतर के हालात में कोई फर्क नहीं आया था। बूढ़ा सहूदा वाली रिवाल्वर का रुख मलानी पर कर रहा था।

दोनों ने एक दूसरे को देखा। इशारा किया फिर दरवाजा खोलते हुए तूफान की भांति भीतर प्रवेश हुए और फुर्ती के साथ गनमैनों को निशाना बनाने लगे।

कुछ पलों के लिए कोई भी कुछ नहीं समझ पाया।

तब तक पांच गनमैन खत्म हो चुके थे।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

स्वर में बोला—"मारू?"

अवाक् कर गया।

अहाते नम्बर 302 : 222

एक हल्का सा कोई बवण्डर नहीं था।

होगा।

होकर जाना है।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]" [illegible]
"[illegible]
"[illegible]
[illegible]
"[illegible]"
[illegible]
"[illegible]
[illegible]
"[illegible]
[illegible]
"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"साप से लेकर अति [illegible]
[illegible] मुक्त हो जाता है, और मृत्यु [illegible]
[illegible]
[illegible]
उस कुएं में नहाते हो।

"देखा है।" जगमोहन मुस्कराया—"कब [illegible]
में कहा—"तब हम मित्र भी हैं।"

[illegible]

बूटा के दांत भिच गये।

[illegible]
है।" बूटा गुर्राया।

"[illegible] पास ही [illegible]
पायदान बना रखा है तो मुझे फेंक [illegible]

एकाएक बूटा हंस पड़ा।

[illegible] इन्सान को पायदान [illegible]
जगमोहन" बूटा ने सिर से [illegible]
की इच्छा "मरने से पहले [illegible]

"बहुत बुरा" [illegible]

"मरना तो सबको ही बुरा लगता है [illegible]"

बूटा हंस पड़ा।

"मैं [illegible] नहीं हूं [illegible]
के चक्र में फंस सकता हूं [illegible]
मुझे याद नहीं। सिर्फ एक ही [illegible]
बांधकर मुझे मारा जा रहा है।"

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
तुम मरने जा रहे हो।"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

वैसा ही पोशाक [illegible]

वह खुद में डूबा हुआ बेचैनी से [illegible] भी पीछा नहीं छोड़ा था। अपनी दिशाहीनता पर वह [illegible] हो गया था।

सबकी निगाहें बूढ़े की तरफ थीं। [illegible]

"मैंने तो समझा था कि, हम पायरेट्स के [illegible] ने मुस्कुराकर मजाकिया लहजे में कहा।

पानी के दाने बिखर गए थे। चेहरे पर [illegible]

"बड़ा आसान खेल था हमारे लिए।" [illegible]

वैशाली, अंजना गांगुली [illegible]

दयाराज चौहान और [illegible] पर [illegible] में घनी मूंछों ने उनके [illegible] कर रखा था।

तभी उनके कानों में [illegible] की आवाज पड़ी फिर देखा कि [illegible] में [illegible] प्रवेश किया जो फायरिंग की आवाज सुनकर आये थे। बूढ़े को सकुशल देखते ही उनके चेहरों पर [illegible] के भाव आये। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि बूढ़ा मर गया है।

मलानी अपनी पीड़ा को भूलकर, गन थामे आगे बढ़ा। बूढ़े के पास पहुंचा। उसकी गन का रुख मलानी की तरफ ही था और चेहरे पर दृढ़ता के भाव थे।

"ये क्या हो रहा है।" मलानी सख्त स्वर में बोला "बूढ़ा मर चुका है। पर आदमी का मरना, मर कर ही दिया जा सकता है लेकिन मरा साथ मुफ्त लोग जिन्दा रहकर भी दे सकते हैं। बोलो क्या इरादे हैं।"

बूढ़े की मौत के साथ ही सारे हालात बदल गये थे।

"हम आपके साथ हैं मलानी साहब।"

मलानी के चेहरे पर राहत के भाव उभरे उसने गन नीचे कर ली।

"मेरे बदन से गोलियां निकालो।" मलानी बोला।

दो गनमैन मलानी के जिस्म में धंसी गोलियां निकालने लगे गये। वैशाली और अंजना गांगुली, दयाराज चौहान और [illegible] के जिस्मों में धंसी गोलियां निकालने लगीं।

दस मिनट में ही उनके जिस्मों में धंसी गोलियां निकल चुकी

[illegible]

[illegible]

[illegible]

करोड़ डॉलर थे।

मजा आ गया! मैं तो—।"

पर इससे मौका भी न मिल पाया।"

जगमोहन पलटा।

देखा।

बैसी बीवी पाकर—।"

बजाय।"

बजाय।"

"क्या मतलब?"

[illegible]

वैशाली ने मुंह बनाया।

"तुम मुझसे मजाक कर रहे हो।"

तभी मोहनलाल पास पहुंचा और हंसकर बोला।

"ये यूं ही तारीफ कर रहा है, मोहनलाल कहते हैं मुझे, पर लायक कोई सेवा हो तो बोलो। मुझे हुआ कुछ हो मगर बड़ी से बड़ी मैस को बाद खाने का दम रखता हूं। हम तो यही नजरों से कहा ही हो। यकीन मानो बहन शरीफ बंदा हूं मैं। लोग भले ही शान में तारीफों के पुल खड़े कर दें हैं, जैसे कि दो-तीन पुल अभी अभी लगनलाल ने खड़े किए हैं।"

"शट अप।" वैशाली खुश होकर कह उठी।

"हो जाता हूं" मोहनलाल ने तुरन्त दायें-बायें सिर हिलाया।

देवराज चौहान ने मलानी को देखा।

"बूता की मात के बाद जहाज पर अब तुम्हारा क्या पोजिशन है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"बूता जैसी ही है।" मलानी ने फक्के स्वर में कहा "जहाज पर यही पूरी चलेगी।"

"तो इस जहाज को फौरन रुकवा दो।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा - "यह जहाज समन्दर में डूबने जा रहा है। यात्रियों और जहाज के कर्मचारियों को सफेदी बोटों पर यहां से निकाल दो।"

"जहाज को तबाह करने की जरूरत है" मलानी गम्भीर हो गया।

"बहुत जरूरत है। जिस रास्ते से जहाज में पानी आया और भरता जाता है। उसके बारे में बूता के कई खास आदमी जानते हैं, कोई भी इसी रास्ते का फायदा उठाकर, फिर से बूता वाला काम शुरू कर सकता है।"

"साफ कहते हो। मैं अभी खड़े पैर, अपने साथ के कहता हूं कि वो यात्रियों को सुरक्षित पानी में उतार दें। डूबने कम में भी मजबूरी समझाकर आता हूं।" मलानी बोला।

"जल्दी।" वैशाली फोन कह उठी "ये साथ चलती है, मैं और ऊपर की मंजिल के बारे में सोचता हूं कि सबसे पहले वो पड़ाव में गिराये।"

"शादी नहीं करनी क्या" लगमोहन आगे से कह उठा।

"वो बाद की बात है। "[illegible] मलानी की तरफ बढ़ती [illegible]
मैं तैयार हूं। मेरा [illegible]
[illegible]
[illegible]
[

[redacted]

□□

□□

[redacted]

"[redacted]

[redacted]

"[redacted]

[redacted]

[redacted]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

महाराष्ट्र सरकार 302 - 241

है। जो नया पहने नजर आ रहा था वो इनकी नहीं था [illegible]
तले दबा था। पर्दा [illegible] इनमें से किसी ने नहीं पूछा
सकती। लेकिन [illegible] मुखौटा और गहनों है जिस [illegible]
उसका [illegible] गहनों साथ से हटा है। जो [illegible]
[illegible] भी पर्दे [illegible] हट जाता है।"

"अगर [illegible] तो हड़ताल के [illegible] की
[illegible] पड़ जाएगा।" [illegible]

"[illegible] नहीं, [illegible] इस [illegible] है।
[illegible] "[illegible] है [illegible]
[illegible] है।" [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]

गहरी सांस ली।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

है। जो कि हमारा ले जा रहे हैं। "
आसानी से निकल सकते हैं।"

"इस पर वो लोहा के ये पानी रोने पर
देवराज चौहान ने उसे देखा।

"हां। इस पर बहुत जोर है। वजन कम होने से
सकता है।" मलानी ने गंभीर स्वर में कहा।

"ठीक है। "पानी वाले पानी देने का नाम ले रहे हैं। इन्हें
भारवाहक पर रखकर ले चलेंगे।"

□□

□□

इस पानी देने का नाम तक न आने में पन्द्रह मिनट लग गये।
सामने से ही भारी था। उसके बाद मलानी ने भारवाहक पर रखकर
पानी में उतारी गई। पानी वाले को दो-सौ रुपये दिये गये। वे सब भी
वहां पर पहुंच। शोर मची थी। इससे अभी भी बीस-पच्चीस लोग
आ सकते थे।

देवराज चौहान ने मलानी से कहा।

"रिमोट कंट्रोल दो।"

"क्यों?" मलानी के होठों से निकला।

"जहाज के दो गज दूर तक पहुंचते हैं। जहाज में पानी भर
जायेगा। ताकि वो डूब सके।"

मलानी ने रिमोट कंट्रोल निकालकर उस दिया तो देवराज
चौहान जहाज पर चला गया। दस मिनट बाद लौटा और बोट पर
आ गया। सोहनलाल स्पीडबोट पर था।

देवराज चौहान के इशारे पर सोहनलाल ने स्पीडबोट को दूर ले
जाना शुरू किया और आगे बढ़ा दी।

"पानी तल हटा दिए?" जगमोहन ने पूछा।

"हां।" कहते हुए देवराज चौहान ने रिमोट कंट्रोल समन्दर में
फेंक दिया "एक सवा घण्टे में जहाज डूब जायेगा।"

स्पीडबोट तेजी से समन्दर में भागने लगी।

□□

□□

दोपहर का एक बज रहा था। सूर्य सिर चढ़ आया था। पानी
में पड़ने वाली उसकी चमक में असर आने लगा था।

पांच घण्टे के बाद पानी के अन्दर 3-6 जर्मन डिब्बों को

[illegible]

"[illegible] देवराज चौहान [illegible]

[illegible]

[illegible]

[

देवराज चौहान की आवाज सुनकर पास खड़ा [illegible]

"तुम यहां क्या कर रहे हो?" देवराज चौहान ने पूछा।

मोहनलाल का, उसकी तरफ बढ़ता हाथ रुक गया।

उस आदमी ने अपना भारी, हथौड़ा की तरफ कर दिया। उसके चेहरे पर अजीब सी भावना थी। उसके आवाज के साथ ही आसपास के पेड़ों से और भी आदमी आकर उन्हें घेरने लगे। किसी के हाथ में भाला था किसी के कंधे पर तीर कमान था। कुछ के कमर पर कपड़ा लपेटा था तो कुछ के पास बड़े पत्तों को जोड़ा हुआ था। इनमें से किसी ने कमर के ऊपर कुछ भी नहीं पहन रखा था।

देवराज चौहान और मोहनलाल सतर्क हो चुके थे।

"ये अजीब लोग हैं। इनके सामने कोई हरकत [illegible]" देवराज चौहान सतर्क स्वर में बोला।

वो कुल चौदह थे।

उन्होंने उन दोनों को घेर लिया और अपनी भाषा में कुछ कहा। जो उनकी समझ में नहीं आया। ये देखकर एक ने इशारे से उन्हें आगे बढ़ने को कहा।

देवराज चौहान और मोहनलाल उनके घेरे में आगे बढ़ने लगे।

इसके साथ ही वो अजीब लोग खुशी से उछल-कूद रहे थे। नाच रहे थे। करीब दस मिनट चलने के बाद वो अजीब उन्हें लेकर ऐसी जगह पर पहुंचे जहां खुली जगह में तीस चालीस झोपड़ियां बनी हुई थीं। वहां और भी अजीब नजर आ रहे थे, बच्चे खेल रहे थे। उन्हें देखते ही सब उत्सुकता से भरे उनके पास आकर उन्हें घेरकर खड़े होने लगे।

"अब क्या होगा?" मोहनलाल अजीब से स्वर में बोला।

"देखते रहो। अगर इन्होंने हमारी जान लेनी होती तो वहीं पर ले लेते।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

मोहनलाल कुछ नहीं बोला।

अजीब लोगों का शोर बढ़ता ही जा रहा था।

तभी उनको भीड़ में से एक जाना-पहचाना चेहरा नजर आया। उसे भी वहां बंदी बनाकर लाया गया था।

"सरदार को भी इन लोगों ने पकड़ लिया है," देवराज चौहान बोला।

एक बार फिर उन लोगों को घेरे में लेकर [illegible] चलना शुरू हो गया। लगभग दस मिनट के बाद वो अजीब उन्हें [illegible] एक अजीब

"हिन्दुस्तान में, मेरी गाँव की जमीन पर कुछ लोग कब्जा कर रहे थे। वे ताकतवर थे। उनका रसूख था। मैं उनका मुकाबला नहीं कर पा रहा था। और फिर एक दिन गुस्से में आकर मैंने कुल्हाड़ी उठाई और गर्दन से भून दिया। जमीन पर कब्जा करने वाली को तो मार दिया मैंने। लेकिन अब मेरे लिए फांसी के अलावा और कोई सजा नहीं बची थी। और मैं फांसी वाली मौत नहीं चाहता था। दो महीने जंगल में छिपकर भागता रहा। और फिर किसी तरह बन्दरगाह के जहाज पर खड़े जहाज पर छिप गया। वो जहाज यूरोप की यात्रा पर रवाना हो रहा था। वो अपनी यात्रा पर चल पड़ा। मैं जहाज में ही छिपा रहा। खाने को कुछ नहीं था। दूसरे दिन तंग होकर खाने की तलाश में मैं छिपी जगह से निकला तो पकड़ा गया। कैद कर लिया गया, ताकि अगले बन्दरगाह पर जहाज रुके तो मुझे वहां की पुलिस के हवाले कर दिया जाये। लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। जहाज में खराबी आ गई। तो उस जहाज को इस करीबी टापू पर रुकना पड़ा। यहां रुकते ही इन लोगों ने जहाज पर अपना कब्जा कर लिया और खाने-पीने का सामान और कपड़े लूटने लगे। मेरी तरफ से उन लोगों का ध्यान हट गया। मैं किसी तरह जहाज से निकलकर टापू पर आ छिपा। दो दिन के बाद जहाज आगे बढ़ गया। मैं टापू पर ही रहा। धीरे-धीरे इन लोगों से घुल-मिल गया। फांसी की मौत से बेहतर ये जिन्दगी। वक्त के साथ-साथ इनकी भाषा भी मुझे समझ आती चली गई। और अब यहां से जाने का मेरा कोई इरादा नहीं है।"

देवराज चौहान ने समझने वाले ढंग में सिर हिलाया।

"तुम लोग आने खाने और पहनने का सामान इन्हें दो और यहां से चले जाओ।" रणजीत बोला।

"हमारे पास खाने का सामान नहीं है। खाने की तलाश में ही हम यहां आये थे।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा - "कपड़ों के नाम पर हमारे पास सूटकेस भी नहीं है। हमारा जहाज डूब रहा था। उसमें से पानी पर कूदकर हमने अपनी जान बचाई।"

रणजीत ने अंग्रेजी भाषा में सरदार को यह बात बताई तो सरदार गुस्से से चिल्लाकर कुछ कहने लगा। रणजीत ने देवराज चौहान को देखा।

"सरदार कहता है कि तुम झूठ बोलते हो।"

"मैं सच कह रहा हूं। हमारे पास कोई सामान नहीं है।" देवराज चौहान बोला।

रामसिंह ने पुनः जंगली सरदार से बात की। सरदार ने गुस्से से मना कर दिया।

"वे कहता है हम बोट की तलाशी लेंगे। तुम लोग झूठ बोल रहे हो।" रामसिंह बोला।

"हमने कोई एतराज नहीं।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

रामसिंह ने यह बात जंगली सरदार से कह दी।

सरदार ने गुस्से से ऊंचे स्वर में चिल्लाकर, जंगली लोगों से कुछ कहा तो वे सारे खुशी से चिल्लाते-नाचते भाग गये। देखते ही देखते वे सारी जगह खाली हो गई। सिर्फ जंगली सरदार के साथ उसके अंगरक्षक टाईप के आठ जंगली आदमी वहीं खड़े रहे।

"वो सब बोटरबोट की तलाशी लेने गये हैं।" रामसिंह बोला—"अभी लौट आयेंगे।"

जगमोहन ने हड़बड़ाकर कहा।

"बोट में तो पचास करोड़ होकर गई है।"

"ये लोग रुपये-पैसे की कीमत नहीं जानते। इन्हें खाने का सामान और पहनने को कपड़े चाहियें। और किसी चीज से इन लोगों को मतलब नहीं।" रामसिंह ने कहा—"ध्यान रखना, कुछ न मिलने पर सरदार गुस्से में आ जायेगा। और यह गुस्से में कुछ भी कर सकता है। मेरा ख्याल था, हमारे यहां से निकल जाने की करता। ज्यादा देर यहां रुके तो यह तुम लोगों की जान भी ले सकता है। तुम लोगों के निकलने तक, मैं इसे समझा-समझाकर रोके रहूंगा।"

□□

□□

वो सारे जंगली आधे घन्टे के बाद लौटे। बोटरबोट पर कुछ न होने की खबर उन्होंने अपने सरदार को दी तो सरदार अट्टहास में गुस्से से भर उठा।

रामसिंह ने सरदार को समझाने की कोशिश की तो कभी सरदार हल्का हो जाता तो कभी फिर गर्म हो उठता। रामसिंह के जोर देने पर, सरदार ने उन लोगों को जाने की इजाजत दी।

"तुम लोग जल्दी से, यहां से निकल जाओ।" रामसिंह बोला—"अभी यह तुम लोगों को यहां से चले जाने को कह रहा है। कुछ पता नहीं मिनट बाद यह तुम लोगों की मौत का फरमान जारी कर दे।"

देवराज चौहान ने घुस्काराकर रामसिंह को देखा।

उसके बाद वे सब तेजी से उस तरफ बढ़ गये जहां बोटरबोट

खड़ी थी। किसी ने उन्हें रोकने या साथ आने की कोशिश नहीं की।

पीछे से उनके कानों में सरदार और रामसिंह की ऊंची-ऊंची आवाजें आती रहीं।

"जल्दी से निकल चलो।" सोहनलाल ने कहा—"उन दोनों में बहस हो रही है। कोई बड़ी बात नहीं, सरदार गुस्से में अपने आदमी, हमारी जान लेने के लिये दौड़ा दे।"

सबकी रफ्तार पहले से ही तेज थी।

समन्दर के किनारे पर पहुंचते ही सब हड़बड़ा उठे। उनकी आंखें जैसे फटकर फैलती चली गईं। दो पल के लिये लगा, जैसे उनके जिस्म वहीं के वहीं खत्म हो गये थे। धड़कन रुक गई हो।

सबसे पहले देवराज चौहान के होंठों पर मुस्कान रेंगी। फिर वो खुलकर मुस्कराया और सिग्रेट सुलगाकर सब पर निगाह मारी। वो सब जैसे धीरे-धीरे बेहोशी के दौर से बाहर निकलने लगे थे। लेकिन शायद सांसों का चलना अभी भी शुरू नहीं हुआ था।

वहां नजारा ही ऐसा था।

हर तरफ डॉलर ही डॉलर नजर आ रहे थे। टापू की जमीन पर डॉलर, समन्दर के पानी के ऊपर दूर-दूर तक डॉलर बिछे हुए थे। पानी का बहाव डॉलरों को दूर ले जाये जा रहा था। समन्दर का पानी नजर नहीं आ रहा था। हर तरफ डॉलर ही डॉलर बिखरे नजर आ रहे थे। दो पल के लिए तो यही लगा कि जैसे वहां डॉलरों की बरसात हुई हो। और समन्दर डॉलरों का समन्दर बन गया हो। वह नजारा मीठा भी लग रहा था और कड़वा भी।

खाने का सामान और कपड़ों की तलाश में जंगली लोगों ने डॉलरों वाले [illegible] ने खोल डाले थे और डॉलरों को बाहर फैंक-फैंककर, अपने काम [illegible] की तलाश की होगी, यह उसी हरकत का परिणाम था। [illegible] डॉलर पानी में बह गये थे। कुछ टापू पर बिखरे हुए [illegible] के पास कहने को कोई शब्द नहीं था।

हक्के-बक्के थे सब।

लेकिन देवराज चौहान बराबर मुस्करा रहा था।

डॉलरों वाले किस्से से वे लोग पूरी तरह संभल भी नहीं पाये थे कि उनके कानों में पीछे से उठता शोर पड़ा। जंगली लोगों का

शोर। वो अजीब-अजीब, ऊंची आवाजों में चिल्ला रहे थे। शोर हर पल करीब आता जा रहा था।

"निकलो यहां से।" देवराज चौहान चिल्लाया—"वो जंगली, हमें मारने आ रहे हैं।"

सबको होश आया।

सोहनलाल जल्दी से आगे बढ़ा और स्टेयरिंग सीट पर बैठकर मोटरबोट स्टार्ट करने लगा। मलानी और अनिता गोस्वामी भी जल्दी से बोट पर पहुंच गये।

जगमोहन बुत-सा बना पचास करोड़ डॉलर के समन्दर को देख रहा था।

"जगमोहन!" देवराज चौहान ने उसे धकेला—"बोट में चलो।"

"वो डॉलर—।" जगमोहन ने अजीब-से स्वर में कहना चाहा।

"वो जंगली हमारी जान लेने आ रहे हैं। जल्दी से बोट में बैठो।" देवराज चौहान ने उसे पुनः धकेला।

"लेकिन ये डॉलर—।"

जंगली लोगों का शोर सिर पर आ पहुंचा था। अब वो नजर भी आने लगे थे। उनके हाथों में तरह-तरह के हथियार थे और चेहरों पर गुस्सा नजर आ रहा था। दूर से ही वो अपने हाथों में थमे हथियारों को इस तरह हिला रहे थे जैसे उनका बस चले तो दूर से ही उन्हें मार दें।

देवराज चौहान ने होंठ भींचकर जगमोहन को उठाया और पांच कदम आगे बढ़कर बोट में डाला। मलानी ने उसे संभाला और देवराज चौहान भी बोट में आ चुका था। अगले ही पल सोहनलाल ने जल्दी से मोटरबोट आगे बढ़ा दी।

देखते ही देखते मोटरबोट किनारे से दूर, डॉलरों के समन्दर को पार करती चली गई।

वो ढेरसारे जंगली किनारे पर पहुंच गये थे। मोटरबोट दूर होती पाकर वो गुस्से से चिल्लाने लगे। कुछ ने गुस्से का इजहार अपने हथियारों को उनकी तरफ पानी में फेंक कर किया। लेकिन बोट उनकी जद से दूर पहुंच चुकी थी और दूर होती जा रही थी।

जगमोहन जल्दी से संभला और टापू की तरफ नजर मारी। डॉलरों का समन्दर अभी भी स्पष्ट नजर आ रहा था। वहां पानी की जगह दूर-दूर तक, उस पर जमी डॉलरों की तह नजर आ रही थी। उसके चेहरे पर ऐसे भाव थे जैसे, उसकी प्यारी दुनियां उजड़ गई हो।

"बच गये।" सोहनलाल ने टापू की तरफ देखा, जहां देरसारे जंगलों नजर आ रहे थे। कि उसकी निगाह जगमोहन के लुटे-पिटे चेहरे पर पड़ी—"तेरे को क्या हो गया जगमोहन?"

"डीलर। पचास करोड़ डीलर—।" जगमोहन ने अफसोसभरे स्वर में कहा।

"जान बच गई। ये ही बहुत है।" सोहनलाल ने गहरी सांस ली—"डीलर फिर कभी मिल जायेंगे।"

"वो पचास करोड़ डीलर थे—।"

"कोई बात नहीं। अपनी जान उन डीलरों से ज्यादा कीमती है।" सोहनलाल मुस्कराकर बोला।

जगमोहन की निगाह, उधर ही, टापू के किनारे पर ही रही। देवराज चौहान मोटरबोट की सीट पर बैठा शांत भाव से सिगरेट के कश ले रहा था।

"तुझे दुःख नहीं हो रहा।" जगमोहन, एकाएक देवराज चौहान से कह उठा।

"किस बात का?" जगमोहन को देखकर, देवराज चौहान मुस्कराया।

"पचास करोड़ डीलरों के बरबाद होने का—।"

"वो हमारे नहीं थे। इसलिये दुःख नहीं हो रहा।"

"तो किसके थे?"

"दौलत किसी की भी नहीं होती।" मुस्कराकर देवराज चौहान बोला और आंखें बंद कर लीं।

जगमोहन, देवराज चौहान को देखता रहा। समझ नहीं पा रहा था कि क्या जवाब दे। देवराज चौहान ने ठीक ही तो कहा था कि दौलत किसी की सगी नहीं होती। आज वहां तो कल यहां। जिना लोगों की दौलत, के दौड़ने की रफ्तार का कोई भरोसा नहीं कर सकता। वो जाने कब-कहां किधर, किसके पास पहुंच जाये, और कब हाथ से चला दे। जैसे कि अभी पचास करोड़ के डीलर के साथ हुआ था। कुछ देर पहले उसके पास थे और अब वो उसके पास नहीं थे।

□□□□□
□□□
□
समाप्त